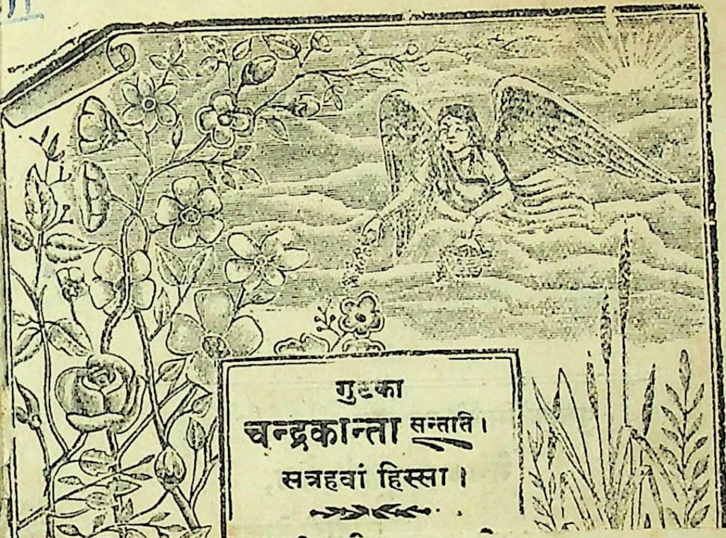
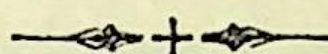

गुटका
चन्द्रकान्ता सन्तति।
सत्रहवां हिस्सा।

पुस्तक मिलने का पता—
मैनेजर लहरी प्रेस,
लाहौरी टोला,
बनारस सिटी ।

॥ श्रीः ॥

चन्द्रकान्ता सन्तति ।

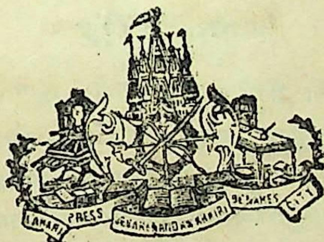
सत्रहवां हिस्सा ।



बाबू देवकीनन्दन खत्री रचित

और

बाबू दुर्गाप्रसाद खत्री द्वारा प्रकाशित ।





पन्नालाल राय द्वारा

लहरी प्रेस, काशी में मुद्रित ।

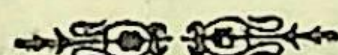
चौथी बार ३०००] १९२१ [मूल्य ।-) आ०

॥ श्री: ॥



चन्द्रकान्ता सन्तति।

सत्रहवां हिस्सा।



पहिला बयान।

हमारे पाठक "लीला" को भूले न होंगे, तिलिस्मी दारोगा वाले बँगले की बर्बादी के पहिले तक इसका नाम आया है जिसके बाद फिर इसका जिक्र नहीं आया * ॥

लीला को जमानियां की खबरदारी पर मुकर्रर करके मायारानी नागर के मकान में काशी चली गई थी और वहां से दारोगा का संयोग हो जाने पर दारोगा के साथ इन्द्रदेव के यहां चली गई, जब इन्द्रदेव के यहां से भी वह भाग गई और दारोगा तथा शेरअलीखां की मदद से रोहतासगढ़ के अन्दर घुसने का प्रबन्ध किया गया, जैसा कि सन्तति बारहवें हिस्से के तेरहवें बयान में लिखा गया है, तब लीला भी मायारानी के साथ थी मगर रोहतासगढ़ में जाने के पहिले मायारानी ने उसे अपनी हिफाजत का जरिया बना कर पहाड़ के नीचे ही छोड़ दिया था। मायारानी ने अपना तिलिस्मी तमञ्चा,

* देखो सन्तति नौवां हिस्सा आठवां बयान ॥

जिसमें बेहोशी के बारूद की गोली चलाई जाती थी, लीला को दे कर कह दिया था कि " मैं शेरअलीखां की मदद से और उन्हीं के भरोसे पर रोहतासगढ़ के अन्दर जाती हूं मगर ऐयारों के हाथ में मेरा गिरफ़ार हो जाना कोई आश्चर्य्य नहीं क्योंकि बीरेन्द्रसिंह के ऐयार बड़े ही चालाक हैं, यद्यपि उनसे बचे रहने की पूरी २ तर्कीब की गई है मगर फिर भी मैं बेफिक्र नहीं रह सकती, अस्तु यह तिलिस्मी तमञ्चा तू अपने पास रख और इस पहाड़ के नीचे ही रह कर हमलोगों के बारे में टोह लेती रह अगर हम लोग अपना काम कर के राजी खुशी के साथ लौट आये तब तो कोई बात ही नहीं, ईश्वर न करे कहीं मैं गिरफ़ार हो गई तो तू छुड़ाने का बन्दोबस्त कीजियो और इस तमञ्चे से काम निकालियो इसमें चलाने वाली गोलियां और ताम्र-पत्र भी मैं तुझे दिये जाती हूं जिसमें गोली बनाने की तर्कीब लिखी हुई है ॥"

जब दारोगा और शेरअलीखां के सहित मायारानी गिरफ़ार हुई और यह खबर शेरअलीखां के लश्कर में पहुंची जो पहाड़ के नीचे था तो लीला ने भी सब हाल सुना और वह उसी समय वहां से टल कर कहीं छिप रही मगर जब तक राजा बीरेन्द्रसिंह वहां से चुनार-गढ़ की तरफ रवाना न हुए वह भी उस इलाके के बाहर न गई और इसी से शिवदत्त और कल्यानसिंह (जो बहुत से आदमियों को ले कर रोहतासगढ़ के तहखाने में घुसे थे) वाला मामला भी उसे बखूबी मालूम हो गया था ॥

माधवी, मनोरमा और शिवदत्त ने जब ऐयारों की मदद से कल्यान-सिंह को छुड़ाया था तो भीमसेन भी उसी के साथ ही छुड़ाया गया मगर भीमसेन कुछ बीमार था इस लिये शिवदत्त के साथ मिलजुल कर रोहतासगढ़ के तहखाने में न जा सका था, शिवदत्त ने अपने

ऐयारों की हिफाजत में उसे शिवदत्तगढ भेज दिया था॥

सब बखेड़ों से छुट्टी पा कर जब राजा बीरेन्द्रसिंह कैदियों को लिये हुए चुनारगढ़ की तरफ रवाना हुए तो मायारानी को कैद से छुड़ाने की फिक्र में लीला भी उन्हीं के लश्कर के साथ भेष बदले हुए रवाना हुई। सफर में नकली किशोरी, कामिनी और कमला के मारे जाने वाला मामला उसके सामने ही हुआ और तब तक उसे अपनी कार्रवाई करने का मौका न मिला, मगर नकली किशोरी, कामिनी और कमला की दाह क्रिया कर के राजा साहब आगे बढ़े और दुश्मनों की तरफ से कुछ बेफिक्र हुए तब लीला को भी अपनी कार्रवाई का मौका मिला और वह उस खेमे के चारो तरफ ज्यादे फेरी लगाने लगी जिसमें मायारानी कैद थी और चालीस आदमी नङ्गी तलवार लिये बारी बारी से उसके चारों तरफ पहरा दिया करते थे। एक दिन इत्तफ़ाक से आंधी पानी का जोर था और इसी से उस कम्बख़्त को अपने काम का अच्छा मौका मिला॥

बीरेन्द्रसिंह का लश्कर एक सुहावने जङ्गल में पड़ा हुआ था। समय बहुत अच्छा था सन्ध्या होने के पहिले ही से बादलों का शामियाना खड़ा हो गया था, बिजली चमकने लग गई थी और हवा के झपेटे पेड़ पत्तों के साथ हाथापाई कर रहे थे। पहर रात जाते २ पानी अच्छी तरह बरसने लग गया और उसके बाद तो आंधी पानी ने एक भयानक तूफान का रूप धारण कर लिया। उस समय लश्कर वालों को बहुत ही तकलीफ हुई, हजारों सिपाही, गरीब, बनिये, घसियारे और शागिर्द पेशे वाले जो मैदान में सोया करते थे इस तूफान से दुःखी होकर जान बचाने की फिक्र करने लगे। यद्यपि राजा बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह की रहमदिली और रिआयापरवरी ने बहुतों को आराम दिया और बहुत से आदमी खेमों और शामियानों के

अन्दर घुस गये यहां तक कि राजा बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह के खेमों में भी सैकड़ों को पनाह मिल गई थी मगर फिर भी हजारों आदमी ऐसे रह गये थे जिनकी भूंडी किस्मत में दुःख भोगना बदा था। यह सब कुछ था मगर लीला को ऐसे समय में भी चैन न था और वह इस दुःख को दुःख नहीं समझती थी क्योंकि उसे अपना काम साधने के लिये बहुत दिनों के बाद आज यही एक मौका अच्छा मालूम हुआ॥

जिस खेमे में मायारानी और दारोगा वगैरह कैद थे उससे चालीस या पचास हाथ की दूरी पर एक सलई का बहुत बड़ा और पुराना दरख्त था। इस आंधी पानी और तूफान का खौफ न करके लीला उसी पेड़ पर चढ़ गई और कैदियों के खम्भे की तरफ मुंह करके तिलिस्मी तमंचे का निशाना साधने लगी, जब जब बिजली चमकती तब तब वह अपने निशाने को ठीक करने का उद्योग करती यद्यपि सम्भव था कि बिजली की चमक में उसे भी कोई पेड़ पर चढ़ा हुआ देख ले मगर जिन सिपाहियों के पहरे में वह खेमा था या उस (कैदियों वाले) खेमे के आसपास जो लोग रहते थे वे सब इस तूफान स घबड़ा कर उसी खेमे के अन्दर घुस गये थे जिसमें मायारानी और दारोगा वगैरह कैद थे, खेमे के बाहर या उस पेड़ के आस पास कोई भी न था जिस पर लीला चढ़ी हुई थी॥

लीला जब अपने निशाने को ठीक कर चुकी तब उसने एक गोली (बेहोशी वाली) चलाई! हम पहिले के किसी बयान में लिख चुके हैं कि "इस तिलिस्मी तमंचे के चलाने में किसी तरह की आवाज नहीं होती थी मगर जब गोली जमीन पर गिरती थी तब कुछ हलकी सी आवाज पटाखे की तरह पर होती थी॥"

लीला की चलाई हुई गोली खेमे को छेद कर अन्दर चली गई

और एक सिपाही के बदन पर गिर कर फूटी। उस सिपाही का कुछ नुकसान नहीं हुआ जिस पर गोली गिरी थी, न तो उसका कोई अङ्ग भङ्ग हुआ और न कपड़ा जला, केवल हलकी सी आवाज हुई और बेहोशी का बहुत ज्यादे धूआं चारो तरफ फैलने लगा। मायारानी उस वक्त बैठी हुई अपनी किस्मत पर रो रही थी और उसके पासही में वह गोली भी गिरी थी। पटाखे की आवाज से वह चौंक कर उस तरफ देखने लगी और बहुत जल्द समझ गई कि यह हमारे उसी तिलिस्मी तमञ्चे की चलाई हुई गोली है जो लीला के सुपुर्द कर आई थी॥

मायारानी यद्यपि जान से हाथ धो बैठी थी और उसने निश्चय कर लिया था कि अब इस कैद से मुझे किसी तरह छुटकारा नहीं मिल सकता मगर इस समय तिलिस्मी तमञ्चे की गोली ने खेमे के अन्दर पहुंच कर उसे विश्वास दिला दिया कि "अब भी तेरा दोस्त मदद करने लायक मौजूद है जो यहां आ पहुंचा और तुझे इस कैद से छुड़ाया ही चाहता है॥"

वह मायारानी, जिसकी आंखों के आगे मौत की भयानक सूरत घूम रही थी और जो हर तरह से नाउम्मीद हो चुकी थी चौंक कर सम्हल बैठी, बेहोशी का असर करने वाला धूआं बच रहने की मुबारकबाद देता हुआ उसकी आंखों के सामने फैलने लगा और तरह २ की उम्मीदों ने उसका कलेजा ऊंचा कर दिया, यद्यपि वह जानती थी कि यह धूआं मुझे भी बेहोश कर देगा मगर फिर भी वह खुशी की निगाहों से चारों तरफ देखने लगी और इतने ही में दूसरी गोली भी उसी ढङ्ग की वहां आ कर गिरी॥

मायारानी और दारोगा को छोड़ कर जितने आदमी उस खेमे में थे सभों को उन दोनों गोलियों ने ताज्जुब में डाल दिया। अगर

गोली चलाती समय तमञ्चे में से किसी तरह की आवाज निकल कर उनके कानों तक पहुंचती तो शायद कुछ पता लगाने की नीयत से दो चार आदमी खेमे के बाहर निकलते मगर उस समय सिवाय एक दूसरे के मुंह देखने के किसी को किसी तरह का गुमान न हुआ और धूएं ने तेजी के साथ फैल कर अपना असर जमाना शुरू कर दिया। बात की बात में जितने आदमी उस खेमे के अन्दर थे सभों का सर घूमने लगा और एक दूसरे के ऊपर गिरते हुए सब के सब बेहोश होगये, मायारानी और दारोगा को भी दीनदुनिया की सुध न रही॥

पेड़ पर चढ़ी हुई लीला ने थोड़ी देर तक इन्तजार किया। जब खेमे के अन्दर से किसी को निकलते न देखा और उसे बिश्वास हो गया कि खेमे के अन्दर वाले अब बेहोश हो गये होंगे तब वह पेड़ पर से उतरी और खेमे के पास आई। आंधी पानी का जोर अभी तक वैसा ही था मगर लीला ने उसे अच्छी तरह सह लिया और कनात के नीचे से झांक कर खेमे के अन्दर देखा और सभों को बेहोश पाया।॥

पाठकों को यह मालूम है कि "लीला ऐयारी जानती थी" कनात काट कर वह खेमे के अन्दर चली गई, आदमी बहुत ज्यादे भरे हुए थे इस लिये उसे मायारानी के पास तक पहुंचने में बड़ी कठिनाई हुई, आखिर उसके पास पहुंची और हाथ पैर खोलने बाद लखलखा सुंघा कर होश में लाई। मायारानी ने होश में आकर लीला को देखा और धीरे से कहा, "शाबाश! खूब पहुंची! बस दारोगा को छुड़ाने की कोई जरूरत नहीं।" इतना कह कर मायारानी उठ खड़ी हुई और लीला के हाथ का सहारा लेती हुई खेमे के बाहर निकल गई॥

लीला ने चाहा कि लश्कर में से दो घोड़े भी सवारी के लिये

चुरा लावे मगर मायारानी ने इसे स्वीकार न किया और उसी तूफान में दोनों कम्बख़्तों ने एक तरफ का रास्ता लिया ॥



दूसरा बयान।

पाठकों को मालूम है कि शिवदत्त और कल्यानसिंह ने जब रोहतासगढ़ पर चढ़ाई की थी तब उनके साथ मनोरमा और माधवी भी मौजूद थीं, भूतनाथ और सर्यूसिंह ने शिवदत्त और कल्यानसिंह को डरा धमका कर मनोरमा को तो गिरफ़ार कर लिया * मगर माधवी कहां गई और क्या हुई इसका हाल कुछ लिखा नहीं गया अस्तु अब हम थोड़ा सा हाल माधवी का लिखना उचित समझते हैं॥

जिस जमाने में माधवी गया और राजगृही की रानी कहलाती थी उस जमाने में उसका राज्य केवल तीन ही आदमियों के भरोसे पर चलता था। एक दीवान अग्निदत्त, दूसरा कोतवाल धर्मसिंह और तीसरा सेनापति कुंअरसिंह। बस येही तीनों उसके राज्य का आनन्द लेते थे और इन्हीं तीनों का माधवी को भरोसा भी था। यद्यपि ये तीनों ही माधवी की चाह में डूबने वाले थे मगर कुंअरसिंह और धर्मसिंह प्यासे ही रह गये जिसका कि उन दोनों को बहुत ही रञ्ज रहा॥

जब राजगृही और गया की किस्मत ने पलटा खाया तब धर्मसिंह कोतवाल को तो चपला ने माधवी की सूरत बन, और धोखा देकर गिरफ़ार कर लिया और दीवान अग्निदत्त बहुत दिनों तक बचा रह कर अन्त में किशोरी के कारण एक खोह के अन्दर मारा गया परन्तु

* हिस्सा १४, बयान २॥

अभी तक यह न मालूम हुआ कि उसके मारे जाने का सबब क्या था। हां सेनापति कुबेरसिंह जिसने माधवी के राज्य में सबसे ज्यादे दौलत पैदा की थी, बचा रह गया क्योंकि उसने जमाने को पलटा खाते देख चुपचाप अपने घर (मुर्शिदाबाद) का रास्ता लिया, मगर माधवी के हाल चाल की खबर लेता रहा, क्योंकि यद्यपि उसने माधवी का राज्य छोड़ दिया था मगर माधवी के इश्क ने उसके दिल में से अपना दखल नहीं उठाया था॥

माधवी की बिगड़ी हुई अवस्था देख कर भी उसकी मुहब्बत से हाथ न धोने का दो सबब था, एक तो माधवी वास्तव में खूबसूरत, हसीन और नाजुक थी, दूसरे राजगृही और गया के राज्य से खारिज हो जाने पर भी वह माधवी को अमीर और बेहिसाब दौलत का मालिक समझता था और इसी लिये वह समय पर ध्यान रख कर माधवी के हाल चाल की बराबर खबर लेता रहा और वक्त पर काम देने के लिये थोड़ी सी फौज का मालिक भी बना रहा॥

मनोरमा के गिरफ्तार हो जाने बाद जब शिवदत्त और कल्यानसिंह के साथ वह रोहतासगढ़ की तराई में पहुंची तो एक आदमी ने गुप्त रीति पर उसे एक चीठी दी और बहुत जल्द उसका जवाब मांगा। वह चीठी कुबेरसिंह की थी और उसमें यह लिखा हुआ थाः-

"मुझे आपकी अवस्था पर बहुत रञ्ज और अफसोस है !! यद्यपि आपकी हालत बदल गई है और आप मुझसे बहुत दूर हैं मगर मैं अभी तक आपकी खयाली तस्वीर अपने दिल के अन्दर कायम रख कर दिन रात उसकी पूजा किया करता हूं। यही सबब है कि बहुत दिनों तक मेहनत करके मैंने इतनी ताकत पैदा कर ली है कि आप की मदद कर सकूं और आपको पुनः राजगृही की गद्दी का मालिक बनाऊं। आप अपने ही दिल से पूछ देखिये कि अग्निदत्त, जिसके

साथ आपने सब कुछ किया कैसा बेईमान और बेमुरौवत निकला और मैं, जिसे आपने हद्द से ज्यादे तरसाया कैसी हालत में आपकी मदद करने को तैयार हूं? यदि आप मुनासिब समझें तो इसके साथ मेरे पास चली आवें या मुझी को अपने पास बुलावें। यह आदमी जो चीठी लेकर जाता है मेरा ऐयार है॥"

आपका—कुबेर।

माधवी ने उस चीठी को बड़े गौर से दोहरा और तेहरा कर पढ़ा और देर तक तरह तरह की बातें सोचती रही। हम नहीं जानते कि उसका दिल किन किन बातों का फैसला करता रहा, या वह किस बिचार में देर तक डूबी रही? हां थोड़ी देर बाद उसने सर उठा कर चीठी लाने वाले की तरफ देखा और कहा, "कुबेरसिंह कहां पर है?"

ऐयार०। यहां से थोड़ी ही दूर पर॥

माधवी०। फिर वह खुद यहां क्यों न आया?

ऐयार०। इसलिये कि आप इस समय दूसरों के साथ हैं जिन्होंने आपको न मालूम किस तरह का भरोसा दिया होगा या आप ही ने शायद उनसे किसी तरह का एकरार किया हो, ऐसी अवस्था में आप से दरियाफ़्त किये बिना इस लश्कर में आना मुनासिब नहीं समझा॥

माधवी०। ठीक है, अच्छा तुम जा कर उसे बहुत जल्द मेरे पास ले आओ, कितनी देर में आओगे?

ऐयार०। (सलाम करके) आध घण्टे के अन्दर॥

वह ऐयार तेजी के साथ दौड़ता हुआ वहां से चला गया और माधवी उसी जगह टहलती हुई उसका इन्तजार करने लगी॥

दिन आधे घण्टे से कुछ ज्यादे बाकी था और इस समय माधवी कुछ खुश मालूम होती थी, शिवदत्त और कल्यानसिंह का लश्कर

एक जङ्गल में छिपा हुआ था और माधवी अपने डेरे से निकल कर सौ सवा सौ कदम की दूरी पर चली गई थी । माधवी कुबेरसिंह के अक्षर अच्छी तरह पहिचानती थी इस लिये उसे किसी के धोखा देने का शक कुछ भी न हुआ और वह बेखौफ उसके आने का इन्तजार करने लगी ॥

सन्ध्या होने के पहिले ही अपने उसी ऐयार को साथ लिये हुए कुबेरसिंह माधवी की तरफ आता दिखाई दिया जो थोड़ी ही देर पहिले उसको चीठी लेकर आया था, उस समय वह ऐयार भी एक घोड़े पर सवार था और कुबेरसिंह अपनी सूरत शक्ल तथा हैसियत को अच्छी तरह सजाये हुए था । माधवी के पास पहुंच कर दोनों आदमी घोड़े से नीचे उतर पड़े और कुबेरसिंह ने माधवी को सलाम करके कहा, "आज बहुत दिनों के बाद ईश्वर ने मुझे आपसे मिलाया, मुझे इस बात का बहुत ही रञ्ज है कि आप ने चुपचाप लौंडियों के भड़काने से घर छोड़ कर जङ्गल का रास्ता लिया और अपने खैरखाह कुबेरसिंह (हम) को याद तक न किया !! मैं खूब जानता हूं कि आपने अपने दीवान अग्निदत्त से डर कर ऐसा किया था मगर उसके बाद भी तो मुझे याद करने का मौका जरूर मिला होगा ॥"

माधवी० । (मुस्कुराती हुई कुबेरसिंह का हाथ पकड़ के) मैं घर से निकलने के बाद ऐसी मुसीबत में पड़ गई थी कि अपनी भलाई बुराई पर कुछ भी ध्यान न दे सकी और जब मैंने सुना कि गया और राजगृही में बीरेन्द्रसिंह का राज्य होगया तब और भी हताश होगई, फिर भी मैं अपने उद्योग की बदौलत बहुत कुछ कर गुजरती मगर गया जी में अग्निदत्त की लड़की कामिनी ने मेरे साथ बहुत बुरा बर्ताव किया और मुझे किसी लायक न रक्खा (अपनी कटी हुई कलाई दिखा कर) यह उसी की बदौलत है ॥

कुबेर०। वह खान्दान का खान्दान निमकहराम निकला और इसी फेर में अग्निदत्त मारा भी गया॥

माधवी०। हां उसके मरने का हाल मायारानी की सखी मनोरमा की ज़ुबानी मैंने सुना था (पीछे की तरफ देख के) कौन आ रहा है?

कुबेर०। आपही के लश्कर का कोई आदमी है शायद आप को बुलाने आता हो, नहीं, वह दूसरी तरफ घूम गया, मगर अब आप को कुछ सोच बिचार करना, किसी से मिलना या इस जगह खड़े खड़े बातों में समय नष्ट करना न चाहिये और यह मौका भी बात चीत करने का नहीं है आप, (घोड़े की तरफ इशारा कर के) इस घोड़े पर शीघ्र सवार होकर मेरे साथ चली चलें, मैं आपका तावेदार सब लायक और सब कुछ करने के लिये तैयार हूं, फिर किसी के खुशामद की जरूरत ही क्या है? यदि कल्यानसिंह के लश्कर में आप का कुछ असबाब हो भी तो उसकी परवाह न कीजिये॥

माधवी०। नहीं अब मुझे किसी की परवाह नहीं रही मैं तुम्हारे साथ चलने को तैयार हूं॥

इतना कह कर माधवी कुबेरसिंह के घोड़े पर सवार हो गई, कुबेरसिंह अपने ऐयार के घोड़े पर सवार हुआ और पैदल ऐयार को साथ लिये हुए दोनों एक तरफ रवाना हुए॥

यही सबब था कि शिवदत्त वगैरह के साथ माधवी रोहतासगढ़ के तहखाने में दाखिल नहीं हुई॥



तीसरा बयान ।

कैद से छुटकारा मिलने बाद बीमारी के सबब से यद्यपि भीमसेन को घर जाना पड़ा और वहां उसकी बीमारी बहुत जल्द जाती रही मगर घर में रहने का जो सुख उसको मिलना चाहिये वह न मिला, क्योंकि एक तो मां के मरने का रञ्ज और गम उसे हद से ज्यादे था और अब वह घर काटने को दौड़ता था, दूसरे थोड़े ही दिन बाद बाप के मरने की खबर भी उसे पहुंचो जिससे वह बहुत ही उदास और बेचैन होगया । इस समय उसके ऐयार लोग भी वहां मौजूद थे जो बाहर से दुःखदाई खबर लेकर लौट आये थे । पहिले तो उसके ऐयारों ने उसे बहुत समझाया और राजा बीरेन्द्रसिंह से सुलह कर लेने में बहुत सी भलाइयां दिखलाईं मगर उस नालायक के दिल में एक भी न बैठी और वह राजा बीरेन्द्रसिंह से बदला लेने तथा किशोरी को जान से मार डालने की कसम खाकर घर से बाहर निकल पड़ा । बाकरअली, खुदा बक्स, अजायबसिंह और यारअली इत्यादि उसके लालची ऐयारों ने भी लाचार होकर उसका साथ दिया ॥

अबकी दफे भीमसेन ने अपने ऐयारों के सिवाय और किसी को भी साथ न लिया हां रुपै अशर्फी या जवाहिरात की किस्म में से जहां तक उससे बना या जो कुछ उसके पास था लेकर अपने ऐयारों को लालच भरी उम्मीदों का सब्ज बाग दिखाता हुआ रवाना हुआ और थोड़ी दूर जाने बाद ऐयारों के साथ ही साथ अपनी भी सूरत बदल ली ॥

"राजा बीरेन्द्रसिंह को किस तरह नीचा दिखाना चाहिये और क्या करना चाहिये ?" इस विषय पर तीन दिन तक उन लोगों में बहस होती रही और अन्त में यह निश्चय किया गया कि "राजा

वीरेन्द्रसिंह और उन के खानदान तथा आपुस वालों का मुक़ाबला करने के पहिले उनके दुश्मनों से दोस्ती बढ़ाकर अपना बल पुष्ट कर लेना चाहिये।" और इस इरादे पर वेलोग कुछ कायम भी रहे और माधवी, मायारानी तथा तिलिस्मी दारोगा वगैरः से मुलाकात करने की फिक्र करने लगे॥

कई दिनों तक सफ़र करने और घूमने फिरने के बाद एक दिन ये लोग दोपहर होते होते एक घने जङ्गल में पहुंचे जहां चार पांच घण्टे आराम कर लेना इनलोगों को बहुत जरूरी मालूम हुआ क्योंकि गर्मी के चलाचली का जमाना था और धूप बहुतही कड़ी और दुःख-दाई थी, मुसाफिरों को तो जाने दीजिये, जङ्गली जानवरों और आकाश में उड़ने तथा बात की बात में दूर २ की खबर लाने वाली चिड़ियाओं को भी पत्तों की आड़ से निकलना बुरा मालूम होता था॥

इस जङ्गल में एक जगह पानी का झरना भी जारी था और उसके दोनों तरफ पेड़ों की घनाहट के सबब बनिस्बत और जगहों के ठण्ढक ज्यादे थी अस्तु ये पांचों मुसाफिर भी झरने के किनारे पत्थर की साफ़ चट्टान देख कर बैठ गये और आपुस में इधर उधर की बातें करने लगे। उसी समय बातचीत की आहट पाने और निगाह दौड़ाने पर इन लोगों की निगाह दस बारह सिपाहियों पर पड़ी जिन्हें देख भीमसेन चौंका और उनका पता लगाने के लिये अजायबसिंह से कहा क्योंकि दोस्तों और दुश्मनों के खयाल से उसका जी एकदम के वास्ते भी ठिकाने नहीं रहता था और वह "पत्ता खड़का बन्दा भड़का" का नमूना बन रहा था॥

भीमसेन की आज्ञानुसार अजायबसिंह ने उन आदमियों का पीछा किया और दो घण्टे तक लौट कर न आया तब दूसरे ऐयारों को भी चिन्ता हुई और अजायबसिंह की खोज में जाने के लिये तैयार

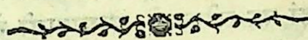
हुए मगर इसकी नौबत न पहुंची क्योंकि उसी समय अजायबसिंह अपने साथ कई सिपाहियों को लिये हुए भीमसेन की तरफ़ आता दिखाई दिया ॥

अजायबसिंह के इस तरह आने ने पहिले तो सभों को खुटके में डाल दिया मगर जब अजायबसिंह ने दूर ही से खुशी का इशारा किया तब सभों का जी ठिकाने हुआ और उसके आने का इन्तजार करने लगे। पास आने पर अजायबसिंह ने भीमसेन से कहा, "इस जङ्गल में आ कर टिक जाना हम लोगों के लिये बहुत अच्छा हुआ क्योंकि रानी माधवी से मुलाकात होगई। आज ही उनका डेरा भी इस जङ्गल में आया है। कुबेरसिंह सेनापति और चार पांच सौ सिपाही उनके साथ हैं, जिन लोगों का मैंने पीछा किया था वे भी उन्हीं के सिपाहियों में से थे और ये भी उन्हीं के सिपाही हैं जो मेरे साथ आपको बुलाने के लिये आये हैं ॥"

माधवी की खबर सुनकर भीमसेन उतनाही खुश हुआ जितना अजायबसिंह की ज़ुबानी भीमसेन के आने की खबर पाकर माधवी खुश हुई थी। अजायबसिंह की बात सुनते ही भीमसेन उठ खड़ा हुआ और अपने ऐयारों को साथ लिये हुए घड़ी भर के अन्दर ही अपनी बेहया बहिन माधवी से जा मिला वे दोनों एक दूसरे को देख कर बहुत खुश हुए मगर उन दोनों की मुलाकात कुबेरसिंह को अच्छी न मालूम पड़ी। इसका सबब क्या था सो हमारे पाठक लोग खुद ही समझ सकते हैं ॥

थोड़ी देर तो भीमसेन और माधवी ने कुशल मङ्गल पूछने में बिताया और तब माधवी ने खाने पीने की चीजें तैयार करने का हुक्म दिया क्योंकि उसे अपने अनूठे भाई की खातिरदारी आज मंजूर थी और इसी लिये बड़ी मुहब्बत के साथ देर तक बातें होती रहीं ॥

माधवी को इस जङ्गल में आये आज पांच दिन हो चुके हैं, पांचवें दिन दोपहर के समय भीमसेन से मुलाकात हुई थी, उसका (या कुबेरसिंह का) ऐयार दुश्मनों की खोज खबर लगाने के लिये कहीं गया हुआ था क्योंकि माधवी और कुबेरसिंह ने इस जङ्गल में पहुंच कर निश्चय कर लिया था कि पहिले दुश्मनों का हाल चाल मालूम करना चाहिये इसके बाद जो कुछ मुनासिब होगा किया जायगा॥



चौथा बयान।

कैद से छूटने के बाद लीला को साथ लिये हुए मायारानी ऐसी भागी कि उसने पीछे की तरफ फिर के भी नहीं देखा, आंधी और पानी के कारण उन दोनों को भागने में बड़ी तकलीफ हुई, कई दफे वे दोनों गिरीं और उन दोनों को चोट भी लगी मगर प्यारी जान को बचा कर ले भागने के खयाल ने उन्हें किसी तरह दम न लेने दिया। दो घण्टे के बाद आंधी पानी का जोर जाता रहा, आसमान साफ होगया और चन्द्रमा भी निकल आया, उस समय उन दोनों को भागने में सुबीता हुआ और सवेरा होते तक वे दोनों बहुत दूर निकल गईं॥

मायारानी यद्यपि खूबसूरत थी, नाजुक थी और अमीरी परले सिरे की कर चुकी थी मगर इस समय वे सब बातें हवा होगईं, पैर में छाले पड़ जाने पर भी उसने भागने में कसर न की और सवेरा हो जाने पर भी उसने दम न लिया बराबर भागी चली गई। दूसरा दिन भी उसके लिये बहुत अच्छा था आसमान पर बदली छाई हुई थी और धूप को जमीन तक पहुंचने का मौका न मिलता था। अब मायारानी बातचीत करती हुई और पिछली बातें लीला को सुनाती

हुई रुक रुक कर चलने लगी, थोड़ी दूर जाती फिर जरा दम ले लेती पुनः उठकर चलती और कुछ दूर बाद दम ले लेने के लिये बैठ जाती। इसी तरह दूसरा दिन भी मायारानी ने सफर ही में बिता दिया और खाने पीने को कुछ भी विशेष परवाह न की, सन्ध्या होने के कुछ पहिले वे दोनों एक पहाड़ी की तराई में पहुंचीं जहां साफ पानी का सुन्दर चश्मा बह रहा था और जङ्गली बैर तथा मकोय के पेड़ भी बहुतायत से थे। वहां पर लीला ने मायारानी से कहा कि " अब डरने तथा चलते चलते जान देने की कोई जरूरत नहीं, हम लोग बहुत दूर निकल आये हैं और ऐसे रास्ते से आये हैं कि जिधर से किसी मुसाफिर की आमदरफ़ नहीं होती अस्तु अब हम लोगों को कुछ देर बेफिक्री के साथ आराम करना चाहिये, यह जगह इस लायक है कि हमलोग कुछ खा पी कर अपनी आत्मा को सन्तोष दे लें और अपनी सूरत भी अच्छी तरह बदल कर पहिचाने जाने का खटका मिटा लें ॥

लीला की बात मायारानी ने स्वीकार की और चश्मे के पानी से हाथ मुंह धोने और जरा दम लेने बाद सब के पहिले सूरत बदलने का बन्दोबस्त करने लगी क्योंकि दिन नाम मात्र को रह गया था और रात हो जाने पर बिना रोशनी के सहारे यह काम अच्छी तरह नहीं हो सकता था ॥

सूरत शक्ल के हेर फेर से छुट्टी पाने बाद दोनों ने जङ्गली बैर और मकोय को अच्छे से अच्छा मेवा समझ कर भोजन किया और चश्मे का जल पी कर आत्मा को सन्तोष दिया और तब निश्चिन्त होकर बैठीं और यों बातचीत करने लगीं:—

माया० । अब जरा जी ठिकाने हुआ है, मगर शरीर चूर चूर हो गया खैर किसी तरह तेरी बदौलत जान बच गई, नहीं तो मैं हर

तरह से नाउम्मीद हो चुकी थी और राह देखती थी कि मेरी जान किस तरह ली जाती है ॥

लीला० । चाहे तुम्हारे बिल्कुल नौकर चाकर तुम्हारे अहसानों को भूल जायँ और तुम्हारे नमक का खयाल न करें मगर मैं कब ऐसा कर सकती हूं मुझे दुनिया में तुम्हारे बिना चैन कब पड़ सकता है, जब तक तुम्हें कैद से छुड़ा न लिया अन्न का दाना मुंह में न डाला बल्कि अभी तक जङ्गली बेर और मकोय पर गुजारा कर रही हूं ॥

माया० । शाबाश ! मैं तुम्हारे इस अहसान को जन्म भर नहीं भूल सकती, जिस तरह आप रहूंगी उसी तरह तुम्हें भी रक्खूंगी, यह जान तुमने बचाई है इसलिये जब तक इस दुनिया में रहूंगी इस जान का मालिक तुम्हीं को समझूंगी ॥

लीला०।(तिलिस्मी तमञ्चा और गोली मायारानी के सामने रख कर) यह अपनी अमानत आप लीजिये और अब इसे अपने पास रखिये, इसने बड़ा काम दिया ॥

माया० । (तमञ्चा उठा कर और थोड़ी सी गोली लीला को दे कर) इन गोलियों को अपने पास रक्खो, बिना तमञ्चे के भी ये बड़ा काम देंगी, जिस जगह फेंक दोगी या जहां जमीन पर पटकोगी उसी जगह यह अपना गुन दिखलावेंगी ॥

लीला०। (गोली रख कर) बेशक ये बड़े बक्त पर काम दे सकती हैं । अच्छा यह कहिये कि अब हम लोगों को क्या करना और कहां जाना चाहिये ?

माया० । इसका जवाब तो तुम ही बहुत अच्छा दे सकती हो, मैं केवल इतना ही कहूंगी कि गोपालसिंह और कमलिनी का इस दुनिया से उठा देना सबसे पहिला और जरूरी काम समझना चाहिये । किशोरी, कामिनी और कमला को मार कर मनोरमा ने कुछ भी न

किया, इतनी ही मेहनत गोपालसिंह और कमलिनी को मारने के लिये करती तो इस समय मैं पुनः तिलिस्म की रानी कहलाने लायक हो सकती ॥

लीला०। ठीक है मगर मुझे (कुछ रुक कर) देखो तो वह कौन सवार जा रहा है! मुझे उस छोकड़े रामदीन की छटा मालूम पड़ती है! यह पचकल्यान मुश्की घोड़ी भी अपने ही अस्तबल की मालूम पड़ती है बल्कि......

माया०। वही है जिस पर मैं सवार हुआ करती थी बेशक वह सवार भी रामदीन ही है, उसे पकड़ो तो गोपालसिंह का ठीक ठीक हाल मालूम हो ॥

लीला०। पकड़ना तो कोई कठिन नहीं है क्योंकि तिलिस्मी तमञ्चा तुम्हारे पास मौजूद है मगर यह कम्बख़्त कुछ बताने वाला नहीं है ॥

माया०। खैर जो हो मैं तो गोली चलाती हूं ॥

इतना कह कर मायारानी ने फुर्ती से तिलिस्मी तमञ्चे में गोली भर कर सवार की तरफ चलाई। गोली घोड़ी की गर्दन में लगी और तुरत फट गई, घोड़ी भड़की और उछली कूदी मगर गोली से निकले हुए बेहोशी के धूएँ ने अपना असर करने में उससे भी ज्यादे तेजी और फुर्ती दिखाई। घोड़े और सवार दोनों ही पर बेहोशी का असर हो गया। सवार जमीन पर गिर पड़ा और दो कदम आगे बढ़ कर घोड़ी भी लेट गई। मायारानी और लीला ने दूर से यह तमाशा देखा और दौड़ती हुई सवार के पास पहुंचीं ॥

लीला०। पहिले इसकी मुश्कें कसनी चाहियें ॥

माया०। क्या जरूरत है?

लीला०। क्यों, फिर इसे बेहोश किस लिये किया?

माया०। तुम खुद ही कह चुकी हो कि यह कुछ बताने वाला

नहीं है फिर मुश्कें बांधने से मतलब ?

लीला०। आखिर फिर किया क्या जायगा ?

मांया०। पहिले तुम इसकी तलाशी ले लो फिर जो कुछ करना होगा मैं बताऊँगी ॥

लीला०। बहुत खूब, यह तुमने ठीक कहा ॥

इस समय सन्ध्या पूरे तौर पर हो चुकी थी परन्तु चन्द्रदेव के दर्शन हो रहे थे इस लिये यह नहीं कह सकते कि अन्धकार पल २ में बढ़ता जाता था। लीला उस सवार की तलाशी लेने लगी और पहिले ही दफे जेब में हाथ डालने से उसे दो चीज मिली। एक तो हीरे की कीमती अँगूठी जिस पर राजा गोपालसिंह का नाम खुदा हुआ था और दूसरी चीज एक चीठी थी जो बिना लिफाफे के लिफाफे की तौर पर लपेटी हुई थी ॥

चाहे अन्धकार न हो मगर चीठी और अँगूठी पर खुदे हुए नाम को पढ़ने के लिये रोशनी की जरूरत थी और जब तक चीठी का हाल मालूम न हो जाय तब तक और कुछ काम करना या तलाशी लेना उन दोनों को मञ्जूर न था, अस्तु लीला ने अपने ऐयारी के बटुये में से सामान निकाल कर रोशनी पैदा की और मायारानी ने सबके पहिले अँगूठी पर निगाह दौड़ाई। अँगूठी पर "श्रीगोपाल" खुदा हुआ देख उसके रोंगटे खड़े हो गये और उसे अपनी तबीयत सम्हाल कर चीठी पढ़नी पड़ी चीठी में यह लिखा हुआ था:—

"बेनीराम जोग लिखी गोपालसिंह:—

आज हमने अपना पर्दा खोल दिया, कृष्णाजिन्न के नाम का अन्त हो गया, जिनके लिये यह स्वांग रचा गया था उन्हें मालूम होगया कि गोपालसिंह और कृष्णाजिन्न में कोई भेद नहीं है अस्तु अब हमने काम काज के लिये इस छोकड़े को अपनी अँगूठी दे कर विश्वास

का पात्र बनाया है । जब तक यह अँगूठी इसके पास रहेगी तब तक इसका हुक्म हमारे हुक्म के बराबर सभों को मानना होगा । इसका बन्दोबस्त कर देना और दो सौ सवार तथा चार रथ बहुत जल्द पिपलिया घाटी में भेज देना । हम किशोरी, कामिनी, लक्ष्मीदेवी और कमलिनी वगैरह को ले कर आते हैं । थोड़ा सा जलपान का सामान उम्दा अलग भेजना । परसों रविवार की शाम तक हमलोग वहां पहुंच जायँगे ॥"

इस चीठी ने मायारानी का कलेजा दहला दिया और उसने घबड़ा कर वह चीठी पढ़ने के लिये लीला के हाथ में दे दी ॥

माया० । ओफ ! मुझे स्वप्न में भी इस बात का गुमान न था कि कृष्णाजिन्न वास्तव में गोपाल है ! आह ! अब मैं पिछली बातें याद करती हूं तो कलेजा कांप जाता है और अब मालूम होता है कि गोपालसिंह ने मेरी तरफ से लापरवाही नहीं की बल्कि उसने मुझे बुरी तरह से दुःख देने का इरादा कर लिया था । किशोरी, कामिनी और कमला के बारे में भी......ओफ ! बस अब मैं इस जगह दम भर भी नहीं ठहर सकती और ठहरना उचित भी नहीं है ॥

लीला० । बेशक ऐसाही है मगर कोई हर्ज नहीं, आज यदि कृष्णाजिन्न का भेद खुल गया है तो यह (अँगूठी और चीठी दिखा कर) चीज भी बड़ी ही अनूठी मिल गई है । तुम बहुत जल्द देखोगी कि इस चीठी और अँगूठी की बदौलत मैं कैसे कैसे नामी ऐयारों की आंखों में धूल डालती हूं और गोपालसिंह तथा उसके सहायकों को किस तरह तड़पा तड़पा कर मारती हूं । तुम यह भी देखोगी कि तुम्हारे उन लोगों ने जो ऐयारी का बाना पहिने हुए थे और नामी ऐयार कहलाते थे उसका पासङ्ग भी नहीं किया जो मैं अब कर दिखाऊंगी । हां तो अब यहां से चलना चाहिये ॥

माया० । बहुत जल्द चलना चाहिये मगर क्या इस छोकड़े को जीता ही छोड़ जाओगी ?

लीला० । नहीं नहीं, कदापि नहीं । क्या इसे मैं इस लिये जीता छोड़ जाऊंगी कि होश में आकर जमानियां या गोपालसिंह के पास चला जाय और मेरी कार्रवाइयों में बट्टा लगावे ॥

इतना कह कर लीला ने खञ्जर निकाला और एक ही हाथ में बेचारे रामदीन का सिर काट दिया और लाश को उसी तरह छोड़ घोड़ी को होश में लाने का उद्योग करने लगी ॥

थोड़ी देर में घोड़ी भी चैतन्य हो गई, उस समय लीला के कहे अनुसार मायारानी उस घोड़ी पर सवार हुई और वहां से हट कर एक घने जङ्गल का रास्ता लिया । लीला घोड़ी की रिकाब थाम्हे साथ साथ बातें करती हुई जाने लगी ॥

माया० । यह मदद मुझे गैब से मिली है । यकायक रामदीन का मिल जाना और उसकी जेब में से अँगूठी तथा चीठी का निकल आना कहे देता है कि अब मेरे बुरे दिन जल्द दूर हुआ चाहते हैं ॥

लीला० । इसमें क्या शक है । अबकी दफे तो राजा गोपालसिंह सचमुच हमारे कब्जे में आ गये हैं । अफसोस इतना ही है कि हम लोग अकेले हैं अगर सौ पचास आदमियों की भी मदद होती तो आज गोपालसिंह तथा किशोरी, लक्ष्मीदेवी और कमलिनी वगैरह को सहज ही में गिरफ्तार कर लेती ॥

माया०। अब उन लोगों को गिरफ्तार करने का खयाल तो बिल्कुल जाने दे और एकदम से उन लोगों को मार कर बखेड़ा निपटा डालने की फिक्र कर, इस अँगूठी और चीठी के मिल जाने पर यह काम कोई मुश्किल नहीं है ॥

लीला०। ठीक है जो कुछ तुम चाहती हो मैं पहिले ही से समझे

बैठी हूं । मेरा इरादा है कि तुम्हें किसी अच्छी और हिफाजत की जगह पर छोड़ कर जमानियां जाऊं और दीवान साहब से मिलूँ जिनके नाम राजा गोपालसिंह ने यह चीठी लिखी है ॥

माया०। अब रामदीन छोकड़े की सूरत बना ले और इसी घोड़ी पर सवार हो कर चली जा । इस चीठी के अलावे भी तू जो कुछ दीवान साहब को कहेगी वह उससे इन्कार न करेगा । गोपालसिंह के लिखे अनुसार जो कुछ खाने पीने की चीजें तू ले कर उस घाटी की तरफ जायगी उसमें जहर मिला देना तेरे लिये कोई मुश्किल न होगा और इस तरह एक साथ ही कई दुश्मनों की सफाई हो जायगी, मगर इसमें भी मुझे एक बात का खटका होता है ॥

लीला० । वह क्या ?

माया० । जिस वक्त से मुझे यह मालूम हुआ है कि गोपालसिंह ही ने कृष्णा जिन्न का रूप धारण किया था उस वक्त से मैं उसे बहुत ही चालाक और धूर्त ऐयार समझने लग गई हूं । ताज्जुब नहीं कि वह तेरा भेद मालूम कर जाय या वह खाने पीने की चीजें जो उसने मँगाई हैं उसमें से स्वयम् कुछ भी न खाय ॥

लीला०। यह कोई ताज्जुब की बात नहीं है । मेरा दिल भी यही कहता है कि उसने खाने पीने का बहुत बड़ा ध्यान रक्खा होगा, सिवाय अपने हाथ के और किसी का बनाया कदापि न खाता होगा । क्योंकि वह बड़ी बड़ी तकलीफें उठा चुका है अब उसे धोखा देना जरा टेढ़ी खीर है मगर फिर भी तुम देखोगी कि इस अंगूठी की बदौलत मैं उसे कैसा धोखा देती हूं और किस तरह अपने पंजे में फंसाती हूं॥

माया०। खैर जो मुनासिब समझ कर मगर इसमें तो कोई शक नहीं है कि रामदीन छोकड़े की सूरत बन और इस घोड़ी पर सवार होकर तू दीवान साहब के पास जायगी ॥

लीला०। जाऊंगी और जरूर जाऊंगी नहीं तो इस अंगूठी और चीठी के मिलने का फायदा ही क्या हुआ ? बस तुम्हें किसी अच्छे ठिकाने पर रख देने भर की देर है॥

माया०। मगर मैं एक बात और कहा चाहती हूं॥

लीला०। वह क्या ?

माया०। मैं इस समय बिलकुल कङ्गालिन हो रही हूं और ऐसे मौके पर रुपै की बहुत बड़ी जरूरत है। इसलिये मैं चाहती हूं कि दीवान साहब के पास तुझे न भेज कर मैं खुद जाऊं और किसी तरह तिलिस्मी बाग में घुसकर कुछ जवाहिरात और सोना जहां तक ला सकूं ले आऊं क्योंकि मुझे वहां के खजाने का हाल बिलकुल मालूम है और यह काम तेरे किये नहीं हो सकता। जब मुझे रुपै की मदद मिल जायगी तब कुछ सिपाहियों का भी बन्दोबस्त कर सकूंगी और........

लीला०। यह सब कुछ ठीक है मगर मैं तुम्हें दीवान साहब के पास कदापि न जाने दूंगी। कौन ठिकाना कहीं तुम गिरफ़ार हो जाओ तो फिर मेरे किये कुछ भी न हो सकेगा। बाकी रही रुपै पैसे वाली बात सो इसके लिये तरद्दुद करना वृथा है, क्या यह नहीं हो सकता कि जब मैं दीवान साहब के पास जाऊं और सवारी इत्यादि तथा खाने पीने की चीजें लूं तो एक रथ पर थोड़ी सी अशर्फियां और कुछ जवाहिरात भी रख देने के लिये कहूं ? क्या वह इस अँगूठी के प्रताप से मेरी बात न मानेगा ? और अगर अशर्फियां और जवाहिरात का बन्दोबस्त कर देगा तो क्या मैं उन्हें रास्ते में से नहीं गुम कर सकती ? इसे भी जाने दो अगर तुम मुझे पता ठिकाना ठीक २ बताओ तो क्या मैं तिलिस्मी बाग में जाकर जवाहिरात और अशर्फियों को नहीं निकाल ला सकती ?

माया० । निकाल ला सकती हो और दीवान साहब से भी जो कुछ मांगोगी सम्भव है कि बिना कुछ बिचारे देदें मगर इसमें मुझे दो बातों की कठिनाई मालूम पड़ती है ॥

लीला० । वह क्या ?

माया० । एक तो दीवान साहब के पास अन्दाज से ज्यादे रुपै अशर्फियों की तहवील नहीं रहती । जवाहिरात तो बिल्कुल ही उन के पास नहीं रहता शायद आजकल गोपालसिंह के हुक्म से रहता हो मगर मुझे उम्मीद नहीं है अस्तु जो चीज तू उन से मांगेगी वह अगर उनके पास न हुई तो उन्हें तुझपर शक करने को जगह मिलेगी और ताज्जुब नहीं कि काम में विघ्न पड़ जाय ॥

लीला० । अगर ऐसा है तो जरूर खटके की जगह है । अच्छा दूसरी बात क्या है ?

माया०। दूसरे यह कि तिलिस्मी बाग के खजाने में घुस कर वहां से कुछ निकाल लाना नये आदमी का काम नहीं है । खैर मैं तुझे रास्ता बता दूंगी फिर जो कुछ करते बने कर लीजियो ॥

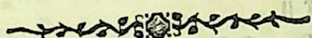
लीला०। खैर जैसा होगा देखा जायगा मगर मैं यह राय नहीं दे सकती कि तुम दीवान साहब के सामने या खासबाग में जाओ । ज्यादे नहीं तो थोड़ा बहुत मैं ले ही आऊंगी ॥

माया० । अच्छा यह बता कि मुझे यहां छोड़ जायगी और तेरे जाने बाद मैं क्या करूंगी ?

लीला० । इतनी जल्दी में कोई अच्छी जगह तो मिलती नहीं किसी पहाड़ की कन्दरा में दो दिन गुजारा करो और चुपचाप बैठी रहो इसी बीच में मैं अपना काम करके लौट आऊंगी । मुझे जमानियां जाने में अगर देर हो जायगी तो काम चौपट हो जायगा । ताज्जुब नहीं कि देर हो जाने के कारण गोपालसिंह किसी दूसरे को भेज दें

और इस अँगूठी और चीठी का भेद खुल जाय ॥

इत्तफाक अजब चीज है। उसने यहां भी एक बेढब सामान खड़ा कर दिया। इत्तफाक से लीला और मायारानी भी उसी जङ्गल में जा पहुंचीं जिसमें माधवी और भीमसेन का मिलाप हुआ था और वे लोग अभी तक वहां टिके हुए थे ॥



पांचवां बयान।

आधी रात का समय था जब लीला और मायारानी उस जङ्गल में पहुंचीं जिसमें माधवी और भीमसेन टिके हुए थे। जब ये दोनों उनके पास पहुंचीं और लीला को वहां टिके हुए बहुत से आदमियों की आहट मिली तो वह मायारानी को एक ठिकाने खड़ा करके पता लगाने के लिये उनकी तरफ गई ॥

हम ऊपर बयान कर चुके हैं कि "सेनापति कुबेरसिंह के साथ थोड़ी सी फौज भी थी।" अस्तु लीला को थोड़ी ही कोशिश से मालूम हो गया कि यहां सैकड़ों आदमियों का डेरा पड़ा हुआ है और वे लोग इस ढङ्ग से घने जङ्गल में आड़ पकड़ कर टिके हुए हैं जैसे डाकुओं का गरोह या छिपकर धावा मारने वाले टिकते हैं और हर वक्त होशियार रहते हैं। लीला खूब जानती थी कि राजा वीरेन्द्रसिंह और उनके साथी या सम्बन्धी अगर किसी काम के लिये कहीं जाते हैं या चढ़ाई करते हैं तो छिप कर या आड़ पकड़ कर डेरा नहीं डालते, हां अगर अकेले दुकेले या ऐयार लोग हों तो शायद ऐसा करें मगर जब उनके साथ सौ पचास आदमी या कुछ फौज होगी तब ऐसा कदापि न करेंगे। इसलिये गुमान हुआ कि ये लोग जरूर कोई गैर हैं बल्कि ताज्जुब नहीं कि हमारा साथ देने वाले हों। अस्तु

बहुतसी बातें को सोच विचार और अपनी ऐयारी पर भरोसा करके लीला माधवी की फौज में घुस गई और वहां बहुत से सिपाहियों को होशियार तथा पहरा देते हुए देखा ॥

पहिले लिखा जा चुका है कि लीला भेष बदले हुए थी और यह भी दर्साया गया है कि माधवी और कुबेरसिंह अपनी असली सूरत में सफर कर रहे थे ॥

लीला को कई सिपाहियों ने देखा और एक ने टोका कि "कौन है ?"

लीला० । एक मुसाफिर परदेसी औरत ॥

सिपाही० । यहां क्यों चली आती है ?

लीला० । अपनी भलाई की आशा से ॥

सिपाही० । क्या चाहती है ?

लीला० । आपके सर्दार से मिलना ॥

सिपाही० । अपना परिचय दे तो सर्दार के पास भेजवा दूं ॥

लीला० । परिचय देने में कोई हर्ज तो नहीं है मगर डरती हूं कि आपलोग भी कहीं उनमें से न हों जिन्होंने मुझे लूट लिया है। यद्यपि अब मैं बिलकुल खाली हो रही हूं मगर........

इतने में और भी कई सिपाही वहां जुट आये और सभों ने लीला को घेर कर सवाल करना शुरू किया और लीला ने भी गौर करके जान लिया कि ये लोग राजा बीरेन्द्रसिंह के दल वाले नहीं हैं क्योंकि उनके फौजी सिपाही अक्सर जर्द पोशाक काम में लाते हैं । इसी तरह वे जमानियां वाले भी नहीं मालूम हुए क्योंकि उनकी बातचीत और चाल ढाल को लीला खूब पहिचानती थी, अस्तु कुछ और भी बातचीत होने पर लीला को विश्वास हो गया कि ये लोग उनमें से नहीं हैं जिनका मुझे डर है ॥

उन सिपाहियों को भी एक अकेली लीला से डरने की कोई जरूरत न थी इसलिये उन्होंने अपने मालिक का नाम जाहिर कर दिया और लीला को लिये हुए उस जगह पहुंचे जहां माधवी और भीमसेन का बिस्तरा लगा हुआ था और वे दोनों इस समय भी बैठे बातचीत कर रहे थे। लालटैन जलाई गई और लीला की सूरत अच्छी तरह देखी गई, लीला ने भी उसी रोशनी में माधवी को पहिचान लिया और खुश होकर बोली, "अहा! आप तो गया की रानी माधवी देवी हैं !!"

माधवी०। और तू कौन है ?

लीला०। मैं प्रसिद्ध मायारानी की ऐयारा हूं और उन्हीं के साथ यहां तक आई भी हूं। यह दुनिया का कायदा है कि एक से दूसरे को मदद पहुंचती है अस्तु जिस तरह आप को मायारानी से मदद पहुंच सकती है उसी तरह आप मायारानी की भी मदद कर सकती हैं। वाह! वाह !! यह समागम तो बहुत ही अच्छा हुआ। अगर आज-कल मायारानी मुसीबत के दिन काट रही हैं तो क्या हुआ मगर फिर भी वह तिलिस्म की रानी रह चुकी हैं, जो कुछ वह कर सकती हैं किसी दूसरे से नहीं हो सकता, आप लोगों का मिल कर एक हो जाना बहुत ही मुनासिब होगा और तब आप लोग जो चाहेंगे कर सकेंगे॥

माधवी०। (खुश होकर) मायारानी कहां हैं ? उन्हें तो राजा बीरेन्द्रसिंह कैद करके चुनार ले गये थे !!

लीला०। जी हां मगर मैं अभी कह चुकी हूं कि "मायारानी आखिर तिलिस्म की रानी हैं इसलिये जो कुछ वह कर सकती हैं किसी दूसरे के किये नहीं हो सकता।" राजा बीरेन्द्रसिंह ने उन्हें कैद कर लिया तो क्या हुआ उनका छूटना कोई मुश्किल न था॥

बहुत सी बातों को सोच विचार और अपनी ऐयारी पर भरोसा करके लीला माधवी की फौज में घुस गई और वहां बहुत से सिपाहियों को होशियार तथा पहरा देते हुए देखा ॥

पहिले लिखा जा चुका है कि लीला भेष बदले हुए थी और यह भी दर्साया गया है कि माधवी और कुबेरसिंह अपनी असली सूरत में सफर कर रहे थे ॥

लीला को कई सिपाहियों ने देखा और एक ने टोका कि "कौन है ?"

लीला० । एक मुसाफिर परदेसी औरत ॥

सिपाही० । यहां क्यों चली आती है ?

लीला० । अपनी भलाई की आशा से ॥

सिपाही० । क्या चाहती है ?

लीला० । आपके सर्दार से मिलना ॥

सिपाही० । अपना परिचय दे तो सर्दार के पास भेजवा दूं ॥

लीला० । परिचय देने में कोई हर्ज तो नहीं है मगर डरती हूं कि आपलोग भी कहीं उनमें से न हों जिन्होंने मुझे लूट लिया है। यद्यपि अब मैं बिल्कुल खाली हो रही हूं मगर.........

इतने में और भी कई सिपाही वहां जुट आये और सभों ने लीला को घेर कर सवाल करना शुरू किया और लीला ने भी गौर करके जान लिया कि ये लोग राजा बीरेन्द्रसिंह के दल वाले नहीं हैं क्योंकि उनके फौजी सिपाही अक्सर जर्द पोशाक काम में लाते हैं । इसी तरह वे जमानियां वाले भी नहीं मालूम हुए क्योंकि उनकी बातचीत और चाल ढाल को लीला खूब पहिचानती थी, अस्तु कुछ और भी बातचीत होने पर लीला को विश्वास हो गया कि ये लोग उनमें से नहीं हैं जिनका मुझे डर है ॥

उन सिपाहियों को भी एक अकेली लीला से डरने की कोई जरूरत न थी इसलिये उन्होंने अपने मालिक का नाम जाहिर कर दिया और लीला को लिये हुए उस जगह पहुंचे जहां माधवी और भीमसेन का बिस्तरा लगा हुआ था और वे दोनों इस समय भी बैठे बातचीत कर रहे थे। लालटैन जलाई गई और लीला की सूरत अच्छी तरह देखी गई, लीला ने भी उसी रोशनी में माधवी को पहिचान लिया और खुश होकर बोली, "अहा! आप तो गया की रानी माधवी देवी हैं!!"

माधवी०। और तू कौन है?

लीला०। मैं प्रसिद्ध मायारानी की ऐयारा हूं और उन्हीं के साथ यहां तक आई भी हूं। यह दुनिया का कायदा है कि एक से दूसरे को मदद पहुंचती है अस्तु जिस तरह आप को मायारानी से मदद पहुंच सकती है उसी तरह आप मायारानी की भी मदद कर सकती हैं। वाह! वाह!! यह समागम तो बहुत ही अच्छा हुआ। अगर आज-कल मायारानी मुसीबत के दिन काट रही हैं तो क्या हुआ मगर फिर भी वह तिलिस्म की रानी रह चुकी हैं, जो कुछ वह कर सकती हैं किसी दूसरे से नहीं हो सकता, आप लोगों का मिल कर एक हो जाना बहुत ही मुनासिब होगा और तब आप लोग जो चाहेंगे कर सकेंगे॥

माधवी०। (खुश होकर) मायारानी कहां हैं? उन्हें तो राजा बीरेन्द्रसिंह कैद करके चुनार ले गये थे!!

लीला०। जी हां मगर मैं अभी कह चुकी हूं कि "मायारानी आखिर तिलिस्म की रानी हैं इसलिये जो कुछ वह कर सकती हैं किसी दूसरे के किये नहीं हो सकता।" राजा बीरेन्द्रसिंह ने उन्हें कैद कर लिया तो क्या हुआ उनका छूटना कोई मुश्किल न था॥

माधवी० । बेशक बेशक, अच्छा यह बताओ वह कहां हैं ?

लीला० । यहां से थोड़ी ही दूर पर खड़ी हैं, किसी सर्दार को भेजिये उनका इस्तकबाल करके यहां ले आवे, दो तीन सौ कदम से ज्यादे न चलना पड़ेगा ॥

माधवी० । मैं खुद उन्हें लेने के लिये चलूंगी ॥

लीला० । इससे बढ़ कर और क्या हो सकता है ? अगर आप उनकी इज्जत करेंगी तो वह भी आपके लिये जान तक देना जरूरी समझेंगी ॥

लीला ने अपनी लम्बी चौड़ी बातों में माधवी को खूब ही उलझाया यहां तक कि माधवी अपने साथ भीमसेन और कुबेरसिंह तथा कई सिपाहियों को लेकर मायारानी के पास गई और उसे बड़ी खातिर और इज्जत के साथ अपने डेरे पर ले गई । जल मँगवा कर हाथ मुंह धुलवाया और फिर बातचीत करने लगी ॥

माधवी० । (मायारानी से) आपको बीरेन्द्रसिंह की कैद से छूट जाने पर मुबारकबाद देती हूं यद्यपि आपके लिये यह कोई बड़ी बात न थी ॥

माया० । बेशक यह कोई बड़ी बात न थी, इस काम को तो अकेला मेरी सखी या ऐयारा लीला ही ने कर दिखाया । इस समय आपसे मिलकर मैं बहुत खुश हुई और इसमें अब शक करने की कोई जगह न रही कि आप पुनः गया की रानी और मैं जमानियां की मालिक बन जाऊंगी । दुनिया में एक का काम दूसरे से हुआ ही करता है और जब हम आप एक दिल हो जायँगे तो वह कौन सा काम है जिसे नहीं कर सकते ! मुझे आपके कैद होने की भी खबर लगी थी और मुझे इस बात का बहुत रञ्ज था कि आपको मेरी छोटी बहिन कमलिनी ने कैदखाने की सूरत दिखाई थी ॥

माधवी०। इधर तो यह सुनने में आया है कि आपसे और कमलिनी से कोई नाता नहीं है और लक्ष्मीदेवी भी प्रगट हो गई है तथा राजा बीरेन्द्रसिह उसे चुनार ले गये हैं॥

माया०। (मुस्कुरा कर) बेशक ऐसा ही है, मगर जिस जमाने का मैं जिक्र कर रही हूं उस जमाने में वह मेरी ही बहिन कहलाती थी और लक्ष्मीदेवी को राजा बीरेन्द्रसिह चुनार नहीं ले गये हैं वह तो किशोरी, कामिनी, कमलिनी, लाडिली और कमला के सहित किसी दूसरी ही जगह छिपाई गई है मगर इसमें भी कोई सन्देह नहीं है कि कल शाम को गोपालसिह उन सभों को जमानियां की तरफ ले जायंगे और हमलोग उन्हें गोपालसिह के सहित रास्ते ही में गिरफ्तार कर लेंगे॥

माधवी०। (ताज्जुब से) हां! क्या कल मैं उस दुष्टा किशोरी की नापाक सूरत देख सकूंगी? उसपर मुझे बड़ा ही रञ्ज है और कमलिनी ने तो मुझे कैद ही किया था॥

माया०। बेशक कल किशोरी और कमलिनी इत्यादि तुम्हारे कब्जे में होंगी और गोपालसिह भी तुम्हारे काबू में होगा जो बीरेन्द्रसिह और उनके लड़कों की बदौलत तुम्हारा सब से बड़ा दुश्मन हो रहा है॥

माधवी०। निःसन्देह वह मेरा और तुम्हारा सब से बड़ा दुश्मन है, तो क्या उनकी गिरफ्तारी का इन्तजाम हो चुका है?

माया०। हां चौदह आना इन्तजाम हो चुका है और दो आना बाकी है सो वह भी हो जायगा॥

माधवी०। क्या क्या बन्दोबस्त हुआ है और किस समय तथा किस तरह वे लोग गिरफ्तार किये जायंगे?

माया०। (इधर उधर देख कर) बहुत सी बातें ऐसी हैं जो मैं

केवल तुम्हीं से कहूंगी क्योंकि कोई दूसरा उसके सुनने का अधिकारी नहीं है ॥

माधवी०। बहुत अच्छा यह कोई बड़ी बात नहीं है ॥

इतना कहकर माधवी ने भीमसेन और कुबेरसिंह की तरफ देखा क्योंकि माधवी, मायारानी और लीला के सिवाय केवल ये ही दो आदमी वहां मौजूद थे। भीमसेन ने कहा—"हम दोनों यहां से हट जाते हैं तुमलोग बेधड़क बातें करो मगर (मायारानी से) मेरे एक सवाल का जवाब भी पहिले मिलना चाहिये ॥"

माया०। वह क्या ?

भीम०। आप अभी कह चुकी हैं कि "कल किशोरी, कामिनी और लक्ष्मीदेवी वगैरह गिरफ्तार हो जायेंगी।" मगर मैंने सुना था कि "राजा बीरेन्द्रसिंह के लश्कर में पहुंच कर मनोरमा ने किशोरी, कामिनी और कमला को जान से मार डाला।" अब इस समय कोई और ही बात सुनने में आती है !!

माधवी०। हां यह सवाल तो मैं भी करने वाली थी लेकिन बातों का सिलसिला दूसरी तरफ चला गया और मैं पूछना भूल ही गई !!

माया०। हां यह बात भी ठीक है क्योंकि उस दिन मैं खुद उसी लश्कर में कैद थी और यह बात अच्छी तरह सुनने में आई थी और मुझे विश्वास भी हो गया था कि वास्तव में ऐसा ही हुआ है मगर आज यह बात खुद गोपालसिंह की लिखावट से खुल गई कि वास्तव में वे तीनों मारी नहीं गईं। परन्तु मुझे यह मालूम नहीं है कि इस विषय में किस तरह की चालाकी खेली गई या मनोरमा ने जिन्हें मारा वे कौन थीं ॥

भीम०। तो यह निश्चय है कि वे तीनों मारी नहीं गईं !!

माया०। बेशक वे तीनों जीती हैं (गोपालसिंह वाली चीठी दिखा

कर) देखो एक ही सबूत में तुम्हारी दिलजमई कर देती हूं, इसे पढ़ो और माधवी रानी को भी सुनाओ (माधवी से) देखो बहिन तुम इस बात का खयाल न करना कि मैं तुम्हें "आप" कह कर सम्बोधन नहीं करती, मेरा तुम्हारा अब दोस्ती और मुहब्बत का नाता हो चुका है इसलिये अब इन बातों का खयाल नहीं हो सकता ॥

माधवी०। मैं भी यही पसन्द करती हूं और इस बारे में अपने लिये भी तुमसे पहिले ही माफी मांग लेती हूं ॥

भीमसेन ने पत्र पढ़ा और माधवी को सुनाया ॥

भीम०। इस पत्र से तो बड़ा काम निकल सकता है! यह कब का लिखा है और तुम्हारे हाथ क्योंकर लगा? तथा जिस अगूठी का इसमें जिक्र किया गया है वह कहां है?

माया०। (वह अँगूठी दिखा कर) अँगूठी भी मुझे मिल गई है और यह चीठी आज ही की लिखी और आज ही मेरे हाथ लगी है अभी इसकी कार्रवाई बिल्कुल बाकी है ॥

भीम०। अफसोस इतना ही है कि मेरे ऐयारों में से कोई भी रामदीन को नहीं जानता........

माया०। क्या हर्ज है, यह मेरी ऐयारा लीला बखूबी उसकी तरह बन कर काम निकाल सकती है, तुम्हारे ऐयार उसकी मदद में मुस्तैद रह सकते हैं और जब यह रामदीन की सूरत बनेगी तो इसे अच्छी तरह देख भी सकते हैं ॥

भीम०। (चीठी मायारानी के हाथ में देकर) अच्छा पहिले तुम दोनों को जो कुछ गुप्त बातें करनी हैं कर लो तो पीछे मैं इस विषय में कुछ कहूं सुनूंगा ॥

इतना कहकर भीमसेन उठ खड़ा हुआ और कुबेरसिंह को साथ लिये हुए कुछ दूर चला गया और मौका समझ कर लीला भी कुछ हट गई॥

माधवी० । हां बहिन ! कहो क्या कहती हो ?

माया० । जो कुछ तुम पीछे कहो सुनोगी उसे मैं पहिले ही निपटा देना चाहती हूं । सच पूछो तो मेरी और तुम्हारी अवस्था बराबर है तुम भी बिधवा हो और मैं भी बिधवा हूं क्योंकि मैं वास्तव में गोपालसिंह की स्त्री नहीं हूं और यह बात सभों को मालूम भी हो गई है तुम सुनही चुकी होगी ॥

माधवी० । हां मैं सुन चुकी हूं, मैंने यह भी सुना था कि "राजा गोपालसिंह को वर्षों तक तुमने कैद कर रक्खा था आखिर कमलिनी ने उसे छुड़ा दिया ।" तो तुमने ऐसा क्यों किया, उसे मार क्यों न डाला ?

माया० । यही मुझ से एक भूल हो गई, तिलिस्म के दो चार भेद जो मुझे मालूम न थे जानने के लिये मैंने ऐसा किया था, मुझे उम्मीद थी कि कैद की तकलीफ उठा कर वह बता देगा तब उसे मार डालूंगी मगर ऐसा न हुआ । अगर मैं उसे मार डालती तो आज यह दिन देखना नसीब न होता, मैं तिलिस्म की बदौलत अकेली ही राजा बीरेन्द्रसिंह ऐसे दस को जहन्नुम में पहुंचा देने की ताकत रखती थी । अब भी अगर गोपालसिंह को पकड़ पाऊं और मार सकूं तो पुनः तिलिस्म की रानी होने से मुझे कोई भी नहीं रोक सकता और फिर मैं बात की बात में तुम्हें राजगृही और गया की रानी बना दूं । हां उस बात का सिलसिला तो टूटा ही जाता है । तुम भी विधवा हो और मैं भी विधवा हूं, तुम भी नौजवान और आशिक मिजाज हो तथा मैं भी नौजवान और आशिक मिजाज हूं, तुम भी इन्द्रजीतसिंह के फेर में पड़ कर दुःख भोग रही हो और मैं भी आनन्दसिंह की मुहब्बत में इस दशा तक आ पहुंची हूं, अब भी मेरी और तुम्हारी किस्मतों का फैसला एक साथ और एक ही ठिकाने हो सकता है

क्योंकि इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह भी अजायबघर....... ही तिलिस्म तोड़ रहे हैं, अगर आज हम तुम एक हो कर काम करें तो बहुत जल्द दुश्मनों का नामोनिशान मिटा कर अपने अपने प्यारे के साथ दुनिया का सुख भोग सकती हैं मगर इस समय तुम्हारे साथ दो कंटक दिखाई देते हैं ॥

माधवी०। हां एक तो मेरा भाई भीमसेन, दूसरा मेरा सेनापति कुबेरसिंह मगर तुम इन दोनों का कुछ खयाल न करो, इस समय हमें उन दोनों को मिला जुला कर काम ले लेना चाहिये फिर तुम जैसा कहोगी वैसा किया जायगा ॥

माया०। शाबाश, शाबाश ! यही मालूम करने के लिये मैं तुमसे निराले में बातचीत किया चाहती थी। ये बातें ऐसी हैं कि सिवाय मेरे और तुम्हारे किसी तीसरे का न जानना ही अच्छा है ॥

माधवी०। निःसन्देह ऐसा ही है, हम दोनों के दिल की बातें हवा को भी न मालूम होनी चाहियें, आज बड़ी खुशी का दिन है कि हम दोनों जो एक ही तरह का दिल रखती हैं यहां पर आ मिली हैं। अब हम दोनों को हमेशे मेल मिलाप रखने और समय पड़ने पर एक दूसरे की मदद करने के लिये कसम खाकर मजबूत हो जाना चाहिये ॥

माया०। यही मैं भी चाहती हूं ॥

पाठक ! मायारानी और माधवी दोनों ही अपना मतलब देख रही हैं, दोनों ही धूर्त हैं, दोनों ही खुदगर्ज और दोनों ही विश्वासघातिनी हैं। इस समय कुछ देर तक दोनों में घुल घुल कर बातें होतीं रहीं, वादे भी हुए और कसमें भी खाई गईं और इसके बाद फिर भीमसेन और कुबेरसिंह बुलाये गये तथा लीला भी आ गई और आपुस में बातें होने लगीं ॥

भीम० । अच्छा तो अब क्या निश्चय किया जाता है ? राजा गोपालसिंह की चीठी लेकर जमानिया कौन जायगा और क्या होगा !

माया० । पहिले तुम अपनी राय दो ॥

भीम० । मेरी राय तो यह है कि लीला रामदीन की सूरत बन कर दीवान साहब के पास जाय और वहां से उनकी फरमाइश लेकर "पिपलिया घाटी" पहुंचे और हमलोग अपनी फ़ौज लेकर वहां मौजूद रहें, लीला को यह करना चाहिये कि उन दो सौ सवारों को जिन्हें जमानिया से अपने साथ लावेगी किसी बहाने से पीछे टिकवाये जिसमें गोपालसिंह के पहुंचते ही हमलोग बात की बात में उन सभों को गिरफ़ार करलें या मार डालें ॥

माया० । मगर यह बात मुझे नापसन्द है क्योंकि एक तो उनके लिखे अनुसार फ़ौज "पिपलिया घाटी" तक जरूर जायगी, अगर मान लिया जाय कि नकली रामदीन के हुक्म से फौज पीछे रह जाय और तुमलोग सभों को गिरफ़ार करलो तौभी हमारा काम न निकल सकेगा क्योंकि राजा गोपालसिंह के पकड़े या मारे जाने की खबर दीवान साहब को तुरत लग जायगी और वह अपनी फौज को दुरुस्त करके लड़ने के लिये तैयार हो जायगा और हम लोगों को जमानिया के अन्दर घुसने न देगा । कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह भी जमानिया ही में तिलिस्म के अन्दर हैं वे दोनों भी लड़ने भिड़ने को तैयार हो जायँगे उस समय हमलोग फिर लंडूरे ही रह जायंगे इतना बखेड़ा करने का कुछ फायदा न निकलेगा, न तो जमानिया की गद्दी मिलेगी और न गया का राज्य ॥

भीम० । तब आपही कहिये क्या करना चाहिये ?

माया० । (कुबेर से) इस वक्त आप के पास कितनी फौज है ?

कुबेर० । पांच सौ ॥

माया० । (माधवी से) ऐसा करना चाहिये कि हम, तुम, भीमसेन और कुबेरसिंह चारो आदमी जमानियां वाले तिलिस्मी बाग के अन्दर जा घुसें और इन पांच सौ आदमियों को इस तरह तिलिस्मी बाग के अन्दर लेलें और छिपा रक्खें कि किसी को कानों कान खबर भी न हो क्योंकि उस बाग में इतने आदमियों के छिपा रखने की जगह है और वह बाग भी इस लायक है कि अगर मैं उसके अन्दर मौजूद रहूं तो चाहे कैसाही जबरदस्त दुश्मन हो और चाहे कितनी ज्यादे फौज लेकर क्यों न चढ़ आवे मगर बाग के अन्दर किसी की नजर तक पहुंचने न दूं ॥

माधवी० । बेशक वह बाग ऐसा ही सुनने में आया है और तुम तो वहां की रानी ही ठहरीं और तुम्हें वहां के सब भेद मालूम ही हैं, अच्छा तब ?

माया० । जब किशोरी और कमलिनी इत्यादि को लेकर गोपालसिंह जमानियां जायगा तो निःसन्देह सभों को लिये हुए उसी बाग में पहुंचेगा तब उस समय हमलोग जो छिपे हुए रहेंगे निकल आवेंगे और बात की बात में सभों को मारलेंगे ऐसा होने से जमानियां में दखल भी बना रहेगा और इन्द्रजीतसिंह तथा आनन्दसिंह भी कब्जे में आ जायँगे ॥

माधवी० । (खुश होकर) बात तो बहुत ठीक है मगर हमलोग इतने आदमियों को लेकर चुपचाप उस बाग के अन्दर किस तरह पहुंच सकते हैं ॥

माया० । इसका बन्दोबस्त इस तरह हो सकता है कि हम, तुम भीमसेन और कुबेरसिंह एक साथ ही भेष बदल कर लीला के साथ जमानियां जायँ और लीला दीवान साहब से कहे कि "गोपालसिंह ने इन सभों को अर्थात् हम लोगों को खास बाग के अन्दर पहुंचा देने

का हुक्म दिया है ।" बस इतना कह कर हम लोगों को उस बाग के अन्दर पहुंचा दे क्योंकि दीवान इस नकली रामदीन की बात को अँगूठी की बरकत से टाल न सकेगा और रामदीन पहिले भी खास बाग के अन्दर आता जाता था यह बात दीवान जानता है । जब हम लोग उस बाग के अन्दर जा पहुंचेंगे तो एक गुप्त रास्ते से कुल फौज को बाग के अन्दर ले लेंगे । इन फौजी सिपाहियों को उस सुरङ्ग के मुहाने का पता बता दिया जायगा जिस सुरङ्ग की राह से हम इन सभों को खास बाग के अन्दर पहुंचावेंगे ॥

माधवी० । यह बात बहुत ही अच्छी सोची ॥

भीम०। इससे बढ़ कर और कोई तर्कीब फतह पाने के लिये हो ही नहीं सकती ॥

कुबेर०। और ऐसा करने में कोई टण्टा भी नहीं है ॥

लीला० । बस अब इसी राय को पक्की रखिये ॥

इसके बाद फिर उन सभों में बातचीत और राय होती रही यहां तक कि सवेरा होगया । मायारानी, माधवी, भीमसेन और कुबेरसिंह ने सूरत बदल ली, लीला भी रामदीन बन बैठी और भीमसेन के चारो ऐयारों को सुरङ्ग का पता ठिकाना अच्छी तरह बता दिया गया और कह दिया गया कि उसी ठिकाने सुरङ्ग के मुहाने पर फौजी सिपाहियों को लेकर इन्तजार करना । इसके बाद मायारानी, माधवी, भीमसेन, कुबेरसिंह और लीला ने घोड़े पर सवार होकर जमानियां का रास्ता लिया ॥



छठवां बयान ।

दिन दोपहर से कुछ ज्यादा ढल चुका था जब जमानियां में दीवान साहब को रामदीन के आने की इत्तला मिली। दीवान ने रामदीन को अपने पास बुलवाया और रामदीन ने उनके सामने पहुंच कर गोपालसिंह की चीठी उनके हाथ में दे दी और वे चीठी पढ़ चुके तो अँगूठी भी दिखाई। दीवान साहब ने नकली रामदीन से कहा, "महाराज का हुक्म हम लोगों के सर आंखों पर, तुम इस अंगूठी को पहिर लो और सभों को अपने हुक्म का पाबन्द समझो सवारी और सवारों का इन्तजाम दो घड़ी के अन्दर हो जायगा। तुम यहां रहोगे या सवारी के साथ जाओगे?"

रामदीन ने कहा, "हां मैं सवारी के साथ ही राजा साहब के पास जाऊंगा मगर इस समय चार आदमियों को खासबाग के अन्दर पहुंचा कर उनके खाने पीने का इन्तजाम कर देना है जैसा कि हमारे राजा साहब का हुक्म है॥

दीवान०। (ताज्जुब से) खासबाग के अन्दर !!

रामदीन०। जी हां॥

दीवान०। और वे चारो आदमी हैं कहां पर?

रामदीन०। उन्हें बाहर छोड़ आया हूं॥

दीवान०। (कुछ सोच कर) खैर जो राजा साहब ने हुक्म दिया हो या जो तुम्हारे जी में आवे करो अब हमलोगों को तो रोकने टोकने का अधिकार ही नहीं रहा॥

रामदीन सलाम करके उठ खड़ा हुआ और अपने चारो साथियों को ले कर तिलिस्मी खासबाग के अन्दर चला गया जहां इस समय बिलकुल ही सन्नाटा था। अंगूठी के खयाल से उसे किसी ने भी नहीं

रोका और मायारानी बेखटके अपने ठिकाने पहुंच गई तथा लुकने छिपने और दरवाजों को बन्द करने का उद्योग करने लगी ॥

अब हम रामदीन के साथ राजा गोपालसिंह की तरफ रवाना होते हैं और देखते हैं कि बनी बनाई बात क्योंकर चौपट होती है ॥

सन्ध्या होने के पहिले खाने पीने का सामान, चार रथ और दो सौ सवारों को ले कर नकली रामदीन पिपलिया घाटी की तरफ रवाना हुआ और दूसरे दिन दोपहर के बाद वहां पहुंचा ॥

आज ही सन्ध्या होने के पहिले राजा गोपालसिंह यहां पहुंचने वाले थे और यह बात रामदीन की जुबानी सभों को मालूम हो चुकी थी और सभी आदमी उनके आने का इन्तजार कर रहे थे ॥

सन्ध्या हो गई चिराग जल गया, पहर रात गई, दो पहर रात गुजरी, तमाम रात गई मगर राजा गोपालसिंह न आये इस लिये नकली रामदीन के ताज्जुब का तो कहना ही क्या उस के दिल में तरह तरह की बातें पैदा होने लगीं। उसके अतिरिक्त जितने फौजी सवार तथा और लोग साथ आये थे सभों को ताज्जुब हुआ और घड़ी घड़ी राजा साहब के न आने का सबब उससे पूछने लगे। रामदीन क्या जवाब देता? उसे इन बातों की खबर ही क्या थी?

दूसरे दिन सन्ध्या के समय राजा गोपालसिंह घोड़े पर सवार यहां आ पहुंचे मगर अकेले थे साईस तक साथ में न था। सिपाहियाना ठाठ से बेशकीमत कपड़ों के ऊपर तिलिस्मी कवच खञ्जर और ढाल तलवार लगाये बहुत ही सुन्दर तथा रोआबदार मालूम होते थे। सभों ने झुक झुक कर सलाम किया और नकली रामदीन ने आगे बढ़ कर घोड़े की अयाल थाम ली और उस की गर्दन पर दो चार थपकी देकर कहा, "आश्चर्य्य है कि आप के आने में पूरे आठ पहर की देर हो गई और फिर भी आप अकेले आये ॥"

यह सुनकर राजा साहब ने कई पल तक रामदीन का मुंह देखा और कहा, "हां, किशोरी, कामिनी और लक्ष्मीदेवी वगैरह ने हमारे साथ आने से इन्कार किया इसलिये हम अकेले आये हैं मगर फिर भी हमारे जाने में अभी रात भर की देर है, इस समय हम किसी काम को जाते हैं सवेरे यहां आवेंगे तबतक तुम सभों को इस घाटी में टिके रहना होगा ॥

राम० । घोड़ों का दाना तो सिर्फ एक ही दिन का साथ आया था और सवार लोग भी.........

गोपा० । खैर क्या हर्ज है घोड़े चराई पर गुजारा कर लेंगे और सवार लोग रात भर फाका करेंगे ॥

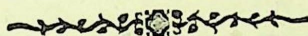
इतना कह कर राजा गोपालसिंह ने घोड़े की बाग मोड़ी और जिधर से आये थे उसी तरफ तेजी के साथ रवाना हो गये । रामदीन चुपचाप ज्यों का त्यों खड़ा उनकी तरफ देखता ही रह गया और जब वे नजरों की ओट होगये तब नकली रामदीन ने सभों को राजा साहब का हुक्म सुनाया और इसके बाद अपने बिछावन पर जा कर सोचने लगाः—

"गोपालसिंह की बात कुछ समझ में नहीं आती और न उनके इरादे का पता लगता है, लक्ष्मीदेवी और कमलिनी वगैरह को न मालूम क्यों छोड़ आये ! और जब उन्होंने इनके साथ जाने से इन्कार किया तो इन्होंने मान क्यों लिया ! क्या अब लक्ष्मीदेवी का और इन का साथ न होगा ? अगर ये अकेले जमानियां गये तो केवल इन्हीं के साथ वह सलूक किया जायगा जो हम लोग सोच चुके हैं, कमलिनी वगैरह का बचे रह जाना अच्छा नहीं हुआ मगर किया क्या जाय लाचारी है, हां एक बात का इन्तजाम तो कुछ किया ही नहीं गया और न पहिले इस बात का विचार ही हुआ ! जमानियां पहुं-

चने पर जब दीवान साहब की ज़ुबानी गोपालसिंह को यह मालूम होगा कि रामदीन ने चार आदमियों को खासबाग के अन्दर पहुंचाया है तब वह क्या सोचेगा और पूछने पर मुझसे क्या जवाब पावेगा ? कुछ भी नहीं, इस बात का जवाब देना मेरे लिये कठिन होगा ! तब क्या किया जाय क्या खासबाग में पहुंचने के पहिले ही मेरा भाग जाना उचित होगा ? ओफ !! बड़ी भूल हो गई यह बात पहिले न सोच ली, दीवान साहब को बिना कुछ कहे ही उन सभों को खासबाग में पहुंचा देना मुनासिब होता। मगर ऐसा करने पर भी तो काम नहीं चलता, अगर दीवान साहब को नहीं तो खासबाग के पहरेदारों को मालूम होता कि रामदीन चार आदमियों को बाग के अन्दर छोड़ गया है, उन्हीं की ज़ुबानी राजा साहब को मालूम हो जाता। बात एक ही है, सबसे अच्छा तो तब होता जब वे लोग किसी गुप्त राह से बाग के अन्दर जाते मगर असम्भव था क्योंकि भीतर से सभी रास्ते गोपालसिंह ने बन्द किये होंगे। तब क्या करना चाहिये ? हां भाग ही जाना सबसे अच्छा होगा। मगर मायारानी को भी तो इस बात की खबर कर देनी चाहिये। अच्छा तो जमानियां हो कर और मायारानी को कह सुन कर भागना चाहिये। नहीं अब तो यह भी नहीं हो सकता क्योंकि मायारानी फौजी सिपाहियों को बाग के अन्दर कर के साथियों सहित कहीं छिप गई होगी मैं उस बाग के गुप्त भेदों को न जानने के कारण इस लायक नहीं हूं कि मायारानी को खोज निकालूं और अपने दिल का हाल उस से कहूं या उसी के साथ आप भी छिप रहूं। ओफ ! वह तो मजे में अपने ठिकाने पहुंच गई मगर मुझे आफत में डाल गई। खैर अभी तो नहीं मगर गोपालसिंह को जमानियां की हद्द में पहुंचा कर जरूर भाग जाना पड़ेगा फिर जब मायारानी उसे मार कर अपना दखल जमा

लेगी तब फिर उससे मुलाकात हो रहेगी ॥

इन्हीं विचारों में लीला (नकली रामदीन) ने तमाम रात आंखों में बिता दी और सवेरा होने के पहिले ही जरूरी कामों से छुट्टी पाने के लिये घोड़े पर सवार होकर दूर चली गई और घण्टे भर के बाद लौट आई ॥



सातवां बयान।

दिन अनुमान दो घड़ी के चढ़ चुका होगा जब राजा गोपालसिंह दो आदमियों को साथ लिये हुए धीरे २ आते दिखाई पड़े, वे दोनों भैरोसिंह और इन्द्रदेव थे और पैदल थे। जब वे तीनों उस ठिकाने पहुंच गये जहां राजा साहब के रथ और सवार लोग थे तब राजा साहब ने अपना घोड़ा छोड़ दिया और उस पर भैरोसिंह को सवार होने के लिये कहा तथा और सवारों को भी तैयार हो जाने के लिये इशारा किया। इसके बाद स्वयम् एक रथ पर सवार हो गये और इन्द्रदेव को भी उसी पर अपने पास बैठा लिया बाकी के तीन रथ खाली ही रह गये। सवारी धीरे धीरे जमानियां की तरफ रवाना हुई और फौजी सवार सब खूबसूरती के साथ राजा साहब को घेरे हुए धीरे धीरे जैसा कि रथ जा रहा था जाने लगे। भैरोसिंह अपना घोड़ा बढ़ा कर नकली रामदीन के पास चला गया जो उसी पचकल्यान घोड़ी पर सवार था और उसके साथ साथ जाने लगा, यह बात लीला को बहुत बुरी मालूम हुई क्योंकि वह राजा बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों से बहुत डरती थी। थोड़ी देर तक चुप रहने बाद बोलीः—

लीला०। (भैरो से) आपने राजा साहब का साथ क्यों छोड़ दिया?

भैरो०। (हँस कर) तुम्हारा साथ करने के लिये, क्योंकि मैं अपने दोस्त रामदीन को अकेला नहीं छोड़ सकता॥

लीला०। और जब मुझे राजा साहब ने अकेले जमानियां भेजा था तब आप कहां डूब गये थे?

भैरो०। तब भी मैं तुम्हारे साथ था मगर तुम्हारी नजरों से छिपा हुआ था॥

लीला०। (डर कर मगर अपने को सम्हाल कर) परसों तुम कहां थे? कल कहां थे और आज सवेरा होने के पहिले तक कहां गायब थे? क्यों झूठो बातें बना रहे हैा!!

भैरो०। मैं परसों भी, कल भी और आज रात भर भी तुम्हारे साथ था मगर तुम्हारी नज़रों से छिपा हुआ था, हां जब दो घण्टे रात बाकी थी तब मैंने तुम्हारा साथ छोड़ दिया और राजा साहब से जा मिला, अब मैं फिर तुम्हारे साथ २ जा रहा हूं क्योंकि राजा साहब का ऐसा ही हुक्म है (हँस कर) और राजा साहब ने सुना है कि तुम्हारा इरादा जमानिया पहुंचने के पहिलेही भाग जाने का है॥

लीला०। (अपने उछलते कलेजे को रोक कर) यह उन्हें किसने कहा?

भैरो०। मैंने॥

लीला०। और तुम्हें किसने खबर दी?

भैरो०। तुम्हारे दिल ने॥

लीला०। मानो मेरे दिल के आप भेदिया ठहरे॥

भैरो०। बेशक ऐसा ही है, अगर तुम्हें ऐयारी का ढङ्ग पूरा पूरा मालूम होता तब तुम्हारा दिल मजबूत होता मगर तुम्हारी ऐयारी बिल्कुल कच्ची है। आहा! एक बात तुमसे कहना तो मैं भूल ही

गया ! जिस रात मायारानी राजा बीरेन्द्रसिंह के लश्कर से भाग गई थी उसी रात सवेरा होने के पहिले ही यह खबर राजा गोपालसिंह को मालूम हो गई ॥

लीला०। (कांपती हुई और लड़खड़ाई आवाज से) यह तो मुझे भी मालूम है मगर तुम्हारे इस कहने का मतलब क्या है सो समझ में नहीं आता ?

भैरो०। मतलब यही है कि तुम अपनी सूरत साफ करो और मेरे साथ राजा साहब के पास चलो क्योंकि अब असली रामदीन के सामने तुम्हारा रामदीन बने रहना मुनासिब नहीं है ॥

लीला०। असली रामदीन अब कहां......

लीला कहने को तो इतना कह गई मगर फिर उसने जुबान बन्द कर ली, भैरोसिंह की चलती फिरती बातों ने उसका कलेजा हिला दिया और वह समझ गई कि अब मेरा नसीबा मुझे धोखा दिया चाहता है, मेरा भेद खुल गया और अब मेरे कैद होने में ज्यादे देर नहीं है। अब उसके दिल ने भी कहा कि वास्तव में कल ही राजा साहब को तुझ पर शक होगया था अगर तू कलही भाग जाती तो अच्छा था मगर अब तेरा भागना भी कठिन है। लीला ने और कुछ सोच बिचार के भैरोसिंह से कहा, " तुम जरा निराले में चल कर मेरी एक बात सुन लो, बेहतर होगा हम दोनों आदमी घोड़ा बढ़ा कर आगे निकल चलें, मैं जो कुछ बात कहा चाहता हूं उसे सुन कर तुम बहुत खुश होओगे ॥"

भैरो०। न तो मैं तुम्हारी कुछ सुन सकता हूं और न तुम्हें छोड़ सकता हूं। हां एक बात तुम्हें और भी कह देता हूं जिसे सुन कर तुम्हारे दिल का खुटका निकल जायगा और तुम्हें तुम्हारे पहिचाने जाने का कारण भी मालूम हो जायगा, वह यह है कि जब राजा साहब

ने दीवान साहब के नाम की चीठी देकर असली रामदीन को जमानियां भेजा था तो ज़ुबानी कह दिया था कि "इस चीठी में हमने दो सौ सवार भेजने के लिये लिखा है मगर तुम केवल बीस सवार अपने साथ लाना और जिस दिन हमने मांगा है उसके एक दिन बाद लाना।" कहो अब तो बहुत सी बातें तुम्हारी समझ में आ गई होंगी !!

इतना कह भैरोसिंह ने लीला का हाथ पकड़ लिया और राजा साहब की तरफ चलने के लिये कहा मगर लीला को उधर जाना मञ्जूर न था इसलिये उसने अपनी घोड़ी को न रोका और झटका दे कर अपना हाथ छुड़ाना चाहा मगर ऐसा न कर सकी, भैरोसिंह ने उसे खैंच कर जमीन पर गिरा दिया और आप भी घोड़े से नीचे कूद कर दाहिना पैर उसकी छाती पर रख दिया, उस समय भैरोसिंह को मालूम हुआ कि यह मर्द नहीं औरत है ॥

भैरोसिंह की यह कार्रवाई देख कर सभों के कान खड़े हो गये, सवारों ने घोड़े रोक दिये, राजा साहब की सवारी (रथ) खड़ी हो गई और कई सवार अपने अपने घोड़े पर से कूद कर भैरोसिंह के पास चले गये और इन्द्रदेव भी रथ पर से उतर कर उनके पास जा पहुंचे। आज्ञानुसार लीला की मुश्कें बांध ली गईं और पानी मँगा कर उसका चेहरा साफ किया गया और तब लीला को सभों ने पहिचान लिया। लीला राजा गोपालसिंह के पास लाई गई और भैरोसिंह ने सब हाल कहा जिसे सुन राजा साहब हँस पड़े और बोले, "अब इन्द्रदेव जैसा कहें वैसा करो ॥"

इन्द्रदेव की आज्ञानुसार लीला रस्सियों से जकड़ कर एक खाली रथ पर बैठा दी गई और कई सवार उसकी निगरानी पर मुस्तैद किये गये ॥

अब सवारी तेजी के साथ जमानियां की तरफ रवाना हुई। दोपहर के बाद जब सवारी जमानियां के पास पहुंची तब इन्द्रदेव ने राजा साहब से धीरे धीरे कुछ कहा और रथ से उतर कर पैदल मैदान का रास्ता लिया और देखते देखते न मालूम कहां चले गये। सवारी खास बाग के दर्वाजे पर पहुंची और राजा साहब रथ से उतर कर भैरोसिंह को साथ लिये बाग के अन्दर चले गये ॥

आठवां बयान।

कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह तिलिस्म तोड़ने की धुन में लगे हुए थे मगर उनके दिल से किशोरी, कमलिनी और कामिनी तथा लाडिली की मुहब्बत एक सायत के लिये भी बाहर नहीं होती थी। जब दोनों कुमारों ने बाग के उत्तर तरफ वाले मकान की खिड़की (छोटे दर्वाजे) में से झांकते हुए राजा गोपालसिंह की जुबानी किशोरी, कमलिनी, कामिनी और लाडिली का सब हाल सुना और यह भी सुना कि अब वे सब बहुत जल्द जमानियां में लाई जावेंगी, तब बहुत खुश हुए और उन लोगों से जल्द मिलने के लिये तिलिस्म तोड़ने की फिक्र बहुत ज्यादे हो गई। जब गोपालसिंह, इन्दिरा और इन्द्रदेव बातचीत करके चले गये तब बड़े कुमार ने सर्यू से कहा, "सर्यू! हम लोग बहुत जल्द तुम्हें अपने साथ लिये हुए इस तिलिस्म के बाहर होंगे। हमलोगों को तिलिस्म तोड़ने और दौलत पाने का इतना खयाल नहीं है जितना तिलिस्म से बाहर निकलने का ध्यान है। हां इस तिलिस्म से हम लोगों को एक किताब मिलने वाली है जिसके लिये हम लोग जरूर उद्योग करेंगे क्योंकि उसी किताब की बदौलत हम लोग चुनारगढ़ का वह भारी तिलिस्म तोड़ सकेंगे जिसे हमारे पिता

ने हमारे लिये छोड़ रक्खा है और जिसका तोड़ना हम दोनों भाइयों को आवश्यक कहा जाता है ॥

सर्यू० । मेरे दिल ने उम्मीदों से भर कर उसी समय विश्वास दिला दिया कि 'अब तेरा दुरदैव सदैव के लिये तेरा पीछा छोड़ देगा ।' जब आप दोनों भाइयों के दर्शन हुए या आप लोगों का परिचय मिला । अब मैं अपना दुःख भूल कर बिलकुल बेफिक्र हो रही हूं और सिवाय आपकी आज्ञा मानने के कोई दूसरा खयाल मेरे दिल में नहीं है ॥

इन्द्रजीत० । अच्छा तो अब तुम हम लोगों के लिये कुछ फल तोड़ो तब तक हम लोग इस बाग में घूम कर कोई दर्वाजा ढूंढते हैं, ताज्जुब नहीं कि हम लोगों को इस बाग में कई दिन तक रहना पड़े ॥

सर्यू० । जो आज्ञा ॥

इतना कह कर सर्यू फल तोड़ने और नहर के किनारे छाया देख कर कुछ जमीन साफ करने के खयाल में पड़ी और दोनों कुमार बाग में इधर उधर घूम कर दर्वाजा खोजने का उद्योग करने लगे ॥

पहर भर से ज्यादे देर घूमने और पता लगाने के बाद जब कुमार उत्तर तरफ वाली दीवार के नीचे पहुंचे जिधर मकान था तब उन्हें पूरब तरफ के कोने की तरफ हट कर जमीन में एक हौज का निशान मालूम हुआ और उसी के पास दीवार में एक छोटे से दर्वाजे का चिन्ह भी देखा, निश्चय हो गया कि हम लोगों का काम इन्हीं दोनों निशानों से चलेगा । इतना सोच कर वे दोनों भाई वहां चले आये जहां सर्यू फल तोड़ कर और जमीन साफ करके बैठी हुई दोनों भाइयों के आने का इन्तजार कर रही थी । सर्यू ने अच्छे अच्छे और पके हुए फल दोनों भाइयों के लिये तोड़े थे और जल से धोकर साफ पत्थर की चट्टान पर रक्खे थे । दोनों भाइयों ने उसे खा कर नहर का जल पीया और इसके बाद सर्यू को भी खाने के लिये कह के उसी ठिकाने

चले गये जहां हौज और दर्वाजे का निशान पाये थे। हौज में मिट्टी भरी हुई थी जिसे दोनों भाइयों ने खञ्जर से खोद खोद के निकालना शुरू किया और थोड़ी देर में सर्यू भी उनके पास पहुंच कर मिट्टी फेंकने में मदद करने लगी। सन्ध्या हो जाने पर इन सभों ने उस काम से हाथ खैंचा और नहर के किनारे जाकर आराम किया। उस हौज की सफाई में इन लोगों को चार दिन लग गये, पांचवें दिन दोपहर होते होते तक वह हौज साफ हुआ और मालूम होने लगा कि यह वास्तव में एक फौवारा है। वह हौज सङ्गमर्मर का बना हुआ था और फौवारा सोने का। अब दोनों कुमारों ने खञ्जर के सहारे उस हौज की जमीन का पत्थर उखाड़ना शुरू किया और जब दो तीन दिन की मेहनत में सब पत्थर उखड़ गये तब वह फौव्वारा भी सहजही में निकल गया और उसके नीचे दर्वाजे का निशान दिखाई दिया। दर्वाजे में पल्ला हटाने के लिये कड़ी लगी हुई थी और जिस जगह ताला जड़ा हुआ था उसके मुंह पर लोहे की एक पतली चादर रक्खी हुई थी जिसे कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने हटा दिया और उसी तिलिस्मी ताली से ताला खोला जो पुतली के हाथ में से उन्हें मिली थी॥

दर्वाजा हटाने पर नीचे उतरने के लिये सीढ़ियां दिखाई पड़ीं, आनन्दसिंह तिलिस्मी खञ्जर हाथ में लेकर रोशनी करते हुए नीचे उतरे और उनके पीछे पीछे इन्द्रजीतसिंह और सर्यू भी गई। नीचे पहुंचने पर उन्होंने अपने को एक छोटीसी कोठरी में पाया जिसके बीचोबीच में एक हौज बना हुआ था, उस हौज की चारों तरफ वाली दीवार कई तरह के धातुओं से बनी हुई थी और हौज के बीच में किसी तरह की राख भरी हुई थी। कोठरी की चारो तरफ की दीवारों में से तांबे की बहुतसी तारें आई हुई थीं और वे सब एक साथ होकर

उसी हौज के बीच में चली गई थीं । इन्द्रजीतसिंह ने सर्यू से कहा, "जब ये सब तारें काट दी जायँगी तब बाग के चारों तरफ की दीवार करामात से खाली हो जायगी अर्थात् उसमें वह गुन न रहेगा कि उसके छूने से किसी को किसी तरह की तकलीफ हो । बाद इसके हम लोग उस दीवार वाले दर्वाजे के निशान को साफ करके रास्ता निकालेंगे और इस बाग से निकल कर किसी दूसरी ही जगह जायँगे अस्तु तुम यहां से निकल कर ऊपर चली आओ तब हम लोग तार काटने में हाथ लगावें ॥

इन्द्रजीतसिंह की आज्ञानुसार सर्यू कोठरी से बाहर निकल गई और दोनों कुमारों ने तिलिस्मी खञ्जर से शीघ्रही उन तारों को काट डाला और बाहर निकल आये । वह दर्वाजा पहिले की तरह बन्द कर दिया और ऊपर से मिट्टी डाल दी और फिर नहर के किनारे आकर तीनों आदमी बैठ गये और बात चीत करने लगे ॥

सर्यू० । अब दीवार छूने में किसी तरह की तकलीफ नहीं हो सकती ?

इन्द्र० । अभी नहीं, धीरे धीरे दो पहर में उसका गुन जायगा और तब तक हम लोगों को व्यर्थ बैठे रहना पड़ेगा ॥

आनन्द० । तब तक (सर्यू की तरफ बता कर) इनका बचा हुआ किस्सा सुन लिया जाता तो अच्छा होता ॥

इन्द्र० । नहीं, अब इनका किस्सा पिता जी के सामने ही सुनेंगे ॥

सर्यू० । अब तो मैं आपके साथ ही रहूंगी इस लिये तिलिस्म तोड़ती समय जो कुछ आप कार्रवाई करेंगे या जो तमाशा दिखाई देगा देखूंगी तो यदि आप आज के पहिले का हाल, जब से आप इस तिलिस्म में आये हैं सुना देते तो बड़ी कृपा होती मैं भी समझती कि आप की बदौलत इस तिलिस्म का पूरा पूरा तमाशा देख लिया ॥

इन्द्र०। (आनन्द से) अच्छी बात है तुम इस तिलिस्म का हाल इन्हें सुना दो॥

थोड़ी देर आराम करने तथा जरूरी कामों से छुट्टी पाने बाद भाई की आज्ञानुसार आनन्दसिंह ने अपना और तिलिस्म का हाल तथा जिस ढङ्ग से इन्दिरा की मुलाकात हुई थी वह सब सर्यू को कह सुनाया इसके साथ ही तिलिस्म के बाहर आजकल का जैसा जमाना हो रहा था वह सब भी बयान किया। यह सब हाल कहते सुनते रात आधी से कुछ ज्यादे चली गई और उस समय उन लोगों ने एक विचित्र तमाशा देखा॥

इस बाग के उत्तर तरफ सटा हुआ जो मकान था जिसमें से राजा गोपालसिंह और कुमार में बात चीत हुई थी, हम पहिले लिख आये हैं कि "उसमें बाग की तरफ सात खिड़कियां थीं।" इस समय यकायक आवाज आने से दोनों कुमार और सर्यू की निगाह उस तरफ चली गई, देखा कि बीच वाली बड़ी खिड़की (दर्वाजा) खुली है और उसके अन्दर रोशनी मालूम होती है, इन लोगों को ताज्जुब मालूम हुआ और सोचा कि शायद राजा गोपालसिंह आये हैं और हम लोगों से बात चीत करने का इरादा है, मगर ऐसा न था, थोड़ी देर बाद उसके अन्दर दो तीन नकाबपोश चलते फिरते दिखाई दिये और इसके बाद एक नकाबपोश खिड़की में कमन्द अड़ा कर नीचे उतरने लगा। पहिले तो दोनों कुमार और सर्यू को गुमान हुआ था कि राजा गोपालसिंह या इन्द्रदेव दिखाई देंगे या होंगे मगर जब एक नकाबपोश कमन्द के सहारे नीचे उतरने लगा तब उनका खयाल बदल गया और सोचने लगे कि "यह काम इन्द्रदेव या गोपालसिंह का नहीं है बल्कि ऐसे आदमी का है जो इस तिलिस्म के हाल को नहीं जानता। राजा गोपालसिंह और इन्द्रदेव तथा इन्दिरा को भी

मालूम है कि इस बाग की दीवार छूने या बदन के साथ लगने लायक नहीं है तभी तो इन्दिरा अपनी मां के पास नहीं पहुंच सकी और सर्यू ने भी यह बात इन्दिरा से कही होगी॥

इन्द्रजीत ने इसी समय सर्यू से पूछा कि इस बाग की दीवार का हाल इन्दिरा को मालूम है? इसके जवाब में सर्यू ने कहा कि "जरूर मालूम है मैंने खुद इन्दिरा से कहा था और इसी सबब से वह मेरे पास आज तक न आ सकी, निःसन्देह इन्दिरा ने यह बात राजा गोपालसिंह से कही होगी बल्कि वह खुद जानते होंगे, इसी से मैं सोचती हूं कि ये लोग कोई दूसरे ही हैं जो इस भेद को नहीं जानते मगर अब तो इस दीवार का वह गुन जाता ही रहा॥"

तीनों को ताज्जुब हुआ और तीनों आदमी टकटकी लगा कर उस तरफ देखने लगे। जब वह नकाबपोश कमन्द के सहारे नीचे उतर आया तब दूसरे नकाबपोश ने वह कमन्द ऊपर खैंच ली और उसी कमन्द में एक गठड़ी बांध कर नीचे लटकाई। दोनों कुमार और सर्यू को विश्वास हो गया कि इस गठड़ी में कोई आदमी जरूर है॥

जो नकाबपोश नीचे आ चुका था उसने गठड़ी थाम ली और खोल कर कमन्द खाली कर दी मगर जिस कम्बल में वह गठड़ी बंधी हुई थी उसे उसी कमन्द के साथ बांध दिया और ऊपर वाले नकाबपोश ने खैंच लिया। थोड़ी देर बाद दूसरी गठड़ी लटकाई गई और नीचे वाले नकाबपोश ने पहिले की तरह उसे भी थाम लिया और खोल कर खाली कम्बल कमन्द के साथ बांध दिया॥

इसी तरह बारी बारी से सात गठड़ियां नीचे उतारी गईं और इसके बाद वह नकाबपोश जो सब के पहिले नीचे उतरा था उसी कमन्द के सहारे ऊपर चढ़ गया और खिड़की बन्द हो गई॥

नौवां बयान ।

जिस समय राजा गोपालसिंह खास बाग के दर्वाजे पर पहुंचे थे उस समय उनके दीवान साहब भी वहां हाजिर थे, नकली रामदीन अर्थात् लीला उनके हवाले कर दी गई थी और भैरोसिंह के सवाल करने पर उन्होंने कहा था कि "इस लीला ने चार आदमियों को खास बाग के अन्दर पहुंचाया है, हम नहीं कह सकते कि वास्तव में वे कौन थे !" अस्तु राजा साहब और भैरोसिंह को यह तो मालूम हो गया था कि चार आदमी भी इस बाग के अन्दर घुसे हैं जो हमारे दुश्मन होंगे, मगर उन्हें उन पांच सौ फौजी सिपाहियों की शायद ह खबर हो जिन्हें मायारानी ने गुप्त रीति से बाग के अन्दर कर लिया था। पहिले दफे जब मायारानी को गोपालसिंह ने छकाया था तब वह खुले तौर पर बाग में रहती थी और अब की दफे तो वह उस भूलभुलैयें बाग में जाकर ऐसी गायब हुई है कि उसका पता लगना कठिन हो गया। दीवान साहब ने राजा साहब से पूछा भी था कि अगर हुक्म हो तो बाग में तलाशी ली जाय और उन आदमियों का पता लगाया जाय जिन्हें लीला ने इस बाग में पहुंचाया है।" मगर राजा साहब ने उसके जवाब में सिर हिला कर जाहिर कर दिया था कि यह बात उन्हें स्वीकार नहीं है ॥

कुछ दिन रहते ही गोपालसिंह बाग के दूसरे दर्जे में केवल भैरोसिंह को साथ लेकर गये और बाग के अन्दर चारो तरफ सन्नाटा पाया। इस समय भैरोसिंह और गोपालसिंह दोनों ही के हाथ में तिलिस्मी खञ्जर मौजूद था ॥

खास बाग के दूसरे दर्जे में दो कूएँ थे जिनमें पानी बहुत ज्यादे रहता था यहां तक कि इस बाग के पेड़ पत्तों को सींचने और छिड़-

काव करने का काम इन दोनों में से किसी एक कूँएँ ही से चल सकता था मगर सींचने के समय दूर और नजदीक का ख्याल करके या और किसी सबब से बनवाने वाले ने दो बड़े २ जङ्गी कूएँ बनवाये थे परन्तु ये दोनों कूँएँ भी कारीगरी और ऐयारी से खाली न थे ॥

भैरोसिंह और गोपालसिंह छिपते और घूमते हुए पूरब तरफ वाले कूँएँ पर पहुंचे जिसका घेरा बहुत बड़ा था और नीचे उतरने तथा चढ़ने के लिये कूँएँ की दीवार में लोहे की कड़ियां लगी हुई थीं। भैरोसिंह और गोपालसिंह दोनों आदमी कड़ियों के सहारे उस कूएँ में उतर गये ॥

किसी ठिकाने छिपी हुई मायारानी इस तमाशे को देख रही थी, गोपालसिंह और भैरोसिंह को आते देख वह बहुत खुश हुई और उसे निश्चय हो गया कि अब हम लोग गोपालसिंह को मार लेंगे। जिस जगह वह बैठी हुई थी वहां पर माधवी, भीमसेन, कुबेरसिंह और ऐयारों के अतिरिक्त बीस आदमी फौजी सिपाहियों में से भी मौजूद थे और बाकी के फौजी सिपाही तहखाने में छिपाये हुए थे। पहिले तो मायारानी ने चाहा कि केवल हम ही लोग बीस सिपाहियों के साथ जाकर गोपालसिंह को गिरफ्तार करलें मगर जब उसे कृष्णा जिन्न वाली बात याद आई और यह खयाल हुआ कि गोपालसिंह के पास तिलिस्मी खञ्जर और कवच जरूर होगा जो कि रोहतासगढ़ में उसके पास उस समय मौजूद था जब शेरअली और दारोगा के साथ हम लोग वहां गये हुए थे, तब उसकी हिम्मत टूट गई और बिना कुल फौजी सिपाहियों को साथ लिये गोपालसिंह के पास जाना उचित न जाना। इसी बीच में उसके देखते देखते गोपालसिंह कूँएँ के अन्दर चले गये ॥

इस तिलिस्मी बाग के अन्दर आने तथा यहां से बाहर जाने वाला

दर्वाजा जिस तरह बन्द होता है इसका हाल उस समय लिखा जा चुका है जब पहिली दफ़े इस बाग में मायारानी के ऊपर आफत आई थी और मायारानी ने सिपाहियों के बागी हो जाने पर बाहर जाने का रास्ता बन्द कर दिया था। अस्तु इस समय भी उसी ढङ्ग से मायारानी ने बाग का दर्वाजा बन्द कर दिया और इसके बाद कुल सिपाहियों को तहखानों में से निकाल कर माधवी, भीमसेन और कुबेरसिंह तथा ऐयारों को साथ लिये हुए उस कूएं पर पहुंची जिसके अन्दर भैरोसिंह को साथ लिये हुए राजा गोपालसिंह उतर गये थे॥

यहां पर मायारानी ने सोचा था कि "आखिर गोपालसिंह इस कूएं के बाहर निकलेंगे उस समय हमलोग उन्हें सहज ही में मार लेंगे बल्कि उन्हें कूएँ से बाहर निकलने की मोहलत ही न देंगे इत्यादि।" मगर जब बहुत देर हो गई और रात हो जाने पर भी गोपालसिंह कूएँ के बाहर न निकले ता उसे बड़ा ही ताज्जुब हुआ और वह खुद कूएँ के अन्दर झांक कर देखने लगी और चौंक कर माधवी से बोली:—

माया०। क्यों बहिन! आज ही तुमने भी देखा था कि इस कूएँ में पानी कितना ज्यादे था?

माधवी०। बेशक मैंने देखा था कि बोस हाथ से ज्यादे दूरी पर पानी नहीं है, ता क्या इस समय पानी कम जान पड़ता है?

माया०। कम क्या मैं समझती हूं इस समय इसमें कुछ भी पानी नहीं है और कूआं सूखा पड़ा है॥

माधवी०। (ताज्जुब से) सो नहीं हो सकता! एक पत्थर इसमें फेंक कर देखो॥

माया०। आओ तुम ही देखो॥

माधवी अपने हाथ में ईंट का एक टुकड़ा ले कर कूएँ के ऊपर

गई और झांक कर देखने बाद ईंट का टुकड़ा कूएँ के अन्दर फेंका और उसकी आवाज़ पर गौर करके बोली:—

माधवी०। बेशक इसमें पानी कुछ भी नहीं है केवल कीचड़ मात्र है क्या तुम नहीं जानतीं कि इसके अन्दर पानी के निकास का कोई रास्ता तथा आदमियों के आने जाने के लिये कोई सुरङ्ग वा दर्वाजा है या नहीं ?

माया०। मुझे एक दफे गोपालसिंह ने कहा था कि इस कूएँ के नीचे एक तहखाना है जिसमें २ तरह के तिलिस्मी हर्बे और ऐयारी के काम की अपूर्व चीजें हैं ॥

माधवी०। बेशक यही बात ठीक होगी और उन्हीं चीजों में से कुछ लाने के लिये गोपालसिंह गये होंगे ॥

माया०। शायद ऐसा ही हो !!

माधवी०। तो बस इससे बढ़ कर और कोई तर्कीब नहीं हो सकती कि यह कूआं पाट दिया जाय जिसमें गोपालसिंह को फिर दुनिया का मुंह देखना नसीब न हो ॥

माया०। निःसन्देह यह बहुत अच्छी राय है अस्तु जहां तक हो सके इसे कर हो डालना चाहिये ॥

इस समय कुबेरसिंह की फौज टिड्डियों की तरह बाग में फैली हुई हुक्म का इन्तजार कर रही थी। माधवी ने अपनी राय भीमसेन और कुबेरसिंह से कही और उनकी आज्ञानुसार फौजी आदमियों ने जमीन खोद कर मिट्टी निकालने और कूआं पाटने में हाथ लगा दिया ॥

पहर रात जाते जाते तक कूआं बखूबी पट गया और उस समय मायारानी के दिल में यह बात पैदा हुई कि "अब मुझे गोपालसिंह का कुछ भी डर न रहा ॥"

फौजी सिपाहियों को खुले मैदान बाग में पड़े रहने की आज्ञा दे

कर भीमसेन, कुबेरसिंह और माधवी तथा ऐयारों को साथ लिये मायारानी अपने उस खास कमरे की छत पर बेफिक्री और खुशी के साथ चली गई जिसमें आज के कुछ दिन पहिले मालिकाना ढङ्ग पर रहती थी ॥

दसवां बयान।

रात अनुमान दोपहर के जा चुकी है। खास बाग के दूसरे दर्जे में दीवानखाने की छत पर कुबेरसिंह, भीमसेन और उसके चारों ऐयार तथा माधवी के साथ बैठी हुई मायारानी बड़ी प्रसन्नता से बातें कर रही है, चांदनी खूब छिटकी हुई है और बाग की हर एक चीजें जहां तक निगाह बिना ठोकर खाये जा सकती थी साफ दिखाई दे रही हैं। बातचीत का विषय अब यह था कि "राजा गोपालसिंह से तो छुट्टी मिल ही गई अस्तु राज्य तथा राजकर्मचारियों के लिये क्या प्रबन्ध करना चाहिये ॥"

जिस छत पर यह लोग बैठे हुए थे उसके दाहिनी तरफ वाली पट्टी में एक सुन्दर इमारत और उसके पीछे ऊँची दीवार थी। उस दीवार के बाद तिलिस्मी बाग का तीसरा दरजा पड़ता था। इस समय मायारानी का मुंह ठीक उसी इमारत और दीवार की तरफ था और उस तरफ की चांदनी दरवाजों और कमरों के अन्दर घुस कर बड़ी बहार दिखा रही थी। बात करते करते मायारानी चौंकी और उस तरफ हाथ का इशारा करके बोली, "हैं! इस छत पर कौन जा पहुंचा है?"

माधवी०। हां एक आदमी हाथ में नङ्गी तलवार लिये टहल रहा है ॥

भीम०। चेहरे पर नकाब डाले हुए हैं॥

कुबेर०। हमारे फौजी सिपाहियों में से शायद कोई ऊपर चला गया होगा मगर उन्हें बिना हुक्म ऐसा करना तो न चाहिये॥

माया०। नहीं नहीं, उस मकान में सिवाय मेरे और कोई नहीं जा सकता॥

माधवी०। तो फिर वह गया कौन?

माया०। यही तो ताज्जुब है! देखिये एक और भी आ पहुंचा! यह तीसरा भी आया! मामला क्या है?

अजायब०। कहीं राजा गोपालसिंह कूएँ में घुस कर वहां न जा पहुंचे हों? मगर वे तो केवल दो ही आदमी थे!!

माया०। और ये तीन हैं (कुछ रुक कर) लीजिये अब पांच हो गये॥

मायारानी और उसके सङ्गी साथियों के देखते ही देखते उस छत पर पचीस आदमी होगये। सभों के हाथ में नङ्गी तलवारें थीं। जिस छत पर वे सब थे वहां पर से ऊपर ही ऊपर मायारानी के पास तक आने में यद्यपि कई तरह की रुकावटें थीं मगर ऐयारों के लिये यह कोई मुश्किल बात न थी, इसलिये मायारानी के पक्षवालों को भय हुआ और उन्होंने चाहा कि अपने फौजी आदमियों में से थोड़ों को ऊपर बुला लें और ऐसा करने के लिये अजायबसिंह को कहा गया॥

अजायबसिंह फौजी सिपाहियों को लाने के लिये चले तो गये मगर मकान के नीचे न जा सके और तुरत लौट आकर बोले, "नीचे जाने के हर एक दर्वाजे बन्द हैं कोई तर्कीब मायारानी करें तो शायद वहां तक पहुंचने की नौबत आवे॥"

अजायबसिंह की इस बात ने सभों को चौंका दिया और साथ

ही इसके सभों को अपनी अपनी जान की फिक्र पड़ गई । मायारानी के दिलाये हुए भरोसे से जो कुछ उम्मीद की जड़ लोगों के दिलों में जमी थी वह हिल गई और अब अपने किये पर पछताने की नौबत आई मगर मायारानी अब भी बात बनाने से न चूकी और वह यह कहती हुई अपनी जगह से उठी कि "कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह तिलिस्म को तोड़ रहे हैं इसलिये ताज्जुब नहीं कि ये सब बातें कुछ उन्हीं से सम्बन्ध रखती हों ॥"

मायारानी स्वयं नीचे उतरी मगर जा न सकी और अजायबसिंह की तरह लाचार हो कर बैरङ्ग लौट आई । उस समय उसके दिल में भी तरह तरह के खुटके पैदा हुए और ताज्जुब की निगाह से उन लोगों की तरफ देखने लगी जो उसके मुकाबिले में यकायकी आकर गिनती में पचीस हो गये थे ॥

थोड़ी देर के बाद लोग ऊपर कूदते फाँदते मायारानी की तरफ आते हुए दिखाई दिये । उस समय मायारानी और उसके सङ्गी साथी सब भी उठ खड़े हुए और अपनी जान बचाने की नीयत से तलवारें खैंच खैंच कर मुस्तैद हो गये ॥

बात की बात में पचीसों आदमी उस छत पर चले आये जिस पर मायारानी थी मगर मायारानी या उसके साथियों से किसी ने कुछ भी न कहा बल्कि उनकी तरफ आंख उठाकर देखा भी नहीं और मस्तानी चाल चलते हुए छत के नीचे उतर गये । इन लोगों ने भी यह सोचकर कि वे लोग गिनती में हम से ज्यादे हैं रोक टोक न किया मगर इस बात का खयाल जरूर रहा कि नीचे जाने के रास्ते तो सब बन्दही हैं खुद मायारानी न जा सकी और लौट आई, इन सभों को भी निःसन्देह लौट आना पड़ेगा मगर थोड़ी ही देर में यह गुमान जाता रहा जब कि वे पचीसों नीचे उतर कर बाग के बीच

में चलते हुए दिखाई दिये ॥

माधवी ने समझा कि हमारे फौजी सिपाही उन लोगों को जरूर रोके टोकेंगे और वास्तव में बात भी ऐसी ही थी, उन पच्चीसों को बाग में देख फौजी सिपाहियों में खलबली सी पड़ गई और बहुतों ने उठ कर उन लोगों को रोकना चाहा मगर वे लोग देखते ही देखते पेड़ों की झुरमुट में घुस कर ऐसे गायब हुए कि किसी को पता भी न लगा और सब लोग आश्चर्य्य के साथ देखते ही रह गये। उस समय माधवी ने मायारानी से कहा, "बहिन! यहां तो मामला बेढब नजर आता है !!"

माया०। कुछ समझ में नहीं आता कि वे लोग कौन थे यहां क्यों आये और हम लोगों को बिना रोके टोके इस तरह क्यों और कहां गायब हो गये !!

माधवी०। यह तो ठीक हई है मगर मैं पूछती हूं कि आप तिलिस्मी रानी कहला कर भी इस बाग का हाल क्या जानती हैं ? मैं समझती हूं कि कुछ भी नहीं जानतीं, अपने कमरे का मामूली दर्वाजा भी आप से नहीं खुलता और हम लोगों की जानें मुफ्त में जाया चाहती हैं ॥

भीम०। अब आप की कोई कार्रवाई हम लोगों को भरोसा नहीं दिला सकती ॥

माया०। इस समय मैं मजबूर हो रही हूं इसलिये टेढ़ी सीधी जो जी में आवे सुनाओ, अगर इस मकान के नीचे उतरने की नौबत आवेगी तो दिखा दूंगी कि मैं क्या कर सकती हूं ॥

कुबेर०। नीचे जाने की नौबत ही क्यों आवेगी ! गैर लोग आवें और चले जायँ मगर यहां की रानी होकर तुम कुछ न कर सको यह बड़े शर्म की बात है !!

मायारानी इस का जवाब कुछ दिया ही चाहती थी कि सीढ़ी की तरफ से आवाज आई, "तुम लोगों के कलपने पर मुझे दया आती है अच्छा आओ हम दर्वाजा खोल देते हैं तुम लोग नीचे उतर जाओ और अपनी जान बचाओ।" इसके बाद सीढ़ी वाले दर्वाजे के खुलने की आवाज आई॥

सभों को ताज्जुब और सीढ़ी की तरफ जाते डर मालूम हुआ मगर यह सोच कर कि यहां पड़े रहने से भी जान बचने की आशा नहीं है सभों ने जी कड़ा कर के उतर जाने का इरादा किया॥

वास्तव में दर्वाजे जो बन्द हो गए थे खुले हुए दिखाई दिये और सब कोई जल्दी के साथ नीचे उतर गए, उस समय मायारानी ने एक लम्बी सांस ले कर कहा, "अब कोई चिन्ता नहीं॥"

बाकर०। मगर यह न मालूम हुआ कि दर्वाजा खोलने वाला कौन था !!

यारअली०। और उसने हम लोगों के साथ नेकी का बर्ताव क्यों किया॥

इतने ही में ऊपर से आवाज आई, "दर्वाजा खोलने वाला मैं हूं॥"

सभों ने घबड़ाकर ऊपर की तरफ देखा। एक आदमी मुंह पर नकाब डाले बरामदे से झांकता हुआ दिखाई दिया। कुबेरसिंह ने उससे पूछा, "तुम कौन हो?"

नकाबपोश०। मैं इस तिलिस्म का दारोगा हूं॥

माया०। इस तिलिस्म का दारोगा तो राजा बीरेन्द्रसिंह के कब्जे में है॥

नकाब०। वह तुम्हारा दारोगा था और मैं राजा गोपालसिंह का दारोगा हूं, आजकल यह बाग मेरे ही कब्जे में है॥

माया०। जिस समय हम लोग यहां आये थे तुम कहां थे?

नकाब० । इसी बाग में ॥

माया० । फिर हम लोगों को रोका क्यों नहीं ?

नकाब० । रोकने की जरूरत ही क्या थी ? यह तो मैं जानता ही था कि तुम लोग अपने पैर में आपही कुल्हाड़ी मार रहे हो, तुम लोगों की बेवकूफी पर तो मुझे हँसी आती है !!

माया०। बेवकूफी काहे की ?

नकाब० । एक तो यही कि तुम लोगों ने इतनी फौज को बाग के अन्दर घुसेड़ तो लिया मगर यह न सोचा कि इतने आदमी यहां आकर खायंगे क्या ? अगर घास और पेड़ पत्तों को भी खाकर गुजारा किया चाहें तो भी एक दिन का काम नहीं चल सकता । क्या तुम लोगों ने समझा था कि बाग में पहुंचते ही गोपालसिंह को मार लेंगे ?

माया० । गोपालसिंह को तो हम लोगों ने मार ही लिया इसमें शकही क्या है ? बाकी रही हमारी फौज सो एक दिन का खाना अपने पास रखती है, कल तो हम लोग इस बाग के बाहर हो ही जायँगे ॥

नकाब० । दोनों बातें शेखचिल्ली की सी हैं, न तो राजा गोपालसिंह का तुम लोग कुछ बिगाड़ सकते हो और न इस बाग के बाहर को हवा ही खा सकते हो ॥

माया०। तो क्या गोपालसिंह किसी दूसरी राह से निकल जायँगे ?

नकाब० । बेशक ?

माया० । और हमलोग बाहर न जा सकेंगे ?

नकाब० । कदापि नहीं, क्योंकि मैंने सब दर्वाजे अच्छी तरह बन्द कर दिये हैं । तुम तो तिलिस्म की रानी बनने का दावा व्यर्थ ही करती हो, तुम्हें तो यहां का हाल रुपै में एक पैसा भी मालूम नहीं है, अभी मैंने तुम लोगों के उतरने की राह रोक दी थी सो तुम्हारे किये कुछ भी न बन पड़ा । जब तुम लोग छत पर थे पचीस आदमी

तुम्हारे सामने से हो कर नीचे चले आये अगर तुम्हें तिलिस्म की रानी होने का दावा था तो उन्हें रोक लेतीं! मगर हमारे राजा साहब के हौसले को देखो कि तुम लोगों के यहां अकेले केवल भैरोसिंह को साथ लेकर इस बाग में चले आये॥

माया०। उन्हें हमारे आने की कैसे खबर मिली?

नकाब०। (ज़ोर से हँस कर) इसके जवाब में इतना ही कहना काफी है कि तुम्हारी लीला इस बाग में आने के पहिले ही गिरफ़ार कर ली गई॥

माधवी०। तो क्या हमलोग किसी तरह अब इस बाग के बाहर नहीं जा सकते?

नकाब०। जीते जी तो नहीं जा सकते मगर जब तुम लोग मर जाओगे तब सभों की लाशें बाहर फेंक दी जायँगी?

जिस मकान में से मायारानी उतरी थी उसी के बरामदे में वह नकाबपोश टहल रहा था। बरामदे के आगे किसी तरह की आड़ या रुकावट न थी। मायारानी उससे बातें करती जाती थी और छिपे ढङ्ग से अपने तिलिस्मी तमंचे को भी दुरुस्त करती जाती थी और रात होने के सबब यह बात उस नकाबपोश को मालूम न हुई। जब वह माधवी से बातें करने लगा उस समय मौका पाकर मायारानी ने तिलिस्मी तमंचा उस पर चलाया। गोली उसकी छाती में लगकर फट गई और बेहोशी का धूआं बहुत जल्द उसके दिमाग में चढ़ गया, साथ ही वह आदमी भी बेहोश होकर लुड़कता हुआ मायारानी के आगे जमीन पर आ रहा। भीमसेन ने झपट कर उसकी नकाब हटा दी और चौंक कर बोल उठा, "वाह वाह यह तो राजा गोपालसिंह हैं!!"

ग्यारहवां बयान ।

कुंअर इन्द्रजीतसिंह, आनन्दसिंह और सर्यू को बड़ाही ताज्जुब हुआ जब उन्होंने यकायकी सात आदमियों को तिलिस्मी बाग में पहुंचाये गये देखा। जब उस मकान की खिड़की बन्द हो गई और चारो तरफ सन्नाटा छा गया तब इन्द्रजीतसिंह ने आनन्दसिंह से कहा, "उस तरफ चल कर देखना चाहिये कि ये लोग कौन हैं ?"

आनन्द० । जरूर चलना चाहिये ॥

सर्यू० । कहीं हम लोगों के दुश्मन न हों ॥

आनन्द० । अगर दुश्मन भी होंगे तो हमें कुछ परवाह न करना चाहिये, हम लोग हजारों में लड़ने वाले हैं ॥

इन्द्र० । अगर हम लोग दस बीस आदमियों से डरा करेंगे तो कुछ भी न कर सकेंगे ॥

इतना कह कर इन्द्रजीतसिंह ने उस तरफ कदम बढ़ाया, आनन्दसिंह उनके पीछे पीछे रवाना हुए मगर सर्यू को साथ आने की आज्ञा न दी और वह उसी जगह खड़ी रह गई ॥

पास पहुंच कर कुमार ने देखा कि सात आदमी जमीन पर बेहोश पड़े हैं सभों के बदन पर स्याह लबादा और चेहरों पर स्याह नकाब थी। थोड़ी देर तक दोनों भाई ताज्जुब की निगाह से उन सभों की तरफ देखते रहे और इसके बाद एक के चेहरे पर से नकाब हटाने का इरादा किया मगर उसी समय ऊपर से पुनः दर्वाजा या खिड़की खुलने की आवाज आई ॥

आनन्द० । मालूम होता है कि और भी दो चार आदमी यहां उतारे जायँगे ॥

इन्द्रजीत० । शायद ऐसा ही हो, यहां से हट कर और आड़ में

ा कर देखना चाहिये ॥

आनन्द०। (सातों बेहोशों की तरफ इशारा करके) यदि इन लोगों को इनके दुश्मनों ने यहां पहुंचाया हो और अबकी दफे कोई आकर इन की जान.........

इन्द्र०। नहीं नहीं अगर ये लोग मारे जाने लायक होते और जिन लोगों ने इन्हें नीचे उतारा है वे इनके जानी दुश्मन होते तो धीरे से उतारने के बदले ऊपर से धक्का देकर नीचे गिरा देते। खैर ज्यादे बात चीत का मौका नहीं है इस पेड़ की आड़ में हो जाओ फिर देखो हम सब पता लगा लेते हैं, बस हटो जल्दी करो ॥

बेचारे आनन्दसिंह कुछ जवाब न दे सके और वहां से थोड़ी दूर हट कर एक पेड़ की आड़ में हो गये। इस समय चन्द्रदेव अपनी छावनी की तरफ जा रहे थे और पेड़ों की आड़ में पड़ जाने के कारण उस जगह कुछ अन्धकार सा छाया था जहां वे सातों बेहोश पड़े हुए थे और इन्द्रजीतसिंह खड़े थे ॥

इन्द्रजीतसिंह हाथ में तिलिस्मी खञ्जर लेकर फुर्ती से उन सातों के बीच में छिपकर लेटे रहे और दोनों तरफ से दो आदमियों के लबादे को भी अपने बदन पर ले लिया और पड़े पड़े ऊपर की तरफ देखने लगे। एक आदमी कमन्द के सहारे नीचे उतरता हुआ दिखाई दिया। जब वह जमीन पर उतर कर उन सातों आदमियों की तरफ आया तो इन्द्रजीतसिंह ने फुर्ती से हाथ बढ़ा कर तिलिस्मी खञ्जर उसके पैर से लगा दिया, साथही वह आदमी कांपा और बेहोश हो कर जमीन पर गिर पड़ा। इन्द्रजीतसिंह पुनः उसी तरह लेटे लेटे ऊपर की तरफ देखने लगे। थोड़ी देर बाद और एक आदमी उसी कमन्द के सहारे नीचे उतरा और गौर से उन सातों की तरफ घूम घूम के देखने लगा, जब वह कुमार के पास आया कुमार ने उसके

पैर से भी तिलिस्मी खञ्जर लगा दिया और वह भी पहिले की तरह बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा। कुंअर इन्द्रजीतसिंह लेटे लेटे और भी किसी के आने का इन्तजार करने लगे मगर कुछ देर हो जाने पर भी कोई तीसरा दिखाई न पड़ा। कुमार उठ खड़े हुए और आनन्दसिंह भी उनके पास चले आये॥

इन्द्रजीत०। तुम इसी जगह मुस्तैद रहकर इन सभों की निगह-बानी करो हम इसी कमन्द के सहारे ऊपर जाकर देखते हैं कि वहां क्या है॥

आनन्द०। आपका अकेले ऊपर जाना ठीक न होगा कौन ठिकाना वहां दुश्मनों की बारात लगी हो॥

इन्द्रजीत०। कोई हर्ज नहीं जो कुछ होगा देखा जायगा मगर तुम यहां से मत हिलना॥

इतना कह कर इन्द्रजीतसिंह उसी कमन्द के सहारे बहुत जल्द ऊपर चढ़ गये और खिड़की के अन्दर जाकर एक लम्बे चौड़े कमरे में पहुंचे जहां बिल्कुल सन्नाटा था मगर चिराग जल रहा था। इस कमरे में दूसरी तरफ बाहर निकल जाने के लिये एक बड़ा सा दर-वाजा था, कुमार वहां चले गये और एक पैर दर्वाजे के बाहर रख कर झांकने लगे, एक दूसरा कमरा नजर पड़ा जिसमें चारो तरफ छोटे २ कई दर्वाजे थे मगर बन्द थे और सामने की तरफ एक बड़ा सा खुला हुआ दरवाजा था। कुमार उस खुले हुए दरवाजे में चले गये, झांक कर देखने से एक छोटा सा बाग दिखाई दिया जिसके चारो तरफ ऊंची ऊंची इमारत और बीच में एक छोटी बावली थी। उस बाग में दो बिगहे से ज्यादे ज़मीन न थी और फूल पत्तों के पेड़ भी बहुत ही कम थे। बावली के पूरब तरफ एक आदमी हाथ में मशाल लिये खड़ा था और उस मशाल में से बिजली की तरह बहुत ही

ज रोशनी निकल रही थी। वह रोशनी स्थिर थी अर्थात् हवा लगने से हिलती न थी। केवल उस एक ही रोशनी से तमाम बाग ऐसा उजाला हो रहा था कि वहां का एक एक पत्ता साफ दिखाई दे रहा था। कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने बड़े गौर से इस आदमी को देखा जिसके हाथ में मशाल थी, कुमार को निश्चय हो गया कि यह आदमी असली नहीं है बनावटी है अस्तु ताज्जुब से कुछ देर उसकी तरफ देखते रहे, इसी बीच में बाग के उत्तर तरफ वाले दालान में से एक आदमी निकल कर बावली की तरफ आता हुआ दिखाई पड़ा और कुमार ने उसे बहुत जल्द पहिचान लिया कि यह राजा गोपालसिंह हैं। कुमार ने उन्हें पुकारने का इरादा किया ही था कि उसी दालान में से और चार आदमी आते हुए दिखाई दिये और उनकी सूरत शक्ल भी पहिले आदमी के समान थी अर्थात् वे चारों भी राजा गोपालसिंह ही मालूम पड़ते थे जिससे कुंअर इन्द्रजीतसिंह को बहुत ही आश्चर्य हुआ और वे बड़े गौर से उनको तरफ देखने लगे॥

वे चारों आदमी जो पीछे आये थे, खाली हाथ न थे बल्कि दो आदमियों की लाशें उठाये हुए थे। धीरे २ चल कर वे चारों आदमी उस बनावटी सूरत के पास पहुंचे जिसके हाथ में मशाल थी, वे दोनों लाशें उसी के पास जमीन पर रख दीं और पांचों गोपालसिंह मिल कर धीरे धीरे बातें करने लगे जिसे कुंअर इन्द्रजीतसिंह किसी तरह सुन नहीं सकते थे॥

पहिले आदमी को देख कर और गोपालसिंह समझकर कुमार ने आवाज देना चाहा था, मगर जब और भी चार गोपालसिंह निकल आये तब उन्हें ताज्जुब मालूम हुआ और यह समझ कर कि कदाचित इन पांचों में से एक भी गोपालसिंह न हों चुप रह गये। उन पांचों गोपालसिंह की पोशाक एकही रङ्ग ढङ्ग की थी बल्कि उन दोनों लाशों

पैर से भी तिलिस्मी खञ्जर लगा दिया और वह भी पहिले की तरह बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा। कुंअर इन्द्रजीतसिंह लेटे लेटे और भी किसी के आने का इन्तजार करने लगे मगर कुछ देर हो जाने पर भी कोई तीसरा दिखाई न पड़ा। कुमार उठ खड़े हुए और आनन्दसिंह भी उनके पास चले आये॥

इन्द्रजीत०। तुम इसी जगह मुस्तैद रहकर इन सभों की निगहबानी करो हम इसी कमन्द के सहारे ऊपर जाकर देखते हैं कि वहां क्या है॥

आनन्द०। आपका अकेले ऊपर जाना ठीक न होगा कौन ठिकाना वहां दुश्मनों की बारात लगी हो॥

इन्द्रजीत०। कोई हर्ज नहीं जो कुछ होगा देखा जायगा मगर तुम यहां से मत हिलना॥

इतना कह कर इन्द्रजीतसिंह उसी कमन्द के सहारे बहुत जल्द ऊपर चढ़ गये और खिड़की के अन्दर जाकर एक लम्बे चौड़े कमरे में पहुंचे जहां बिल्कुल सन्नाटा था मगर चिराग जल रहा था। इस कमरे में दूसरी तरफ बाहर निकल जाने के लिये एक बड़ा सा दरवाजा था, कुमार वहां चले गये और एक पैर दर्वाजे के बाहर रख कर झांकने लगे, एक दूसरा कमरा नजर पड़ा जिसमें चारो तरफ छोटे २ कई दर्वाजे थे मगर बन्द थे और सामने की तरफ एक बड़ा सा खुला हुआ दरवाजा था। कुमार उस खुले हुए दरवाजे में चले गये, झांक कर देखने से एक छोटा सा बाग दिखाई दिया जिसके चारो तरफ ऊंची ऊंची इमारत और बीच में एक छोटी बावली थी। उस बाग में दो बिगहे से ज्यादे ज़मीन न थी और फूल पत्तों के पेड़ भी बहुत ही कम थे। बावली के पूरब तरफ एक आदमी हाथ में मशाल लिये खड़ा था और उस मशाल में से बिजली की तरह बहुत ही

तेज रोशनी निकल रही थी। वह रोशनी स्थिर थी अर्थात् हवा लगने से हिलती न थी। केवल उस एक ही रोशनी से तमाम बाग ऐसा उजाला हो रहा था कि वहां का एक एक पत्ता साफ दिखाई दे रहा था। कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने बड़े गौर से इस आदमी को देखा जिसके हाथ में मशाल थी, कुमार को निश्चय हो गया कि यह आदमी असली नहीं है बनावटी है अस्तु ताज्जुब से कुछ देर उसकी तरफ देखते रहे, इसी बीच में बाग के उत्तर तरफ वाले दालान में से एक आदमी निकल कर बावली की तरफ आता हुआ दिखाई पड़ा और कुमार ने उसे बहुत जल्द पहिचान लिया कि यह राजा गोपालसिंह हैं। कुमार ने उन्हें पुकारने का इरादा किया ही था कि उसी दालान में से और चार आदमी आते हुए दिखाई दिये और उनकी सूरत शक्ल भी पहिले आदमी के समान थी अर्थात् वे चारों भी राजा गोपालसिंह ही मालूम पड़ते थे जिससे कुंअर इन्द्रजीतसिंह को बहुत ही आश्चर्य्य हुआ और वे बड़े गौर से उनकी तरफ देखने लगे॥

वे चारों आदमी जो पीछे आये थे, खाली हाथ न थे बल्कि दो आदमियों की लाशें उठाये हुए थे। धीरे २ चल कर वे चारों आदमी उस बनावटी सूरत के पास पहुंचे जिसके हाथ में मशाल थी, वे दोनों लाशें उसी के पास जमीन पर रख दीं और पांचों गोपालसिंह मिल कर धीरे धीरे बातें करने लगे जिसे कुंअर इन्द्रजीतसिंह किसी तरह सुन नहीं सकते थे॥

पहिले आदमी को देख कर और गोपालसिंह समझकर कुमार ने आवाज देना चाहा था, मगर जब और भी चार गोपालसिंह निकल आये तब उन्हें ताज्जुब मालूम हुआ और यह समझ कर कि कदाचित इन पांचों में से एक भी गोपालसिंह न हों चुप रह गये। उन पांचों गोपालसिंह की पोशाक एकही रङ्ग ढङ्ग की थी बल्कि उन दोनों लाशों

की पोशाक भी ठीक उन्हीं की तरह थी । यद्यपि उन लाशों का सर कटा हुआ था और वहां मैाजूद न था मगर उन पांचों गोपालसिंह की तरफ खयाल करके देखने वाला उन लाशों को भी गोपालसिंह ही बता सकता था ॥

कुमार को चाहे इस बात का खयाल होगया हो कि इन सभों में से कोई भी असल गोपालसिंह न होंगे मगर उन सभों को बड़े ताज्जुब और गैार की निगाह से देख रहे थे कि इतने गोपालसिंह बनने की जरूरत क्या थी और उन दोनों लाशों के साथ ऐसा बर्ताव क्यों किया गया और किस ने किया !!

जिस दर्वाजे में कुंअर इन्द्रजीतसिंह खड़े थे उसी के आगे बाईं तरफ घूमती हुई छोटी छोटी सीढ़ियां नीचे उतर जाने के लिये थीं। कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने कुछ सोच बिचार कर चाहा कि इन सीढ़ियों की राह नीचे उतर कर पांचों गोपालसिंह के पास जायँ और उन्हें जबर्दस्ती रोक कर असल बात का पता लगावें मगर इसके पहिलेही किसी के आने की आहट मालूम हुई और पीछे घूम कर देखने से कुंअर आनन्दसिंह पर निगाह पड़ी ॥

इन्द्रजीत० । तुम क्यों चले आये ?

आनन्द० । आप को मैंने कई दफे नीचे से पुकारा मगर उसका आपने कुछ जवाब न दिया तो लाचार यहां आना पड़ा ॥

इन्द्रजीत० । क्यों ?

आनन्द० । राजा गोपालसिंह की आज्ञा से ॥

इन्द्रजीत० । राजा गोपालसिंह कहां ?

आनन्द० । उन दोनों आदमियों में से जो नीचे उतरे थे और जिन्हें आपने बेहोश कर दिया था एक राजा गोपालसिंह थे, जब आप ऊपर चढ़ आये तब मैंने एक की नकाब हटाई और तिलिस्मी

खञ्जर की रोशनी में चेहरा देखा तो मालूम हुआ कि यह गोपालसिंह हैं, उस समय मुझे इस बात का अफसोस हुआ कि बेहोश करने बाद आपने उनकी सूरत नहीं देखी, अगर देखते तो उन्हें छोड़ कर यहां न आते। खैर जब मैंने उन्हें पहिचाना तो होश में लाने के लिये उद्योग करना उचित जाना। अस्तु तिलिस्मी खञ्जर के जोड़ की अँगूठी उनके बदन से लगाई जिससे थोड़ी ही देर बाद वह होश में आए और उठ बैठे। होश में आने बाद पहिले पहिल जो कुछ उनके मुंह से निकला वह यही था कि "कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने धोखा खाया भला मुझे बेहोश करने की क्या जरूरत थी ? मैं तो खुद उनसे मिलने के लिये यहां आया था।" इतना कह कर उन्होंने मेरी तरफ देखा। यद्यपि उस समय चांदनी वहां से हट गई थी मगर उन्होंने मुझे बहुत जल्द पहिचान लिया और पूछा कि "तुम्हारे बड़े भाई कहां हैं ?

मैंने उनसे कुछ छिपाना उचित न जाना और कह दिया कि इसी कमन्द के सहारे ऊपर चले गये हैं, यह सुन कर वे बहुत रञ्ज हुए और क्रोध से बोले कि "सब काम लड़कपन और नादानी का किया करते हैं! उन्हें बहुत जल्द ऊपर से बुलालो।" मैंने आपको कई दफे पुकारा मगर आप न बोले तब उन्होंने घुड़क के कहा कि "क्यों व्यर्थ देर कर रहे हो तुम खुद ऊपर जाओ और जल्द बुला लाओ॥"

मैंने कहा कि मुझे यहां से हटने की आज्ञा नहीं है आप खुद जाइये और उन्हें बुला लाइये। इतना सुन कर वे और भी रञ्ज हुए और बोले, "अगर मुझ में ऊपर जाने की ताकत होती तो मैं तुम्हें इतना कहता भी नहीं बेहोशी के कारण मेरी रग रग कमजोर हो रही है, तुम अगर उनको बुला लाने में बिलम्ब करोगे तो पछताओगे बस अब मैं इससे ज्यादे और कुछ न कहूंगा जो ईश्वर की मर्जी होगी और जो कुछ तुम लोगों के भाग्य में लिखा होगा सो होगा॥"

उनकी बातें ऐसी न थीं कि मैं सुनता और चुपचाप खड़ा रह जाता आखिर लाचार होकर आप को बुलाने के लिये आना पड़ा। अब आप जल्द चलिये देर न कीजिये ॥

आनन्दसिंह की बातें सुन कर इन्द्रजीतसिंह को बहुत रञ्ज हुआ और उन्होंने क्रोध भरी आवाज में कहा :—

इन्द्रजीत० । आखिर तुम से नादानी हो ही गई ॥

आनन्द० । (आश्चर्य्य से) सो क्या ?

इन्द्रजीत०। तुमने उस दूसरे के चेहरे पर से भी नकाब हटा कर देखा था कि वह कौन था ?

आनन्द० । जी नहीं ॥

इन्द्रजीत० । तुम्हें कैसे विश्वास हुआ कि वह राजा गोपालसिंह ही हैं ? जब चेहरे पर से नकाब हटा कर देखा था तो पानी से मुंह धोकर भी देख लेना था । क्या तुम भूल गये कि राजा गोपालसिंह के पास भी इसी तरह का तिलिस्मी खञ्जर मौजूद है ! अस्तु उनके ऊपर तिलिस्मी खञ्जर का असर क्यों होने लगा था ?

आनन्द० । (सर नीचा करके) बेशक मुझ से भूल हुई ॥

इन्द्रजीत० । भारी भूल हुई (छोटे बाग की तरफ बता कर) देखो यहां पांच राजा गोपालसिंह हैं ! क्या तुम कह सकते हो कि ये पांचों राजा गोपालसिंह हैं ?

आनन्दसिंह ने उस छोटे बगीचे तरफ झांक कर देखा और कहा, "बेशक मामला गड़बड़ है ॥"

इन्द्रजीत० । खैर अब तो हमें लौटना ही पड़ा ! हम चाहते थे कि इन सभों का कुछ भेद मालूम करें मगर खैर !!

इतना कह कर इन्द्रजीतसिंह लौट पड़े और उस कमरे को लांघ कर दूसरे कमरे में पहुंचे जिसमें वे सातों खिड़कियां थीं यकायक

इन्द्रजीतसिंह की निगाह एक लिफाफे पर पड़ी जिसे उन्होंने उठा लिया और चिराग के पास ले जा कर पढ़ा। लिफाफा बन्द था और उस पर यह लिखा हुआ था :—

"इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह योग्य लिखी गोपालसिंह॥"

कुमार ने लिफाफा फाड़कर चीठी निकाली और देखते ही कहा, "इस चीठी पर किसी तरह का शक नहीं हो सकता बेशक यह भाई साहब के हाथ की लिखी है और मामूली निशानी भी है।" इसके बाद चीठी पढ़ने लगे॥

आनन्दसिंह ने देखा कि चीठी पढ़ते पढ़ते इन्द्रजीतसिंह के चेहरे का रङ्ग कई दफे बदला और जैसे जैसे चीठी पढ़ते जाते थे रञ्ज की निशानी बढ़ती ही जाती थी और जब कुल चीठी पढ़ चुके तो एक लम्बी सांस लेकर बोले, "अफसोस! बड़ी भूल हुई।" और वह चीठी पढ़ने के लिये आनन्दसिंह के हाथ में देदी॥

आनन्दसिंह ने चीठी पढ़ी, यह लिखा हुआ था :—

"किशोरी, कमलिनी, लक्ष्मीदेवी, कमलिनी, कमला, लाडिली और इन्दिरा को आप के तिलिस्म में भेजते हैं देखिये इन्हें सम्हालिये और एक क्षण के लिये भी इन से अलग न होइये जब तक कि मुन्दर हमारे तिलिस्मी बाग में घुसी हुई है। हम आठ आना उसके कब्जे में आ गये हैं, लोला ने धोखा देकर हमारे कुछ भेद मालूम कर लिये जिसका सबब और पूरा पूरा हाल लक्ष्मीदेवी या कमलिनी की जुबानी आप को मालूम होगा उन्हें हमने सब कुछ बता और समझा दिया है, कई बातों के खयाल से सभों को बेहोश करके कमन्द द्वारा आप के पास पहुंचाते हैं, खबरदार खबरदार एक क्षण के लिये इन लोगों से अलग न होना और किसी बनावटी गोपालसिंह का विश्वास न करना, आज कम से कम बीस पच्चीस गोपालसिंह बने हुए कार-

वाई कर रहे हैं, हम जरा तरद्दुद में पड़े हुए हैं मगर कोई चिन्ता नहीं भैरोसिंह हमारे साथ हैं। आप इस बाग के दर्जे को जल्द तोड़ कर दूसरी जगह पहुंचिये और यह काम रात भर के अन्दर होना चाहिये ॥"

शिवरामे—गोपाल—मेरावशि शुलेख ।

चीठी पढ़ कर आनन्दसिंह को बड़ा अफसोस हुआ और अपने किये पर पछताने लगे। सच तो यों है कि दोनों भाइयों को इस बात का अफसोस हुआ कि "किशोरी, कामिनी इत्यादि को अपने पास आ जाने पर भी देखे और होश में लाये बिना छोड़ कर इधर चले आये और व्यर्थ के झंझट में पड़े।" क्योंकि दोनों कुमार किशोरी और कामिनी की मुलाकात से बढ़ कर दुनिया में किसी चीज को पसन्द नहीं करते थे ॥

दोनों कुमार जल्दी २ उस कमरे के बाहर हुए और उस खिड़की में पहुंचे जिसमें कमन्द लगा हुआ छोड़ आये थे मगर आश्चर्य्य की बात है कि अब उन्होंने उस कमन्द को खिड़की में लगा हुआ न पाया जिसके सहारे वे नीचे उतर जाते। शायद किसी नीचे वाले ने उस कमन्द को छुड़ा लिया हो !!

बारहवां बयान ।

राजा गोपालसिंह ने जब रामदीन को चीठी और अँगूठी देकर जमानियां भेजा था तो यद्यपि चीठी में लिख दिया था कि "परसों रविवार को शाम तक हमलोग वहां (पिपलिया घाटी) पहुंच जायँगे।" मगर रामदीन को समझा दिया था कि "रविवार को पिपलिया घाटी

पहुंचना हमने योंही लिख दिया है वास्तव में हम वहां सोमवार को पहुंचेंगे अस्तु तुम भी सोमवार को पिपलिया घाटी पहुंचना जिसमें ज्यादे देर तक हमारे आदमियों को वहां ठहर कर तकलीफ न उठानी पड़े और दो सौ सवारों की जगह केवल बीस सवार लाना।" यह बात असली रामदीन को तो मालूम थी और वह मारा न जाता तो बेशक रथ और सवारों को लेकर राजा साहब की आज्ञानुसार सोमवार को पिपलिया घाटी पहुंचता, मगर नकली रामदीन अर्थात् लीला तो उन्हीं बातों को जान सकती थी जो चीठी में लिखी हुई थीं अस्तु वह रविवार ही को रथ और फौज लेकर पिपलिया घाटी जा पहुंची और जब सोमवार को राजा साहब वहां पहुंचे तो बोली, "आश्चर्य्य है कि आपके आने में पूरे आठ पहर की देर हुई॥"

यह सुनते ही राजा साहब समझ गये कि यह असली रामदीन नहीं है। उसी समय से उन्होंने अपनी कार्रवाई का ढङ्ग बदल दिया और लीला तथा मायारानी का सब बन्दोबस्त मिट्टी में मिल गया। वह उसी समय दो चार बातें करके पीछे लौट गये और दूसरे दिन औरतों को अपने साथ न लाकर केवल भैरोसिंह और इन्द्रदेव को साथ लिये हुए पिपलिया घाटी में आये॥

इस जगह यह भी लिख देना उचित जान पड़ता है कि दूसरे दिन पिपलिया घाटी में पहुंच कर लीला के लाए हुए सवारों के साथ, रथ पर चढ़ कर जमानियां पहुंचने वाले गोपालसिंह असली न थे बल्कि नकली थे और भैरोसिंह ने लीला के साथ जो कुछ सलूक किया वह असली राजा गोपालसिंह का इशारा था। अब हमारे पाठक यह जाना चाहते होंगे कि "यदि वह राजा गोपालसिंह नकली थे तो असली गोपालसिंह कहां गये या वह किस सूरत में गये?" तो इस के जवाब में केवल इतना ही कह देना काफी होगा कि—"असली

गोपालसिंह भी उन्हीं नकली गोपालसिंह के साथ इन्द्रदेव की सूरत बन कर रथ पर सवार हुए थे और जमानियां पहुंचने के पहिले ही नकली गोपालसिंह को समझा बुझा कर रथ से उतर किसी तरफ चले गये।" यह सब हाल यद्यपि पिछले बयानों से पाठकों को मालूम हो गया होगा परन्तु शक मिटाने के लिये यहां पुनः लिख दिया गया॥

राजा गोपालसिंह के होशियार हो जाने ही के कारण मायारानी ने तिलिस्मी बाग में तरह तरह के तमाशे देखे, जिसका कुछ हाल तो लिखा जा चुका है और बाकी आगे चल कर लिखा जायगा, क्योंकि इस समय हम इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह का हाल लिखना उचित समझते हैं॥

कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह ने जब खिड़की में कमन्द लगा हुआ न पाया तो उन्हें ताज्जुब और रञ्ज हुआ, थोड़ी देर तक खड़े उसी बाग की तरफ देखते रहे और फिर आनन्दसिंह से बोले, "क्या हम लोग यहां से कूद नहीं सकते?"

आनन्द०। क्यों नहीं कूद सकते! अगर इस बात का खयाल हो कि नीचा बहुत है तो कमरबन्द खोल कर इस दर्वाजे के सीखचों में बांध और उसके सहारे कुछ नीचे लटक कूदने में कुछ भी न मालूम पड़ेगा॥

इन्द्रजीत०। हां तुमने यह बहुत ठीक कहा दोनों कमरबन्दों के सहारे हम लोग आधी दूर तक लटक सकते हैं मगर खराबी यह है कि दोनों कमरबन्दों से हाथ धोना पड़ेगा और इस तिलिस्म में नहाने धोने का सुबीता इसी कमरबन्द की बदौलत है! खैर कोई चिन्ता नहीं लंगोट से भी काम निकल सकता है, अच्छा लाओ कमरबन्द खोलो॥

दोनों भाइयों ने कमरबन्द खोलने बाद दोनों को एक साथ जोड़ा

और उसका एक सिरा दर्वाजे में लगे हुए सीखचे के साथ बांध कर दोनों भाई बारी बारी से नीचे लटक गये॥

कमरबन्द ने आधी दूर तक दोनों भाइयों को नीचे पहुंचा दिया इसके बाद दोनों भाइयों को कूद जाना पड़ा। कूदने के साथ ही नीचे एक झाड़ी के अन्दर से आवाज आई, "शाबाश !! इतनी ऊंचाई से कूद पड़ना आप ही लोगों का काम है मगर अब किशोरी, कामिनी इत्यादि से मुलाकात नहीं हो सकती !!"

जितने आदमी कमन्द के सहारे इस बाग में लटके या लटकाये गये थे और जिन सभों को वहां छोड़ आनन्दसिंह अपने भाई को बुलाने के लिये ऊपर गये थे, उन सभों को वहां मौजूद न पा कर और इस शाबाशी देने वाली आवाज को सुन कर दोनों को बड़ा ही आश्चर्य्य हुआ, दोनों भाई चारों तरफ घूम २ कर देखने लगे मगर किसी की सूरत नजर न पड़ी हां एक गुञ्जान पेड़ के नीचे सर्यू को बेहोश पड़े हुए देखा जिससे उन दोनों का ताज्जुब और भी ज्यादे होगया॥

इन्द्रजीत०। (आनन्द से) यह सब खराबी तुम्हारी जरा सी भूल के सबब से हुई॥

आनन्द०। निःसन्देह ऐसा ही है॥

इन्द्र०। खैर पहिले सर्यू को होश में लाने की फिक्र करो शायद इसकी जुबानी कुछ मालूम हो॥

आनन्द०। जो आज्ञा॥

इतना कह कर आनन्दसिंह सर्यू को होश में लाने का उद्योग करने लगे। थोड़ी ही देर में सर्यू की बेहोशी जाती रही और इतने ही में सुबह की सुपेदी ने भी अपनी सूरत दिखाई॥

इन्द्रजीत०। (सर्यू से) तुम्हें किसने बेहोश किया?

सर्यू०। एक नकाबपोश ने आ कर एक चादर जबरदस्ती मेरे

ऊपर डाल दी जिससे मैं बेहोश हो गई मैं दूर से सब तमाशा देख रही थी। जब आप कमन्द के सहारे ऊपर चढ़ गये और उसके कुछ देर बाद छोटे कुमार भी आपको कई दफे पुकारने बाद उसी कमन्द के सहारे ऊपर चढ़ गये तब उन्हीं में से एक नकाबपोश ने उन सभों को सचेत किया जो (हाथ का इशारा करके) उस जगह बेहोश पड़े हुए थे या जो ऊपर से लटकाये गये थे। इसके बाद सब कोई मिल कर उस (हाथ से बता कर) दीवार की तरफ गये और कुछ देर तक आपुस में बातें करते रहे, इसी बीच में छिप कर उनकी बातें सुनने की नीयत से मैं भी धीरे धीरे अपने,को छिपाती हुई उस तरफ बढ़ी मगर अफसोस ! वहां तक पहुंचने भी न पाई थी कि एक नकाबपोश मेरे सामने आ पहुंचा और उसने उसी ढङ्ग से मुझे बेहोश कर दिया जैसा कि मैं अभी कह चुकी हूं। शायद उसी बेहोशी की अवस्था में मैं इस जगह पहुंचाई गई॥

सर्यू की बात सुन कर दोनों कुमार कुछ देर तक सोचते रहे, इसके बाद सर्यू को साथ लिये हुए उसी दीवार की तरफ गये जिधर उन लोगों का जाना सर्यू ने बताया था जो कमन्द के सहारे इस बाग में उतारे गये थे। जब वहां पहुंचे तो देखा कि दीवार की लम्बाई के बीचोबीच एक दर्वाजे का निशान बना हुआ है और उसके पास ही में नीचे की जमीन कुछ खुदी हुई है॥

आनन्द०। (इन्द्रजीत से) देखिये यहां की जमीन उन लोगों ने खोदी है और तिलिस्म के अन्दर जाने का दर्वाजा निकाला है क्योंकि दीवार में अब वह गुण तो रहा नहीं जो उन लोगों को ऐसा करने से रोकता !!

इन्द्र०। बेशक ! यही दर्वाजा है जिस राह से हम लोग तिलिस्म के दूसरे दर्जे में जाने वाले थे। तो इससे जाना जाता है कि वे लोग

तिलिस्म के अन्दर घुस गये ॥

आनन्द०। जरूर ऐसा ही है और यह काम सिवाय गोपाल भाई के कोई दूसरा नहीं कर सकता, अस्तु अब मैं जरूर यह कहने की हिम्मत करूंगा कि वह गोपाल भाई के सिवाय कोई दूसरा नहीं था जिसके कहे मुताबिक मैं आपको बुलाने के लिये मकान के ऊपर चला गया था ॥

इन्द्रजीत० । तुम्हारी बात मान लेने को इच्छा तो होती है मगर क्या तुम उस खास निशान को देख कर भी कह सकते हो कि "वह चीठी गोपाल भाई की नहीं थी जो मुझे उस मकान में कमरे के अन्दर मिली थी ?"

आनन्द०। जी नहीं, यह तो मैं कदापि नहीं कह सकता कि वह चीठी किसी दूसरे की लिखी हुई थी मगर यह खयाल भी मेरे दिल से दूर नहीं हो सकता कि मैं उन्हीं (गोपालसिंह) की आज्ञा से आपको बुलाने गया था ॥

इन्द्रजीत० । हो सकता है, तो क्या उन्हीं ने हम लोगों के साथ चालाकी की ?

आनन्द० । जो हो ॥

इन्द्र०। यदि ऐसा है तो उनकी लिखावट पर भी भरोसा करके हम कैसे कह सकते हैं कि किशोरी, कामिनी इत्यादि इस बाग में पहुंच गई थीं ?

आनन्द० । क्या यह हो सकता है कि वह तिलिस्मी किताब जो गोपाल भाई के पास थी किसी हमारे दुश्मन के हाथ लग गई हो और वह उस किताब की मदद से अपने साथियों सहित यहां पहुंच कर हम लोगों को नुकसान पहुंचाने की नीयत से तिलिस्म के अन्दर चला गया हो ॥

इन्द्र०। यह तो हो सकता है कि उनकी किताब किसी दुश्मन ने चुरा ली हो मगर यह नहीं हो सकता कि उसका मतलब भी हर कोई समझ ले। खुद मैं ही "रिक्तगन्थ" का मतलब ठीक २ नहीं समझ सकता था, आखिर जब उन्होंने बताया तब कहीं तिलिस्म के अन्दर जाने लायक हुआ (कुछ रुक कर) आज के मामले तो कुछ अजब बेढङ्गे ही दिखाई दिये......खैर कोई चिन्ता नहीं आखिर हमलोगों को इसी दर्वाजे की राह तिलिस्म के अन्दर जाना है। चलो फिर जो कुछ होगा देखा जायगा ॥

आनन्द० । अद्यपि सूर्योदय हो जाने के कारण प्रातः कृत्य से छुट्टी पा लेना आवश्यक जान पड़ता है, यह सोच कर कि क्या जाने कैसा मौका पड़े, तथापि आज्ञानुसार तिलिस्म के अन्दर चलने के लिये मैं तैयार हूं चलिये ॥

आनन्दसिंह की बात सुन कर इन्द्रजीतसिंह कुछ गौर में पड़ गये और कुछ सोचने बाद बोले, "कोई चिन्ता नहीं जो कुछ होगा देखा जायगा ॥"

दीवार के नीचे जो जमीन खुदी हुई थी उसकी लम्बाई चौड़ाई पांच पांच गज से ज्यादे न थी। मिट्टी हट जाने के कारण एक पत्थर की पटिया (ताज्जुब नहीं कि वह लोहे या पीतल की हो) दिखाई दे रही थी और उठाने के लिये बीच में लोहे की कड़ी लगी हुई थी जिस का एक सिरा दीवार के साथ सटा हुआ था। इन्द्रजीतसिंह ने कड़ी में हाथ डाल कर जोर किया और उस पटिये (छोटे चट्टान) को उठा कर किनारे पर रख दिया। नीचे उतरने के लिये सीढ़ियां दिखाई दीं और दोनों भाई सर्यू को साथ लिये हुए नीचे उतर गये ॥

लगभग बीस सीढ़ी के नीचे उतर जाने बाद एक छोटी सी कोठड़ी मिली जिसकी जमीन किसी धातु की बनी हुई थी और खूब

चमक रही थी। ऊपर दो तीन सूराख (छेद) भी इस ढङ्ग से बने हुए थे कि जिस से दिन भर उस कोठड़ी में कुछ कुछ रोशनी बनी रह सकती थी। आनन्दसिंह ने चारों तरफ गौर से देख कर इन्द्रजीतसिंह से कहा, "भैया! रिक्तगन्थ में लिखा था कि यही कोठड़ी तुम्हें तिलिस्म के अन्दर पहुंचावेगी मगर मेरी समझ में नहीं आता कि यह कोठड़ी किस तरह हम लोगों को तिलिस्म के अन्दर पहुंचावेगी क्योंकि इसमें न तो कहीं दर्वाजा दिखाई देता है और न कोई ऐसा निशान मालूम पड़ता है जिसे हमलोग दर्वाजा बनाने के काम में लावें॥"

इन्द्रजीत०। हम भी इसी सोच विचार में पड़े हुए हैं मगर कुछ समझ में नहीं आता है॥

इस बीच में दोनों कुमार और सर्यू के पैरों में झुनझुनी और कमज़ोरी मालूम होने लगी और वह बात की बात में इतनी ज्यादे बढ़ी कि वे लोग वहां से हिलने लायक भी न रहे, आखिर तमाम बदन में सनसनाहट और कमजोरी ऐसी बढ़ गई कि वे तीनों बेहोश हो कर जमीन पर गिर पड़े और फिर तनोबदन की सुध न रही॥

घण्टे भर के बाद कुंअर इन्द्रजीतसिंह की बेहोशी जाती रही और वह उठ कर बैठ गये मगर चारो तरफ घोर अन्धकार छाये रहने के कारण यह नहीं जान सकते थे कि वह किस अवस्था में कहां पड़े हुए हैं। सब से पहिले उन्हें तिलिस्मी खञ्जर की फिक्र हुई, कमर में हाथ लगाने पर उसे मौजूद पाया अस्तु उसे निकाल कर और उसका कब्जा दबा कर रोशनी पैदा की और ताज्जुब की निगाह से चारो तरफ देखने लगे॥

जिस स्थान में इस समय कुंअर थे वह सुर्ख पत्थर से बना हुआ था और दीवारों पर पत्थर के फूल बूटों का काम बहुत खूबी, खूब

सूरती और कारीगरी का अनूठा नमूना दिखाने वाला बना हुआ था। चारों तरफ की दीवारों में चार दर्वाजे थे मगर उनमें किवाड़ के पल्ले लगे हुए न थे। पास ही में कुंअर आनन्दसिंह भी पड़े हुए थे परन्तु सर्यू का कहीं पता न था जिससे कुमार को बहुत ही ताज्जुब हुआ, उसी समय आनन्दसिंह की बेहोशी भी जाती रही और वह उठ कर घबराहट के साथ चारो तरफ देखते हुए कुंअर इन्द्रजीतसिंह के पास आ खड़े हुए और बोले :—

आनन्द०। हमलोग यहां क्योंकर आये ?

इन्द्रजीत०। मुझे मालूम नहीं, तुम से थोड़ी ही देर पहिले मैं होश में आया हूं और ताज्जुब के साथ चारों तरफ देख रहा हूं॥

आनन्द०। और सर्यू कहां चली गई ?

इन्द्रजीत०। यह भी नहीं मालूम, तुम चारो तरफ की दीवारों में चार दर्वाजे देख रहे हैा, शायद वह हम से पहिले होश में आकर इन दर्वाजों में से किसी एक के अन्दर चली गई हो !!

आनन्द०। शायद ऐसाही हो चल कर देखना चाहिये। रिक्तगन्थ का कहना बहुत ठीक निकला, आखिर उसी कोठड़ी ने हम लोगों को यहां पहुंचा दिया मगर किस ढङ्ग से पहुंचाया सो मालूम नहीं होता (छत की तरफ देख कर) शायद वह कोठड़ी इसके ऊपर ही हो और उसकी जमीन ने नीचे उतर कर हम लोगों को यहां लुड़का दिया हो॥

इन्द्रजीत०। (कुछ मुसकुराकर) शायद ऐसाही हो निश्चय नहीं कह सकते, हां अब व्यर्थ खड़े न रह कर सर्यू और उन नकाबपोशों का पता लगाना चाहिये॥

इन्द्रजीतसिंह ने इतना कहाही था कि दीवार वाले एक दर्वाजे के अन्दर से आवाज आई, "बेशक, बेशक !!"

तेरहवां बयान।

"बेशक, बेशक" की आवाज ने दोनें कुमारें को चौंका दिया। यह आवाज सर्यू की न थी और न किसी ऐसे आदमी की थी जिसे कुमार पहिचानते हों, यह सबब उनके चौंकने का और भी था। दोनें कुमारें को निश्चय हो गया कि "यह आवाज उन्हीं नकाबपोशों में से किसी की है जो तिलिस्म के अन्दर लटकाये गये थे और जिन्हें हम लोग खोज रहे हैं, ताज्जुब नहीं कि सर्यू भी इन्हीं लोगें के सबब से गायब हो गई हो! क्योंकि एक कमजोर औरत की बेहोशी हम लोगें की बनिस्बत जल्द दूर नहीं हो सकती॥"

दोनें भाइयें के बिचार एक से थे अतएव दोनें ने एक दूसरे की तरफ देखा इसके बाद इन्द्रजीतसिंह और उनके पीछे २ आनन्द-सिंह उस दर्वाजे के अन्दर चले गये जिसमें से किसी के बोलने की आवाज आई थी॥

कुछ आगे जाने पर कुमार को मालूम हुआ कि यह रास्ता सुरङ्ग के ढङ्ग का बना हुआ है मगर बहुत छोटा और केवल एक ही आदमी के जाने लायक है अर्थात् उसकी चौड़ाई डेढ़ हाथ से ज्यादे नहीं है॥

लगभग बीस हाथ के जाने बाद दूसरा दर्वाजा मिला जिसे नाँघ कर दोनें भाई एक छोटे से बाग में गये जिसमें सब्जी की बनिस्बत इमारत का हिस्सा बहुत ज्यादे था अर्थात् उसमें कई दालान, कई कोठड़ियां और कई कमरे थे जिन्हें देखते ही इन्द्रजीतसिंह ने आनंद-सिंह से कहा, "इसके अन्दर थोड़े से आदमियें का पता लगाना भी कठिन होगा॥"

दोनें कुमार दोही चार कदम आगे बढ़े थे कि पीछे से दर्वाजे के बन्द होने की आवाज आई, घूम कर देखा तो उस दर्वाजे को बन्द

पाया जिसे नाँघ कर इस बाग में पहुंचे थे। दर्वाजा लोहे का और एक ही पल्ले का था जिसने चूहेदानी की तरह ऊपर से गिर कर दर्वाजे का मुंह बन्द कर दिया था। उस दर्वाजे के पल्ले पर मोटे मोटे अक्षरों में यह लिखा हुआ था :—

"तिलिस्म का यह हिस्सा टूटने लायक नहीं है, हां तिलिस्म का तोड़ने वाला यहां का तमाशा देख सकता है ॥"

इन्द्रजीत० । यद्यपि तिलिस्म का तमाशा दिलचस्प होता है मगर हमारा यह समय बड़ा नाज़ुक है तमाशा देखने योग्य नहीं, क्योंकि तरह तरह के तरद्दुदों ने दुःखी कर रक्खा है, देखा चाहिये इस तमाशबीनी से कब छुट्टी मिलती है ॥

आनन्द० । मेरा भी खयाल है, बल्कि मुझे तो इस बात का अफसोस होता है कि इस बाग में क्यों आये अगर किसी दूसरे दर्वाजे के अन्दर गये होते तो अच्छा होता ॥

इन्द्रजीत० । (कुछ आगे बढ़ कर ताज्जुब से) देखो तो सही उस पेड़ के नीचे कौन बैठा है! कुछ पहिचानते हो ?

आनन्द० । यद्यपि पोशाक में बहुत बड़ा फर्क है मगर सूरत भैरोसिंह की सी मालूम पड़ती है !!

इन्द्रजीत० । मेरा भी यही खयाल है, आओ उसके पास चलकर देखें ॥

आनन्द० । चलिये ॥

इस बाग के बीचोबीच में एक कदम्ब का बहुत बड़ा पेड़ था जिसके नीचे एक आदमी हाथ पर गाल रक्खे बैठा हुआ कुछ सोच रहा था। उसी को देख कर दोनों कुमार चौंके थे और उसी पर भैरो-

सिंह के होने का शक हुआ था। जब दोनों भाई उसके पास पहुंचे तो शक जाता रहा और अच्छी तरह पहिचान कर इन्द्रजीतसिंह ने पुकारा और कहा, "क्या यार भैरोसिंह! तुम यहां कैसे पहुंचे?"

उस आदमी ने सर उठा कर ताज्जुब से दोनों कुमारों की तरफ देखा और हलकी आवाज में जवाब दिया, "तुम दोनों कौन हो? मैं तो सात वर्ष से यहां रहता हूं मगर आज तक किसी ने भी मुझसे यह न पूछा कि तुम यहां कैसे आ पहुंचे?"

आनन्द०। कुछ पागल तो नहीं हो गये?

इन्द्रजीत०। क्योंकि तिलिस्म की हवा बड़े बड़े चालाकों और ऐयारों को पागल बना देती है॥

भैरो०। (शायद वह भैरोसिंह हो) कदाचित् ऐसा ही हो मगर मुझे तो आज तक किसी ने भी नहीं कहा कि तू पागल हो गया है! मेरी स्त्री भी यहां मेरे साथ रहती है वह भी मुझे बुद्धिमान ही समझती है॥

आनन्द०। (मुस्कुरा कर) तुम्हारी स्त्री कहां है? उसे मेरे सामने बुलाओ मैं उससे पूछूंगा कि वह तुम्हें पागल समझती है या नहीं॥

भैरो०। वाह वाह! तुम्हारे कहने से मैं अपनी स्त्री को तुम्हारे सामने बुला लूं? कहीं तुम उस पर आशिक हो जाओ या वही तुम पर मोहित हो जाय तो क्या हो?

इन्द्र०। (हँस कर) वह भले ही मुझ पर आशिक हो जाय मगर मैं वादा करता हूं कि उस पर मोहित न होऊँगा॥

भैरो०। सम्भव है कि तुम्हारी बातों पर विश्वास कर लूं मगर उसकी नौजवानी मुझे उस पर विश्वास नहीं करने देती। अच्छा ठहरो मैं उसे बुलाता हूं। अरी एरी मेरी नौजवान स्त्री भोली ई ई ई...

एक तरफ से आवाज आई, "मैं तो आप ही चली आ रही हूं तुम

क्यों चिल्ला रहे हो ? कम्बख़्त को जब देखो भोली २ करके चिल्लाया ही करता है ॥"

भैरो० । देखो कम्बख़्त का साठ घड़ी में एक पल भी सीधी तरह बात नहीं करती, नौजवान औरतें ऐसी ही हुआ करती हैं ॥

इतने में दोनों कुमारों ने देखा कि बाईं तरफ से एक नब्बे वर्ष की बुढ़िया छड़ी टेकती धीरे धीरे चली आ रही है जिसे देखते ही भैरो-सिंह उठा और यह कहता हुआ उसकी तरफ बढ़ा—"आओ मेरी प्यारी भोली ! तुम्हारी नौजवानी तुम्हें अकड़ कर चलने नहीं देती तो मैं अपने हाथों का सहारा देने के लिये तैयार हूं ॥"

भैरोसिंह ने बुढ़िया को हाथ का सहारा दे कर अपने पास ला बैठाला और आप भी उसी जगह बैठ कर बोला, "मेरी प्यारी भोली ! देखो ये दोनों नए आदमी आज यहां आये हैं जो मुझे पागल बताते हैं, तू ही बता कि क्या मैं पागल हूं ?

बुढ़िया० । राम राम ! ऐसा कभी हो सकता है ? मैं अपनी नौज-वानी की कसम खा कर कह सकती हूं कि तुम्हारे ऐसे बुद्धिमान बुड्ढे को पागल कहने वाला स्वयं पागल है (दोनों कुमारों की तरफ देख कर) ये दोनों उजड्ड यहां कैसे आ पहुंचे ? क्या किसी ने इन्हें रोका नहीं ?

भैरो०। मैंने इनसे कभी कुछ भी नहीं पूछा कि यह कौन हैं और यहां कैसे आ पहुंचे क्योंकि मैं तुम्हारी मुहब्बत में डूबा तरह तरह की बातें सोच रहा था, अब तुम आई हो तो जो कुछ पूछना हो स्वयम् पूछ लो ॥

बुढ़िया० । (कुमारों से) तुम दोनों कौन हो ?

भैरो०। (कुमारों से) बताओ बताओ सोचते क्या हो ? आदमी हो, जिन्न हो, भूत हो, प्रेत हो, कौन हो, कहते क्यों नहीं ? क्या तुम

नहीं देखते कि मेरी नौजवान स्त्री को तुमसे बात करने में कितना कष्ट होता है?

भैरोसिंह और उस बुढ़िया की बातचीत और अवस्था पर दोनों कुमारों को बड़ा ही आश्चर्य्य हुआ और कुछ सोचने बाद इन्द्रजीतसिंह ने भैरोसिंह से कहा, "अब मुझे निश्चय होगया कि तुम्हें किसी ने इस तिलिस्म में ला फँसाया है और कोई चीज ऐसी दिखाई या खिलाई है जिससे तुम पागल हो गये हो, ताज्जुब नहीं कि यह सब बदमाशी इसी बुढ़िया की हो, अब भी अगर तुम होश में न आओगे तो मैं तुम्हें मार पीट कर होश में लाऊंगा॥

इतना कह कर इन्द्रजीतसिंह भैरोसिंह की तरफ बढ़े और उसी समय बुढ़िया ने यह कह कर चिल्लाना शुरू किया, "दौड़ियो दौड़ियो, हाय रे, मारा रे, मरे रे, चोर चोर, डाकू डाकू, दौड़ो दौड़ो, लेगया, लेगया, लेगया॥"

बुढ़िया चिल्लाती ही रही मगर कुमार ने उसकी एक भी न सुनी, भैरोसिंह का हाथ पकड़ के अपनी तरफ खैंच लिया, मगर बुढ़िया का चिल्लाना भी व्यर्थ न गया। उसी समय चार पांच खूबसूरत लड़के दौड़ते हुए वहां आ पहुंचे और दोनों कुमारों को चारो तरफ से घेर लिया। उन लड़कों के गले में छोटी छोटी झोलियां लटक रही थीं और उनमें आटे की तरह कोई चीज भरी हुई थी। आने के साथ ही लड़कों ने अपनी झोली में से वह आटा निकाल निकाल कर दोनों कुमारों की तरफ फेंकना शुरू किया॥

निःसन्देह उस बुकनी में तेज बेहोशी का असर था जिसने दोनों कुमारों को बात की बात में बेहोश कर दिया और दोनों कुमार चक्कर खाकर जमीन पर लेट गये। जब आंख खुली तो दोनों ने अपने को एक सजे सजाये कमरे में फर्श के ऊपर पड़े पाया॥

चौदहवां बयान ।

जिस कमरे में दोनों कुमारों की बेहोशी दूर हो जाने के कारण आंख खुली थी, वह लम्बाई में बीस और चौड़ाई में पन्द्रह गज से कम न था। इस कमरे की सजावट कुछ विचित्र ढङ्ग की थी और दीवारों में भी एक तरह का अनूठापन था। रोशनी के शीशों (हांडी और कन्दीलों) की जगह उसमें दो दो हाथ लम्बी तरह तरह की खूब-सूरत पुतलियां लटक रही थीं और दीवारगीरों की जगह पचासों किस्म के जानवरों के चेहरे दीवारों में लगे हुए थे। दीवार इस कमरे की लहरदार बनी हुई थी और उस पर तरह तरह की चित्रकारी की हुई थी। ऊपर की तरफ छत से कुछ नीचे हट कर चारो तरफ छोटी छोटी खिड़कियां थीं जिनसे जान पड़ता था कि ऊपर कोई गुलाम-गर्दिश या मकान है मगर इस समय खिड़कियां सब बन्द थीं और इस कमरे में से कोई रास्ता ऊपर जाने का नहीं दिखाई देता था॥

कुंअर आनन्दसिंह ने इन्द्रजीतसिंह से कहा, "भैया! वह बुढ़िया तो अजब आफत की पुड़िया मालूम होती है! और उन लड़कों की तेजी भी भूलने योग्य नहीं है॥"

इन्द्रजीत०। बेशक ऐसा ही है, ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिये कि उन्होंने हम लोगों को जीता छोड़ दिया। हमें भैरोसिंह की बातों पर आश्चर्य्य मालूम होता है! क्या हम उसे वास्तव में कोई ऐयार समझें?

आनन्द०। यदि वह ऐयार होता तो निःसन्देह हम लोगों को धोखा देने के लिये भैरोसिंह बना होता और साथ ही इसके पोशाक भी वैसी ही रखता जैसी भैरोसिंह पहिरा करता है, इसके सिवाय वह स्वयम् अपने को भैरोसिंह प्रगट करके हमलोगों का साथी बनता,

ऐसा न कहता कि "भैरोसिंह नहीं हूं।" मगर उसकी नौजवान औरत (बुढ़िया) के विषय में......

इन्द्रजीत०। उस बुढ़िया की बात जाने दो, अगर वह वास्तव में भैरोसिंह है तो ताज्जुब नहीं कि मसखरापन करता है या पागल हो गया है और वह पागल हो गया है तो निःसन्देह उसी बुढ़िया की बदौलत, जो उसकी आंखों में अभी तक नौजवान बनी हुई है॥

आनन्द०। उस बुढ़िया को जिस तरह हो गिरफ़ार करना चाहिये॥

इन्द्रजीत०। मगर उसके पहिले अपने को वेहोशी से बचाने का बन्दोबस्त कर लेना चाहिये क्योंकि लड़ाई दङ्गे से तो हमलोग डरते ही नहीं॥

आनन्द०। जी हां जरूर ऐसा करना चाहिये, दवा तो हम लोगों के पास मौजूद ही है और ईश्वर की कृपा से कमरे का दरवाजा भी खुला है॥

दोनों भाइयों ने कमर में से डिबिया निकाली जिसमें किसी तरह की दवा थी और उसे खाने के बाद कमरे के बाहर निकला ही चाहते थे कि ऊपर वाले छोटे छोटे दर्वाजों में से एक दर्वाजा खुला और पुनः उसी नौजवान बुढ़िया के खसम भैरोसिंह की सूरत दिखाई दी। दोनों भाई रुक गये और आनन्दसिंह ने भैरोसिंह की तरफ देख कर कहा, "अब आप यहां क्यों आ पहुंचे?"

भैरो०। आपके हाल चाल की खबर लेने और साथ ही इसके अपनी नौजवान औरत की तरफ से आपको ज्याफत का न्योता देने आया हूं, मालूम होता है वह तुम लोगों पर आशिक हो गई है तभी तो खातिरदारी का बन्दोबस्त कर रही है! उसने तुम लोगों के लिये अच्छी अच्छी चीजें खाने की तैयार की हैं और अभी तक बनाती ही जाती है॥

आनन्द० । (हँस कर) उन चीजों में जहर कितना मिलाया है ॥

भैरो० । केवल डेढ़ छटांक, मैं उम्मीद करता हूं कि इतने से तुम लोगों की जान न जायगी ॥

आनन्द० । आप की इस कृपा का मैं धन्यवाद देता हूं और आप से बहुत ही प्रसन्न होकर आपको कुछ इनाम दिया चाहता हूं, आप मेहरबानी करके जरा यहां आइये तो अच्छी बात है ॥

भैरो० । बहुत अच्छा बहुत अच्छा, इनाम लेने में देर करना भले आदमी का काम नहीं है ॥

इतना कह कर भैरोसिंह वहां से हट गया और थोड़ी देर बाद सदर दर्वाजे की राह से कमरे के अन्दर आता दिखाई दिया जब कुंअर आनन्दसिंह के पास आया तो बोला, "लाइये क्या इनाम देते हैं ?"

आनन्दसिंह ने फुर्ती से तिलिस्मी खञ्जर उसके हाथ पर रख दिया जिसके असर से वह एक दफे कांपा और बेहोश होकर जमीन पर लम्बा हो गया । तब आनन्दसिंह ने अपने भाई से कहा, "अब इसे अच्छी तरह जांच कर देख लेना चाहिये कि यह भैरोसिंह है या कोई और ॥"

इन्द्रजीत० । हां अब बखूबी पता लग जायगा, पहिले इसके दाहिनी बगल वाला मसा देखो ॥

आनन्द० । (भैरो की बगल देख कर) देखिये यह मसा मौजूद है ! अब कमर वाला दाग देखिये । लीजिये वह भी मौजूद है, अब इसके भैरोसिंह होने में मुझे तो किसी तरह का सन्देह नहीं रहा ॥

इन्द्रजीत० । अब सन्देह हो ही नहीं सकता, मैंने उसको अच्छी तरह खैंच कर भी देख लिया, अच्छा अब इसे होश में लाना चाहिये ॥

इतना कह कर इन्द्रजीतसिंह ने अपना वह हाथ जिसमें तिलिस्मी खञ्जर के जोड़ की अंगूठी थी भैरोसिंह के बदन पर फेरा और भैरो-

सिंह तुरत होश में आकर उठ बैठा और ताज्जुब से चारों तरफ देखता हुआ बोला, "वाह वाह !! मैं यहां क्योंकर आ गया ? और आप लोगों ने मुझे कहां पाया ?"

आनन्द० । मालूम होता है अब आप का पागलपन दूर हो गया ॥

भैरो० । (ताज्जुब से) पागलपन कैसा ?

इन्द्रजीत० । इसके पहिले तुम किस अवस्था में थे और क्या करते थे कुछ याद है ?

भैरो० । मुझे कुछ भी याद नहीं ॥

इन्द्रजीत० । अच्छा यह बताओ कि तुम इस तिलिस्म के अन्दर कैसे पहुंचे ?

भैरो० । केवल मुझी को नहीं बल्कि किशोरी, कामिनी, कमला, लक्ष्मीदेवी, लाडिली, कमलिनी और इन्दिरा को राजा गोपालसिंह ने इस तिलिस्म के अन्दर पहुंचा दिया है, बल्कि मुझे तो सब के अखीर में पहुंचाया है । आपके नाम की चीठी भी दी थी मगर अफसोस ! आप से मुलाकात होने न पाई और मेरी अवस्था बदल गई ॥

इन्द्रजीत० । वह चीठी कहां है ?

भैरो०। (इधर उधर देख कर) जब मेरे बटुये ही का पता नहीं है तो चीठी के बारे में क्या कह सकता हूं ॥

आनन्द० । मगर यह तो तुम्हें याद होगा कि उस चीठी में क्या लिखा हुआ था ?

भैरो० । क्यों नहीं, मेरे सामने ही तो वह चीठी लिखी गई थी । उसमें कोई विशेष बात न थी, केवल इतना ही लिखा था कि "उस गुप्त स्थान से किशोरी, कामिनी इत्यादि को लेकर मैं जमानियां जा रहा था मगर मायारानी की कुटिलता के कारण अपने इरादे में बहुत कुछ उलट फेर करना पड़ा । जब यह मालूम हुआ कि मायारानी

तिलिस्मी बाग के अन्दर घुस गई है तब लाचार होकर सब औरतों को तिलिस्म के अन्दर पहुंचाता हूं, बाकी हाल भैरोसिंह से सुन लेना।" बस इतना ही लिखा था। मालूम होता है कि पहिले का हाल वह आप से कह चुके हैं॥

इन्द्र०। हां पहिले का बहुत हाल वह हमलोगों से कह चुके हैं॥

भैरो०। क्या यह भी कहा था कि कृष्णाजिन्न का रूप भी उन्हीं कृपानिधान ने धारण किया था?

आनन्द०। नहीं, सो ते। साफ साफ नहीं कहा था मगर उन की बातों से हमलोग कुछ कुछ जान गये थे कि कृष्णाजिन्न वही बने थे। अब तुम खुलासा बताओ कि क्या क्या हुआ?

भैरोसिंह ने वह सब हाल दोनों कुमारों से कहा जो ऊपर के बयानों में लिखा जा चुका है और जिसमें का बहुत कुछ हाल राजा गोपालसिंह की ज़ुबानी दोनों कुमार सुन चुके थे। इसके बाद भैरोसिंह ने कहा कि "जब राजा गोपालसिंह को मालूम हो गया कि मायारानी बहुत से आदमियों को ले कर तिलिस्मी बाग के अन्दर जा घुसी है, तब वे एक गुप्त राह से छिपकर सब औरतों को साथ लिये हुए उस मकान में पहुंचे जिसमें से कमन्द के सहारे सभों को लटकाते हुए आपने देखा होगा॥"

इन्द्र०। हां देखा था, तो क्या उस समय वे औरतें बेहोश थीं?

भैरो०। जी हां, न मालूम किस खयाल से उन्होंने सब औरतों को बेहोश कर दिया था! मगर इसके पहिले यह कह दिया था कि "तुम्हें तिलिस्म के अन्दर पहुंचा देते हैं जहां दोनों कुमार हैं, यद्यपि वहां पहुंचना बहुत कठिन था मगर अब एक दीवार वाले तिलिस्म को दोनों कुमार तोड़ चुके हैं इसलिये वहां तक पहुंचा देने में कोई कठिनता न रही॥"

इन्द्रजीत०। तो क्या तुम भी उन औरतों के साथ ही उस बाग में उतारे गये ?

भैरो०। पहिले तो उन्होंने इन्द्रदेव को बहुत सी बातें समझाई बुझाई जिसे मैं कुछ समझ न सका। इसके बाद इन्द्रदेव को तो गोपालसिंह बनाया और इन्द्रदेव के एक ऐयार को भैरोसिंह बनाकर दोनों को खास बाग के अन्दर भेजा। इस काम से छुट्टी पाकर सब औरतों को और मुझे साथ लिये उस मकान में आये। सभों को तो उस कमरे में बैठा दिया जिसमें से कमन्द के सहारे सभों को लटकाया था और मुझे उनकी हिफाजत के लिये छोड़ने बाद कमलिनी को साथ लिये कहीं चले गये और घण्टे भर के बाद वापस आये। उस समय कमलिनी के हाथ में एक छोटी सी किताब थी जिसे उन्होंने कई दफे तिलिस्मी किताब के नाम से सम्बोधन किया था। इसके बाद उन्होंने सभों को बेहोश करके नीचे लटका दिया। इस काम से छुट्टी पाकर उन्होंने आपके नाम की दो चीठी लिखी, एक तो उसी कमरे में रक्खी और दूसरी चीठी, जिसका मैं अभी ज़िक्र कर चुका हूं मुझे देकर कहा कि "जब कुमारों से तुम्हारी मुलाकात हो तो यह चीठी उन्हें देना और सब काम कमलिनी की आज्ञानुसार करना, यहां तक कि यदि कमलिनी तुम्हें सामना हो जाने पर भी कुमारों से मिलने के लिये मना करे तो तुम कदापि न मिलना।" इत्यादि कह कर मुझे नीचे उतर जाने के किये कहा (कुछ रुक कर) नहीं नहीं मैं भूलता हूं, मुझे उन्होंने पहिले ही नीचे उतार दिया था क्योंकि सभों की गठड़ी मैं ही ने नीचे से थामी थी, सभों को नीचे उतार देने के बाद जब मैं उनकी आज्ञानुसार पुनः ऊपर गया तब उन्होंने ये सब बात मुझे समझाई और आपके नाम की चीठी दी। उसी समय इन्द्रदेव भी वहां आ पहुंचे जो गोपालसिंह की सूरत बने हुए थे। इन्द्रदेव ने

राजा गोपालसिंह से कुछ कहना चाहा मगर उन्होंने रोक दिया और मुझसे कहा कि "अब तुम भी कमन्द के सहारे नीचे उतर जाओ और इन्द्रदेव के आने का इन्तजार करो ।" मैं उनकी आज्ञानुसार नीचे उतर आया । मैं अन्दाज से कहता हूं कि उन बेहोशों में आप या छोटे कुमार छिपे हुए थे आप ही दोनों में से किसी एक ने मेरे बदन के साथ तिलिस्मी खञ्जर लगाया था जिससे मैं बेहोश होगया ॥

इन्द्रजीत० । हां ठीक है ऐसा ही हुआ था ॥

भैरो०। फिर तो मैं बेहोश हो ही गया, मुझे कुछ भी नहीं मालूम कि इन्द्रदेव जो गोपालसिंह की सूरत में थे कब नीचे आये और क्या हुआ ॥

आनन्द० । ठीक है, वह भी थोड़ी ही देर बाद नीचे उतरे और तुम्हारी तरह वह भी बेहोश किये गये । (इन्द्रजीतसिंह से) अब मालूम हुआ कि इन्द्रदेव ही के कहे मुताबिक मैं आपको बुलाने के लिये ऊपर गया था ॥

भैरो०। हां जब हमलोगों को उन्होंने चैतन्य किया तो कहा था कि दोनों कुमार ऊपर गये हुए हैं । आखिर इन्द्रदेव ने कमन्द खैंच ली और हमलोगों को लिये हुए दूसरी दीवार की तरफ गये, वहां कमलिनी ने जमीन खोद कर एक दर्वाजा पैदा किया । ताज्जुब नहीं कि उसी दर्वाजे की राह से आप लोग यहां तक आये हों और उस कोठड़ी में अवश्य पहुंचे होंगे जहां की जमीन लोगों को बेहोश करके तिलिस्म के अन्दर पहुंचा देती है ॥

आनन्द० । हां हम लोग भी उसी रास्ते से यहां तक आये हैं, अच्छा तो क्या इन्द्रदेव भी तुम लोगों के साथ यहां आये हैं ?

भैरो०। जी नहीं, वह तो ऊपर ही रह गये, बोले कि "मुझे तिलिस्म के अन्दर जाने की आज्ञा नहीं है, तुम लोग जाओ, मैं इसी बाग में

छिप कर रहूंगा, जब दोनों कुमार यहां आ जायँगे तब उनसे छिप कर पुनः कमन्द के सहारे ऊपर चला जाऊंगा और राजा गोपाल-सिंह के साथ मिल कर काम करूंगा ॥"

आनन्द०। (इन्द्रजीत से) ताज्जुब नहीं कि इन्द्रदेव ही ने सर्यू को बेहोश किया हो॥

इन्द्रजीत०। जरूर ऐसा ही है (भैरो से) अच्छा तब क्या हुआ?

भैरो०। नीचे उतर कर जब हम लोग उस कोठड़ी में पहुंचे जहां की जमीन थोड़ी ही देर में लोगों को बेहोश कर देती है तब नियमानुसार सभों के साथ मैं भी बेहोश होगया। उस समय से इस समय तक का हाल मुझे मालूम नहीं है, मैं कुछ भी नहीं जानता कि उसके बाद क्या हुआ, और मैं किस अवस्था में होकर क्यों इस समय इस तरह अपने को यहां पाता हूं॥

पन्द्रहवां बयान।

भैरोसिंह की बातें सुन कर वे दोनों कुमार देर तक तरह तरह की बातें सोचते रहे और अपना किस्सा भी भैरोसिंह से कह सुनाया। बुढ़िया वाली बात सुन कर भैरोसिंह हँस पड़ा और बोला—"मुझे कुछ भी ज्ञान नहीं है कि वह बुढ़िया कौन और कहां है, यदि अब मैं उसे पाऊं तो जरूर उसकी बदमाशी का मजा उसे चखाऊं, मगर अफसोस तो यह है कि मेरा ऐयारी का बटुआ मेरे पास नहीं है जिसमें बड़ी २ अनमोल चीजें थीं। हाय! वे तिलिस्मी फूल भी उसी बटुए में थे जिसके देने में मेरा बाप भी मुझे टली बताया चाहता था मगर महाराज ने दिला दिया। इस समय उस बटुए का न होना मेरे लिये बड़ा ही दुखदाई है! और आप कह रहे हैं कि "उन लड़कों ने एक

तरह की बुकनी उड़ाकर हमें बेहोश कर दिया ।" कहिये अब मैं क्यों-कर अपने दिल का हौसला निकाल सकता हूं ?

इन्द्रजीत०। निःसन्देह उस बटुए का जाना बहुत ही बुरा हुआ ! वास्तव में उसमें बड़ी बड़ी अनूठी चीजें थी मगर इस समय उसके लिये अफसोस करना फजूल है, हां इस समय मैं दो चीजों से तुम्हारी मदद कर सकता हूं ॥

भैरो० । वह क्या ?

इन्द्रजीत० । एक तो वह दवा हम दोनों के पास मौजूद है जिस के खाने से बेहोशी असर नहीं कर सकती और वह मैं तुम्हें खिला सकता हूं । दूसरे हमलोगों के पास दो दो हर्बे भी मौजूद हैं, बल्कि यदि तुम चाहो तो तिलिस्मी खञ्जर भी तुम्हें दे सकता हूं ॥

भैरो०। जी नहीं तिलिस्मी खञ्जर मैं न लूंगा क्योंकि आपके पास उसका रहना तबतक बहुत ही जरूरी है जबतक आप तिलिस्म तोड़ने का काम समाप्त न कर लें, मुझे बस मामूली तलवार दे दीजिये मैं अपना काम उसी से चला लूंगा और वह दवा खिला कर मुझे आज्ञा दीजिये कि मैं उस बुढ़िया के पास से अपना बटुआ निकालने का उद्योग करूं ॥

दोनों कुमारों के पास तिलिस्मी खञ्जर के अतिरिक्त एक एक तलवार भी थी । इन्द्रजीतसिंह ने अपनी तलवार भैरोसिंह को देदी और डिबिये में से निकाल कर थोड़ी सी दवा भी खिलाई और कहा' "मैं तुम से कह चुका हूं कि जब हम दोनों भाई इस बाग में पहुंचे तो चूहेदानी के पल्ले की तरह वह दरवाजा बन्द हो गया जिस राह से हम दोनों आये थे और उस दरवाजे पर लिखा हुआ था कि यह तिलिस्म टूटने लायक नहीं है ॥"

भैरो० । हां आप कह चुके हैं ॥

आन०। (इन्द्रजीत से) भैया मुझे तो उस लिखावट पर विश्वास नहीं होता ॥

इन्द्र०। यही हम भी कहने को थे क्योंकि रिक्तगन्थ की बातों से तिलिस्म का यह हिस्सा भी टूटने योग्य जान पड़ता है (भैरोसिंह से) इसी से हम कहते हैं कि इस बाग में जरा समझ बूझ के घूमना ॥

भैरो०। अस्तु इस समय तो मैं आपके साथ ही चलता हूं, चलिये बाहर निकलिये ॥

आनन्द०। (भैरो से) तुम्हें याद है कि तुम ऊपर से उतर कर इस कमरे में किस राह से आये थे ?

भैरो०। मुझे कुछ भी याद नहीं ॥

इतना कह कर भैरोसिंह उठ खड़ा हुआ और दोनों कुमार भी उठ कर कमरे के बाहर निकलने के लिये तैयार हो गये ॥

सोलहवां बयान।

तीनों आदमी कमरे के बाहर निकल कर सहन में आये, उस समय कुमार को मालूम हुआ कि यह कमरा बाग के पूरब तरफ वाली इमारत के सब से निचले हिस्से में बना हुआ है और इस कमरे के ऊपर और भी दो मञ्जिल की इमारत है मगर वे दोनों मञ्जिलें बहुत छोटी हैं और उसके साथ ही दोनों तरफ इमारतों का सिलसिला बराबर चला गया है। दिन बहुत चढ़ आया था और नित्यकर्म न किये जाने के कारण दोनों कुमारों की तबीयत कुछ खराब हो रही थी॥

जैसे कि इस तिलिस्म में पहिले और दूसरे बाग के अन्दर नहर की बदौलत पानी की कमी न थी उसी तरह इस बाग में भी नहर का पानी छोटी छोटी नालियों के जरिये चारों तरफ घूमा हुआ था

और दस पांच मेवों के पेड़ भी थे जिनमें बहुतायत के साथ मेवे लगे हुए थे ॥

दोनों कुमार और भैरोसिंह टहलते हुए बाग के बीचोबीच में उसी कदम्ब के पेड़ तले आये जिसके नीचे पहिले पहिल भैरोसिंह के दर्शन हुए थे। कुछ बातचीत करने के बाद तीनों ने जरूरी कामों से छुट्टी पा और हाथ मुंह धोकर स्नान किया और सन्ध्योपासन से छुट्टी पा कर बाग के मेवे और नहर के जल से सन्तोष किया और बैठ कर यों बातचीत करने लगे :—

इन्द्रजीत०। मैं उम्मीद करता हूं कि कमलिनी, किशोरी और कामिनी वगैरह से इसी बाग में मुलाकात होगी ॥

आनन्द०। निःसन्देह ऐसा ही है, इस बाग में अच्छी तरह घूमना और यहां की हर एक बातों का पूरा पूरा पता लगाना हमलोगों के लिये बहुत जरूरी है ॥

भैरो०। मेरा दिल भी यही गवाही देता है कि वे सब जरूर इसी बाग में होंगी मगर कहीं ऐसा न हो कि मेरी तरह से उन लोगों का दिमाग भी किसी कारण विशेष से बिगड़ गया हो ॥

इन्द्र०। कोई ताज्जुब नहीं कि ऐसा ही हुआ हो मगर तुम्हारी जुबानी मैं सुन चुका हूं कि राजा गोपालसिंह ने कमलिनी को बहुत कुछ समझा बुझा कर एक तिलिस्मी किताब भी दी है ॥

भैरो०। हां बेशक मैं कह चुका हूं और ठीक कह चुका हूं ॥

इन्द्रजीत०। तो यह भी उम्मीद कर सकता हूं कि कमलिनी को इस तिलिस्म का कुछ हाल मालूम हो गया हो और वह किसी के फन्दे में न फंसे ॥

भैरो०। इस तिलिस्म में और है कौन जो उन लोगों के साथ दगा करेगा ?

आनन्द०। बहुत ठीक! शायद आप अपनी नौजवान स्त्री और उसके हिमायती लड़कों को बिलकुल ही भूल गये, या हमलोगों की जुबानी सब हाल सुनकर भी आपको उसका कुछ खयाल न रहा॥

भैरो०। (मुस्कुराकर) आपका कहना ठीक है मगर उन सभों को.........

इतना कह कर भैरोसिंह चुप हो गया और कुछ सोचने लगा। दोनों कुमार भी किसी बात पर गौर करने लगे और कुछ देर बाद भैरोसिंह ने इन्द्रजीतसिंह से कहा :—

भैरो०। आपको याद होगा कि लड़कपन में एक दफे मैंने पागलपन की नकल की थी॥

इन्द्रजीत०। हां याद है, तो आज भी तुम जान बूझ कर पागल बने हुए थे?

भैरो०। नहीं नहीं, मेरा यह मतलब नहीं है बल्कि मैं यह कहता हूं कि इस समय भी उसी तरह का पागल बन के शायद कोई काम निकाल सकूं॥

आनन्द०। हां ठीक तो है, आप पागल बन के अपनी नौजवान स्त्री को बुलाइये जिस ढङ्ग से पहिले बुलाया था, और वह ढङ्ग मैं बताता हूं॥

कुमार के बताये हुए ढङ्ग से भैरोसिंह ने पागल बन के अपनी नौजवान स्त्री को कई दफे बुलाया मगर उसका नतीजा कुछ भी न निकला, न तो कोई उसके पास आया और न किसीने उसकी बात का जवाब ही दिया आखिर इन्द्रजीतसिंह ने कहा, "बस करो मालूम हो गया कि इस चिल्लाने का कोई नतीजा न निकलेगा, उसे किसी तरह मालूम होगया कि तुम्हारा पागलपन जाता रहा, अब हमलोगों को फँसाने के लिये वह कोई दूसरा ही ढङ्ग लावेगा॥"

आखिर भैरोसिंह चुप हो रहा और थोड़ी देर के बाद तीनों आदमी इधर उधर का तमाशा देखने के लिये वहां से रवाना हुए, इस समय दिन बहुत कम बाकी था ॥

तीनों आदमी बाग के पश्चिम तरफ गये जिधर सङ्गमर्मर की एक बारहदरी थी और उसके दोनों तरफ दो इमारतें और थीं जिनके दर्वाजे बन्द रहने के कारण यह नहीं जाना जाता था कि इसके अन्दर क्या है, मगर बारहदरी खुले ढङ्ग की बनी हुई थी अर्थात् उसके तीन तरफ दीवार और आगे की तरफ केवल तेरह खम्भे लगे हुए थे जिन में दर्वाजा चढ़ाने की जगह न थी ॥

इस बारहदरी के मध्य में एक सुन्दर चबूतरा बना हुआ था जिस पर कम से कम पन्द्रह आदमी बखूबी बैठ सकते थे। उस चबूतरे के ऊपर बीचोबीच में एक लोहे का चौखूटा तख़्ता था जिसमें उठाने के लिये एक कड़ी लगी हुई थी और चबूतरे के सामने दीवार में एक छोटा सा दर्वाजा था जो इस समय खुला हुआ था और उसके अन्दर दो चार हाथ के बाद अन्धकार सा जान पड़ता था। भैरोसिंह ने कुंअर इन्द्रजीतसिंह से कहा, "यदि आज्ञा हो तो इस छोटे से दर्वाजे तक अन्दर जा कर देखूं कि क्या है ॥"

इन्द्रजीत० । यह तिलिस्म का मकान है खिलवाड़ नहीं है कहीं ऐसा न हो कि तुम उसके अन्दर जाओ और दर्वाजा बन्द हो जाय! फिर तुम्हारी क्या हालत होगी सो तुम्हीं सोच लो ॥

आनन्द०। पहिले यह तो देखो कि वह दर्वाजा लकड़ी का है या लोहे का ॥

इन्द्र० । भला तिलिस्म बनाने वाले इमारत के काम में लकड़ी क्यों लगाने लगे जिसके थोड़े ही दिन में बिगड़ जाने का खयाल होता है। मगर शक मिटाने के लिये यदि चाहो तो देख लो ॥

भैरो०। (उस दर्वाजे को अच्छी तरह जांच कर) यह बेशक लोहे का बना हुआ है। इसके अन्दर कोई भारी चीज डाल कर देखना चाहिये कि बन्द होता है या नहीं, यदि किसी आदमी के जाने से बन्द हो जाता होगा तो मालूम हो जायगा ॥

आनन्द०। (चबूतरे की तरफ इशारा करके) पहिले इस तख्ते को उठा कर देखो कि इसके अन्दर क्या है ?

बहुत अच्छा कह कर भैरोसिंह चबूतरे के ऊपर चढ़ गया और कड़ी में हाथ डाल के उस तख्ते को उठाया तख्ता किसी कब्जे या पेंच के सहारे उसमें जड़ा हुआ न था बल्कि चारों तरफ से अलग था इस लिये भैरोसिंह ने उसे उठा कर चबूतरे के नीचे रख दिया। झांक कर देखने से मालूम हुआ कि नीचे उतरने के सीढ़ियां बनी हुई हैं ॥

भैरोसिंह ने नीचे उतरने के लिये आज्ञा मांगी मगर कुंअर इन्द्रजीतसिंह उसे रोक कर स्वयम् नीचे उतर गये और भैरोसिंह तथा आनन्दसिंह को ऊपर मुस्तैद रहने के लिये ताकीद कर गये ॥

नीचे उतरने के लिये चक्करदार सीढ़ियां बनी हुई थीं और हर एक सीढ़ी के दोनों तरफ बनावटी पेड़ गंदे के बने हुए थे जो सीढ़ी पर पैर रखने के साथ ही झुक जाते और पैर (या बोझ) हट जाने से पुनः ज्यों के त्यों खड़े हो जाते। इस तमाशे को देखते हुए इन्द्रजीतसिंह कई सीढ़ियां नीचे उतर गये और जब अंधेरे में पहुंचे तो तिलिस्मी खञ्जर की रोशनी पैदा कर ली और जब आखिरी सीढ़ी पर पहुंचे तो एक बन्द दर्वाजा मिला जिसे उस समय कुमार ने कुछ खुला हुआ देखा था जब वहां तक पहुंचने में तीन चार सीढ़ियां बाकी थीं अर्थात् कुमार के देखते ही देखते वह दरवाजा बन्द हो गया था ॥

कुमार को ताज्जुब मालूम हुआ और जब उद्योग करने पर भी

दर्वाजा न खुला तो कुमार ऊपर की तरफ लौटे। तीन सीढ़ियां ऊपर चढ़ने बाद घूमकर देखा तो उस दर्वाजे को पुनः कुछ खुला हुआ पाया और जब नीचे उतरे तो फिर बन्द हो गया॥

इन्द्रजीतसिंह को विश्वास हो गया कि दर्वाजे का खुलना और बन्द होना भी इन्हीं सीढ़ियों के आधीन है। आखिर लाचार हो कर कुछ सोचते विचारते ऊपर आती समय भी सीढ़ियों के दोनों तरफ वाले पेड़ों की वही दशा हुई अर्थात् जिस सीढ़ी पर पैर रक्खा जाता उसके दोनों तरफ वाले पेड़ झुक जाते और जब उस पर से पैर हट जाता तो फिर ज्यों के त्यों हो जाते॥

ऊपर आ कर इन्द्रजीतसिंह ने सब हाल आनन्दसिंह और भैरोसिंह से कहा और इस बात पर विचार करने की आज्ञा दी कि "हम नीचे उतर कर किस तरह उस दर्वाजे को खुला पा सकते हैं॥"

भैरोसिंह ने कहा कि "मैं उन पेड़ों का मतलब समझ गया, यदि आप मुझे अपने साथ ले चलें तो मैं ऐसी तर्कीब कर सकता हूं कि वह दर्वाजा आपको खुला हुआ मिले॥"

इस समय सन्ध्या हो चुकी थी इसं लिये सभों की राय नीचे उतरने की न हुई। कुमार की आज्ञानुसार भैरोसिंह ने उस गड़हे का मुह ज्यों का त्यों ढांप दिया और उसी बारहदरी में निश्चिन्ती के साथ बैठ कर बातचीत करने लगे क्योंकि आज की रात इसी बारहदरी में होशियारी के साथ रह कर बिताने का निश्चय कर लिया था और भैरोसिंह के जिद्द करने से यह बात भी तै पाई थी कि "इन्द्रजीतसिंह आराम के साथ सोवें और आनन्दसिंह तथा भैरोसिंह बारी बारी से जाग कर पहरा दें॥

सत्रहवां बयान।

आधी रात का समय है, तिलिस्मी बाग में चारो तरफ सन्नाटा छाया हुआ है, इमारत के किसी किसी ऊपरी हिस्से पर चन्द्रमा की कुछ यों ही सी चांदनी जरा जरा झलक मार रही है और बाकी सब तरफ अन्धकार छाया हुआ है। कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह सोये हुए हैं और भैरोसिंह एक खम्भे के सहारे बैठे हुए बारहदरी के सामने वाली इमारत को देख रहे हैं॥

बारहदरी के सामने वाली इमारत दो मञ्जिली थी उसकी लम्बाई तो बहुत ज्यादे मगर चौड़ाई बहुत कम थी। इमारत के ऊपर वाली मञ्जिल में बाग की तरफ छोटे छोटे दर्वाजे एक सिरे से दूसरे सिरे तक बराबर एक ही रङ्गढङ्ग के बने हुए थे। दर्वाजों के बीच मे केवल एक एक खम्भे का फासला था और वे खम्भे भी सब एक ही ढङ्ग के नक्कासीदार बने हुए थे जिनकी खूबी इस समय कुछ भी मालूम नहीं पड़ती थी मगर एक दर्वाजे के अन्दर यकायक कुछ रोशनी की झलक मालूम पड़ जाने के कारण भैरोसिंह एकटक उसी तरफ देख रहे थे॥

थोड़ी ही देर बाद ऊपर वाली मञ्जिल का एक दर्वाजा खुला और पीठ पर गठड़ी लादे हुए एक आदमी बाईं तरफ से दाहिनी तरफ जाता हुआ दिखाई दिया। भैरोसिंह चैतन्य होकर सम्हल बैठा और बड़ी दिलचस्पी के साथ ध्यान देकर उस तरफ देखने लगा। कुछ देर बाद वह दरवाजा बन्द हो गया और उसके दाहिनी तरफ चार दरवाजे छोड़ के पांचवां दरवाजा खुला और उसके अन्दर हाथ में चिराग लिये हुए एक और आदमी इस तरह खड़ा दिखाई दिया जैसे किसी के आने का इन्तजार कर रहा हो। थोड़ी देर में चार

पांच औरतें मिल कर किसी लटकते बोझ को लिये हुए उसी आदमी के पास से निकल गईं जिसके हाथ में चिराग था और उन्हीं के पीछे पीछे वह आदमी भी चिराग लिये हुए चला गया। दरवाजा बन्द नहीं हुआ मगर उसके अन्दर अन्धकार हो गया॥

भैरोसिंह ने यह समझ कर कि शायद हम और भी कुछ तमाशा देखेंगे दोनों कुमारों को चैतन्य कर दिया और जो कुछ देखा था बयान किया॥

हम कह आये हैं कि "इस बारहदरी में पिछली दीवार के नीचे बीच में अर्थात् चबूतरे के सामने एक छोटा दरवाजा था जिसके अन्दर भैरोसिंह ने जाने का इरादा किया था।" इस समय यकायक उसी दर्वाजे के अन्दर चिराग की रोशनी देख कर भैरोसिंह और दोनों कुमार चौंक पड़े और उठ कर उस दर्वाजे के सामने गये और झांक कर देखने लगे। मालूम हुआ कि इस छोटे से दर्वाजे के अन्दर एक बहुत बड़ा कमरा है जिसके दोनों तरफ की लोहे वाली शहतीर (या बड़ी धरन) बड़े बड़े चौखूटे खम्भों के ऊपर है और उसकी छत लदाओ की बनी हुई है। उस कमरे के दोनों तरफ के खम्भों के बाद भी एक एक दालान है और दालान की दीवारों में कई बड़े २ दर्वाजे बने हैं जिनमें कुछ खुले और कुछ बन्द हैं॥

दोनों कुमार और भैरोसिंह ने देखा कि उसी कमरे के मध्य में एक आदमी जिसके चेहरे पर नकाब पड़ी हुई थी, हाथ में चिराग लिये हुए छत की तरफ देख रहा है। कुछ देर तक देखने के बाद वह आदमी एक खम्भे के सहारे चिराग रख कर पीछे की तरफ लौट गया॥

भैरोसिंह और दोनों कुमार आड़ में खड़े हो कर सब तमाशा देख रहे थे और जब वह आदमी चिराग रख कर चला गया तब भी

यह सोच कर खड़े ही रहे कि "जब चिराग रख कर चला है तो पुनः आवेहीगा ॥"

उस नकाबपोश को चिराग रख कर गये हुए दस बारह पल से ज्यादे न बीते होंगे कि दूसरी तरफ वाले दर्वाजे के अन्दर से कोई दूसरा आदमी निकल कर तेज़ी के साथ उसी कमरे के मध्य में आ पहुंचा हाथ की हवा देकर उस चिराग को बुझा दिया जिसे पहिला आदमी एक खम्भे के सहारे रख कर चला गया था। इसके बाद कमरे में अन्धकार हो जाने के कारण कुछ मालूम न हुआ कि यह दूसरा आदमी चिराग बुझा कर चला गया या उसी जगह कहीं आड़ देकर छिप रहा ॥

यह दूसरा आदमी भी जिसने कमरे में आकर चिराग बुझा दिया था अपने चेहरे पर नकाब डाले हुए था, केवल नकाब ही नहीं बल्कि उसका तमाम बदन स्याह कपड़े से ढका हुआ था और कद में छोटा रहने के कारण इसका पता नहीं लग सकता था कि वह मर्द है या औरत ॥

थोड़ी ही देर बाद दोनों कुमार और भैरोसिंह के कान में किसी के बोलने की आवाज़ सुनाई दी जैसे किसी ने उस अँधेरे कमरे में आकर ताज्जुब के साथ कहा हो कि "हैं! चिराग कौन बुझा गया?"

इसके जवाब में किसी ने कहा—"अपने को सम्हाले रहो और जल्दी से हट जाओ, कोई दुश्मन न आ पहुंचा हो ॥"

इसके बाद चौथाई घड़ी तक न तो किसी तरह की आवाज ही सुनाई दी और न कोई दिखाई ही पड़ा, मगर दोनों कुमार और भैरोसिंह अपनी जगह से न हिले ॥

आधी घड़ी के बाद वही आदमी पुनः हाथ में चिराग लिये हुए आया जो खम्भे के सहारे चिराग रखकर चला गया था। इस आदमी

का बदन गठीला और फुर्तीला मालूम पड़ता था। इसका पायजामा, अङ्गा, पटूका, मुंडासा और नकाब भी पीले कपड़े का बना हुआ था। अब की दफे वह बाएँ हाथ में चिराग और दाहिने हाथ में नङ्गी तल. वार लिये हुए था। शायद उसे अपने उस दुश्मन का खयाल हो जिस ने चिराग बुझा दिया था, इस लिये उसने चिराग जमीन पर रख दिया और तलवार लिये हुए चारों तरफ घूम घूम कर किसी को ढूंढ़ने लगा। वह आदमी जिसने चिराग बुझा दिया था एक खम्भे की आड़ में छिपा हुआ था जब पीले कपड़े वाला उस खम्भे के पास पहुंचा तो उस आदमी पर निगाह पड़ी, उसी समय वह स्याह नकाबपोश भी सम्हल गया और तलवार खैंच कर सामने खड़ा हो गया। पीले कपड़े वाले ने तलवार वाला हाथ ऊंचा करके पूछा—"सच बता तू कौन है?"

इसके जवाब में स्याह नकाबपोश ने यह कहते हुए उस पर तल॰ वार का वार किया कि "मेरा नाम इसी तलवार की धार पर लिखा हुआ है!!"

पीले कपड़े वाले ने बड़ी चालाकी से दुश्मन का वार बचा कर अपना वार किया और उसके बाद दोनों में अच्छी तरह लड़ाई होने लगी॥

दोनों कुमार और भैरोसिंह लड़ाई के बड़े ही शौकीन थे इसलिये बड़ी चाह से ध्यान देकर उन दोनों की लड़ाई देखने लगे। निःसन्देह दोनों नकाबपोश लड़ने भिड़ने में होशियार और बहादुर थे, एक दूसरे के वार को बड़ी खूबी से बचा कर अपना वार करता था। जिसे देख कर इन्द्रजीतसिंह ने आनन्दसिंह से कहा, "दोनों अच्छे हैं, चिराग की रोशनी एक ही तरफ पड़ती है दूसरी तरफ सिवाय तलवार की चमक के और कोई सहारा वार बचाने के लिये नहीं

हो सकता, ऐसे समय में इस खूबी के साथ लड़ना मामूली काम नहीं है ॥"

इसी बीच में स्याह नकाबपोश ने अपने हाथ की तलवार जमीन पर फेंक दी और एक खम्भे की आड़ से घूमता हुआ खञ्जर खैंच लिया और उसका कब्जा दबा बोला, "अब तू अपने को किसी तरह नहीं बचा सकता ॥"

निःसन्देह वह तिलिस्मी खञ्जर था जिसकी चमक से उस कमरे में दिन की तरह उजाला हो गया। पीले नकाबपोश ने भी उसका जवाब तिलिस्मी खञ्जर ही से दिया क्योंकि उसके पास भी तिलिस्मी खञ्जर मौजूद था। तिलिस्मी खञ्जरों से लड़ाई अभी पूरी तौर से होने भी न पाई थी कि एक तरफ से आवाज आई, "पीले मकरन्द! लेना जाने न पावे, अब मुझे मालूम होगया कि भैरोसिंह के तिलिस्मी खञ्जर और बटुए का चोर यही है, देखो इसकी कमर में वही बटुआ लटक रहा है, अगर तुम इस बटुए के मालिक बन जाओगे तो फिर इस दुनिया में तुम्हारा मुकाबला करने वाला कोई भी न रहेगा क्योंकि यह तुम्हारे ही ऐसे ऐयारों के पास रहने योग्य है ॥"

यह एक ऐसी बात थी जिसने सबसे ज्यादे भैरोसिंह को चौंका ही नहीं दिया बल्कि बेचैन कर दिया, उसने कुंअर इन्द्रजीतसिंह से कहा, "बस अब आप कृपा करके अपना तिलिस्मी खञ्जर मुझे दीजिये, मैं स्वयम् उसके पास जा कर अपनी चीज ले लूंगा, क्योंकि यहां पर तिलिस्मी खञ्जर के बिना काम न चलेगा और यह मौका भी हाथ से गँवा देने लायक नहीं है ॥"

इन्द्रजीत०। हां बेशक ऐसा ही है, अच्छा चलो मैं तुम्हारे साथ चलता हूं ॥

आनन्द०। और मैं?

इन्द्रजीत०। तुम इसी जगह खड़े रहो, दोनों भाइयों का एक साथ वहां चलना ठीक नहीं है, मैं अकेला ही उन दोनों के लिये काफी हूं ॥

आनन्द० । फिर भैरोसिंह जा कर क्या करेंगे तिलिस्मी खञ्जरों की चमक में इनकी आंख खुली नहीं रह सकती ॥

इन्द्रजीत० । सो तो ठीक है ॥

भैरो० । अजी आप इस समय ज्यादे सोच बिचार न कीजिये । आप खञ्जर मुझे दीजिये मैं निपट लूंगा ॥

इन्द्रजीतसिंह ने खञ्जर जमीन पर रख दिया और उसके जोड़ की अँगूठी भैरोसिंह की उँगली में पहिरा देने बाद खञ्जर उठा लेने के लिये कहा । भैरोसिंह ने तिलिस्मी खञ्जर उठा लिया और उस छोटे दर्वाजे के अन्दर जाकर ललकारा कि "मैं भैरोसिंह स्वयम् आ पहुंचा ॥"

भैरोसिंह के अन्दर जाते ही दर्वाजा आप से आप बन्द हो गया और दोनों कुमार ताज्जुबसे एक दूसरे की तरफ देखने लगे !!

॥ सत्रहवां हिस्सा समाप्त ॥

नवीन पुस्तकें।

मोतियों का खजाना—

उपन्यासों के लिये फ्रान्स की तरह मशहूर और कोई मुल्क नहीं है। वहां के उपन्यास लेखक प्रसिद्ध हैं। आप लोगों ने अङ्गरेजी से अनुवादित बहुत से उपन्यास पढ़े होंगे अस्तु यह फ्रान्सीसी भाषा से अनुवादित उपन्यास भी पढ़ना उचित है। यह मोतियों का खजाना एलेकजेण्डर ड्यूमा कृत 'दि कौण्ट आफ मौण्ट क्रिस्टो' का अनुवाद है। कहा जाता है कि फ्रान्सीसी भाषा में इससे बढ़ कर रोचक और मनोहर उपन्यास कोई दूसरा नहीं है। इसके मुख्य पात्र 'एडमण्ड' को शत्रुओं ने बड़ा तङ्ग किया, उसकी नौकरी छुड़ा दी, प्रेमिका से बिछोह करा दिया और अन्त में बागी बना कर जेलखाने में भेजवा दिया। बारह बरस तक वह जेलखाने में सड़ता रहा तब कहीं एक दिन उसे वहां से भागने का मौका मिला। फिर उसने किस तरह चुन चुन कर अपने दुश्मनों से बदला लिया है इसे पढ़ आप दांतों उंगली दबावेंगे—बारह भाग छपे हैं— ७॥)

महारानी पद्मावती—

बाबू हरिश्चन्द्र के भाई बाबू राधाकृष्णदास कृत प्रसिद्ध ऐतिहासिक नाटक— ।)

मदालसा—

एक पौराणिक घटना के आधार पर लिखित कहानी— ।-)

मीराबाई—

प्रसिद्ध भक्त की जीवनी, सभों के देखने याेग्य— ≡)

मेम और साहब—

एक महिला लिखित। अङ्गरेजी पढ़े लिखे एक बाबू साहब पर फैशन का भूत बुरी तरह सवार हुआ था, वे चाहते थे कि उनकी बीबी परदे को फाड़ बाहर आ जायँ और खुले मैदान मेम और साहब की तरह हाथ में हाथ मिलाये वे घूमें। आखिर एक दिन बड़ी जिद्द कर उन्होंने अपनी स्त्री को मेम की पौशाक पहिनाई और खुद साहब बन थियेटर देखने चले। वहां उनकी क्या क्या दुर्दशा हुई यह हाल पढ बहुतों को शिक्षा मिलेगी— ≡)

रणबीर—

रिनाल्ड साहब लिखित 'उमर पाशा' का अनुवाद। इसमें रूम और रूस की इतिहास-प्रसिद्ध लड़ाई का पूरा हाल है, रोचक और पढ़ने याेग्य उपन्यास है— ४।≡)

रामरखा का खून—

नशे की हालत में एक बाबू साहब को यह धुन सवार होगई कि उन्होंने अपने एक दोस्त को मार डाला है। बस डर के मारे उनकी बुरी हालत होगई और वे दरदर भागने लगे। अन्त में बड़ी कठिनता से उनका यह डर दूर हुआ— =)

रामकृष्ण देव—

बङ्गदेश के प्रसिद्ध महात्मा और भक्त की जीवनी— ।-)

रामेश्वर यात्रा—

इसमें चित्रकूट, ओंकार, महाकालेश्वर, गोदावरी, त्र्यम्बकनाथ, द्वारिकाधाम, बालाजी, काञ्ची, श्रीरङ्ग इत्यादि सब तीर्थों की यात्रा का पूरा हाल लिखा गया है। इन स्थानों की यात्रा करने से पहिले इसे पढ़ लेने से बहुत कुछ लाभ होगा— ।≶)

शृंगारदान—

शृंगार सम्बन्धी बहुत सी चीजें जैसे तरह तरह के खुशबूदार तेल बनाना, खिजाब बनाना, लोमनाशक बनाना, धूपबत्ती, महावर आदि आदि बहुत सी चीजें बनाने की बिधि लिखी है— ≶)

साहसी डाकू—

हिन्दुस्तान के तांतियाभील की तरह विलायत में एक डाकू डिक टर्पिन नामक हुआ है। यह ऐसा बहादुर और साहसी था कि पुलिस के नाक में इसने दम कर दिया था, दिन दहाड़े खुले मैदान यह औरों को तो जाने दीजिये पुलिस के बड़े २ अफसरों को लूट लेता था और वे कुछ न कर सकते थे, सारे मुल्क में इसने शोर मचा रक्खा था। उसी का सब हाल इस उपन्यास में लिखा गया है— १।)

सुरसुन्दरी—

ऐतिहासिक,उपन्यास मुगलों ने जब उदयपुर पर आक्रमण किया

था तब का हाल लिखा गया है। इसमें सुन्दरी और शोभनसिंह का प्रेम, तेजसिंह का युद्ध कौशल, नूरजहां का जहांगीर पर प्रभुत्व आदि का वृत्तान्त पढ़ आप अवश्य प्रसन्न होंगे— ।)

हमीरहठ—

पण्डित् चन्द्रशेखर बाजपेई कृत वीर रस का अपूर्व ग्रंथ, शृंगार रस के तो बहुत से ग्रन्थ आपने पढ़े होंगे, इस बीर रस पूरित पुस्तक का भी आनन्द लें— ।)

हृदयकण्टक—

धन और स्त्री की लालच और कुछ समय के सुख की इच्छा में पड़ मनुष्य खोटे से खोटा काम कर डालता है। उस समय तो उसे आनन्द ही आनन्द मालूम होता है पर पीछे उसके दुष्कर्म का कैसा फल उसे भुगतना पड़ता है यह उसी का दिल जानता है, बीसों बरस के पहिले के कर्म उसके सामने रूप धर के आते हैं और उसका जीवन बिगाड़ देते हैं जिसमें दूसरों को उसका हाल देख शिक्षा मिले-इस उपन्यास में यही हाल लिखा गया है— ।)

मिलने का पता—

मैनेजर लहरी प्रेस,

लाहौरी टोला,

बनारस सिटी।

